

जनवरी 2015

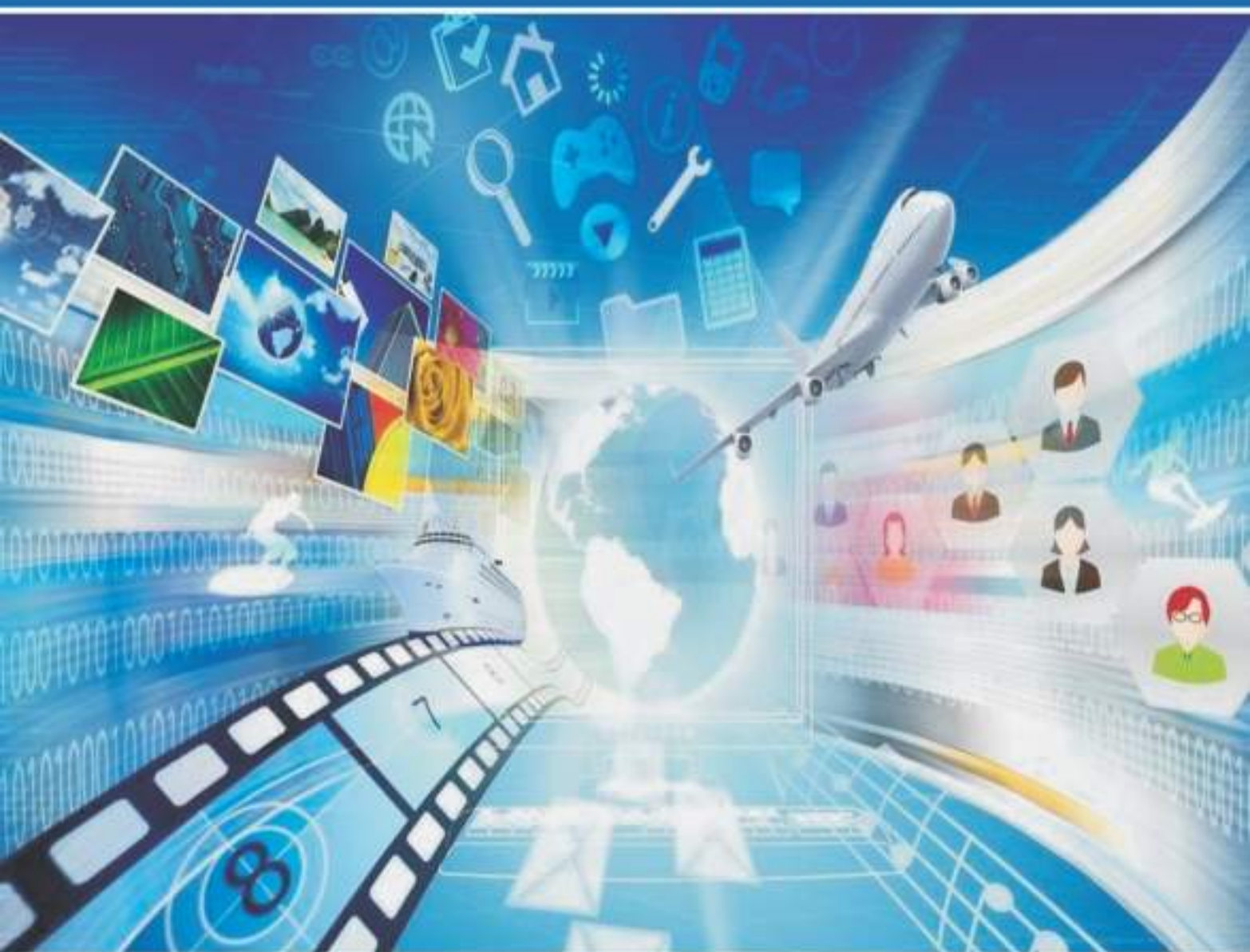
वर्ष 43



अंक 1

₹40

युवा दृष्टि



तकनीक का कक्हरा



अतीत का पुरुषार्थ ही वर्तमान व भविष्य का भाग्य बन जाता है,
अर्थात् पुरुषार्थ से ही भाग्य का निर्माण होता है।

आचार्य महाश्रमण

श्रद्धानिष्ठ श्रावक

एच. अनराज जी गादिया

1951–2008

(चेन्नई व गादाणा)

आपकी संघीर श्रद्धा-भक्ति, सामाजिक उदारता
एवं कर्मठ-कर्तृत्वशीलता हमारी सतत प्रेरणा

श्रीमती सुशीलाबाई अनराजजी गादिया
श्रीमती रेखा एवं ए. निर्मल गादिया

&

Deccan Group of Companies

वर्तमान उज्ज्वल करना है

विस्मृत कर दो कुछ अतीत को, दूर कल्पना को भी छोड़ो।
सोचो दो क्षण गहराई से, आज हमें अब क्या करना है?॥

वर्तमान की उज्ज्वलता से भूत चमकता भावी चमकती।
इसीलिए सह-घोष यही हो, 'वर्तमान उज्ज्वल करना है'॥

हमने जो गौरव पाया वह अनुशासन से ही पाया है।
जीवन को अनुशासित रखकर, 'वर्तमान उज्ज्वल करना है'॥

अनुशासन का संजीवन यह दृढ़-संचित विश्वास रहा है।
आज आपसी विश्वासों से, 'वर्तमान उज्ज्वल करना है'॥

क्षेत्र-काल को द्रव्य भाव को समझ चले वह चल सकता है।
सिर्फ बदल परिवर्तनीय को, 'वर्तमान उज्ज्वल करना है'॥

अपनी भूलों के दर्शन स्वीकृति परिमार्जन में जो क्षम है।
वह जीवित, जीवित रह कर ही, 'वर्तमान उज्ज्वल करना है'॥

औरों के गुण-दर्शन स्वीकृति अपनाने में जो तत्पर है।
वह जीवित, जीवित रहकर ही, 'वर्तमान उज्ज्वल करना है'॥

दर्शक दर्शक ही रह जाते, हम उत्सव का स्पर्श करें।
परम साध्य की परम सिद्धि यह, वर्तमान उज्ज्वल करना है।

आचार्य महाप्रज्ञ



अनुक्रम

➤ संपादकीय	03
➤ नव वर्ष की नई उम्मीदें	04
➤ समस्या बन रहा है वैज्ञानिक अनुसंधान	06
➤ जीवन का लक्ष्य	09
➤ तकनीक की विकास यात्रा भारतीय परिप्रेक्ष्य में	11
➤ शोध की प्रवृत्ति जागृत करें	12
➤ वर्ष 2014 के सर्वश्रेष्ठ इन्वेंशन	14
➤ तकनीकी प्रगति : कल, आज और कल	17
➤ आविष्कार जो बदलेंगे आपकी दुनिया	18
➤ एक नजर इधर भी	20
➤ भविष्य का दर्शन	22
➤ दुनिया को बदलने का दम रखतीं...	24
➤ आविष्कार और आविष्कारक	26
➤ साइबर क्राइम से बचें	28
➤ सावधान! बढ़ रही है हैकिंग	30
➤ जानें इंटरनेट के बारे में	31
➤ टेक्नोलोजी के अद्भुत करिश्में	32
➤ आजादी के बाद विज्ञान	34
➤ विज्ञान शब्दावली	35
➤ तापमान : उष्णतम से लेकर शीतलतम तक	38
➤ तो क्या दुर्लभ हो जाएगी हरियाली	47
➤ दान से ज्यादा जरूरी है "देने की भावना"	55
➤ औद्योगिक प्रशिक्षण	63

मर्यादा महोत्सव पर विशेष मर्यादा की आध्यात्मिक पृष्ठभूमि 44

अब तो जागें इंटरनेट का बढ़ता रोग 46

प्रबन्धन सूत्र सत्त्वनिष्ठ बनें 49

काव्य प्रवाह भोर की बेला/जीवन की कसौटियां 51

कथा बोध कलिकाल 53

हमारी संस्कृति हमारा इतिहास चेतना और काव्यशक्ति बढ़ाती है मकर संक्रांति 55

स्वास्थ्य विशेष विकृत जीवनशैली का दुष्प्रभाव 57

बच्चों की दुनिया रबर क्या है और कैसे बनता है? खगोलीय पिंड गोल क्यों होते हैं? 59

युवादृष्टि नयी सृष्टि का प्रतीक मासिक
वर्ष : 43, अंक : 1, जनवरी 2015

संपादकीय

आप सभी को नववर्ष की हार्दिक मंगलकामना। वर्ष 2014 की समाप्ति के साथ ही 2015 की शुरुआत हो गई है। पुराने का जाना और नए का आना एक शाश्वत सत्य है। चाहे वह जीवन का कोई भी पहलू क्यों न हो।

कोई भी क्षेत्र हो उसमें नए-नए अनुसंधान समय-समय पर होते रहे हैं। तकनीक में भी कुछ न कुछ नया होता रहा है। ये तकनीक का ही कमाल है कि जहाँ कल तक एक गाँव से दूसरे गाँव में जाना भी दुरूह कार्य होता था वहीं आज मनुष्य ने अपने कदम चाँद तक पहुँचा दिए हैं। आज यदि हमें सूचना देनी हो तो पलक झपकते ही विश्व के किसी भी कोने में सम्पर्क किया जा सकता है।

आज मनुष्य तकनीक के माध्यम से पक्षियों की तरह उड़ सकता है। गहरे से गहरे पानी में साँसें ले सकता है। बड़े से बड़े पर्वत को आसानी से पार कर सकता है। मानव ने तकनीक के माध्यम से कई क्षेत्रों में क्रांतिकारी सफलता पाई है।

कम्प्यूटर ने आदमी का जीवन बदल कर रख दिया है। परन्तु इन्टरनेट के इस युग में हमने पाया ही पाया है या कुछ खोया भी है? ये चिन्तन का विषय है। हमारा समय बचाने के लिए किए गए आविष्कार कहीं हमारा समय अपव्यय तो नहीं कर रहे हैं। तकनीक के इस दौर में हम भौतिक दृष्टि से तो अतिसक्षम हो रहे हैं लेकिन आध्यात्मिक दृष्टि से उतने ही कमजोर हो गए हैं। समय रहते यदि हमने इस पर ध्यान नहीं दिया तो हमें गम्भीर परिणाम भुगतने होंगे। लेकिन ये सोचकर हम नई खोज बंद नहीं कर सकते हैं। आवश्यकता है अपने पुरातन को सुरक्षित रखते हुए नया ग्रहण करने की...

ओम अर्हं

अखिल भारतीय लेखक संघ

सम्पादक अखिलेश नाहर	कार्यकारी सम्पादक सुधीर चौरडिया	सह-सम्पादक नवीन बाँडिया	लेजर टाइपसेटिंग क्लासिक ऑफसेट	कवर रवि सिन्धी
कार्यालय 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002		प्रकाशक अखिल भारतीय लेखक संघ, युवालोक, पो. लाडनू-341306 (राज.)		
'युवादृष्टि' में प्रकाशित सामग्री से संपादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है। राजस्थान सरकार द्वारा पुस्तकालयों के लिए स्वीकृत				शुल्क त्रैवार्षिक : 900 रु. 15 वार्षिक : 3500 रु.
'युवादृष्टि' में प्रकाशित सामग्री का उपयोग प्रकाशक, सम्पादक, लेखक की अनुमति के बिना अन्य कहीं भी प्रकाशन में न करें।				



नव वर्ष की नई उम्मीदें

आचार्य तुलसी

जाने वाले को अलविदा कहना और आने वाले का स्वागत करना इस संसार की रीत है। व्यक्ति जाता है तो गम का सैलाब छोड़ जाता है और आता है तो खुशियों का सैलाब लेकर आता है। व्यक्ति की तरह वक्त भी मनुष्य के मन को प्रभावित करता है। वक्त शब्दकाल का वाचक है।

वक्त का सबसे छोटा हिस्सा समय कहलाता है। पर सामान्य काम के लिए भी समय शब्द का प्रयोग होता आया है। समय गतिशील है वह कभी ठहरता नहीं है। ठहरना तो दूर, ठिठकता भी नहीं और पीछे मुड़कर देखना तो उसने सीखा ही नहीं है। वह नदी के प्रवाह की तरह बहता रहता है। नदी के उसी जल में कोई व्यक्ति दूसरी बार हाथ नहीं धो सकता है इसी प्रकार समय का उपयोग भी एक ही बार होता है।

नया वर्ष हमारे सामने है। समय की धूल पर जिस व्यक्ति, समाज, संगठन, प्रान्त या राष्ट्र के पदचिन्ह अंकित होते हैं, वह औरों के लिए मार्ग बना सकता है। बने-बनाए मार्ग पर चलना सरल है। इसमें किसी का अपना कर्तृत्व नहीं होता। नए मार्ग का निर्माण कठिन होता है। ऐसे मार्ग का निर्माण तो और भी कठिन है, जिस पर लाखों-करोड़ों लोग चल सकें। **महाजनो येग गतः स पन्थाः—** महान व्यक्ति जिस रास्ते से चलते हैं, वह पथ बन जाता है।

कोई क्रान्तदर्शी या क्रान्तिकारी व्यक्ति अपने पुरखों की पूँजी का उपयोग कर प्रसन्न नहीं होता। अपने बाहुबल से अर्जित सम्पत्ति का भोग करने में वह गौरव का अनुभव करता है। ऐसे व्यक्तियों की भी कमी नहीं है, जो अपने पूर्वजों के पुरुषार्थ पर अपने भाग्य को चमकाते हैं। किन्तु जिनकी भुजाओं में कर्तृत्व फड़कता है, वे स्वयं के बलबूते पर ही प्रतिष्ठित होने का प्रयास करते हैं। हर व्यक्ति नया पथ बनाएगा तो कितने पथ हो जाएँगे? कुछ लोग ऐसी चिन्ता भी

करते हैं। क्या अर्थ रखती है ऐसी चिन्ता? जितने युग, उतने पथ। जितने समय, उतने मार्ग। मार्गों में समानता हो सकती है, विविधता हो सकती है, पर निर्माण क्यों नहीं हो सकता? तीर्थंकर कभी क्षुण्ण मार्ग से नहीं चलते।

पूर्ववर्ती तीर्थंकरों द्वारा निरूपित सत्य और उत्तरवर्ती तीर्थंकरों द्वारा निरूप्यमाण सत्य में कोई भेद नहीं होता। फिर भी वे अपने सत्य का निरूपण करें। यह उनका अहम् नहीं, पुरुषार्थ की प्रक्रिया है। भगवान महावीर ने कहा—**अप्पणा सच्चमेसेज्जा—**स्वयं सत्य खोजें। यह प्रेरणा प्रत्येक व्यक्ति के लिए है। वह उधार के सत्य से सन्तुष्ट न होकर स्वयं सत्य की खोज करें।

समय किसी के साथ पक्षपात नहीं करता। वर्ष के महीने, महीने के दिन, दिन के घण्टे और घण्टे के मिनट या सैकंड सबको बराबर मिलते हैं। महत्त्वपूर्ण काम करने वालों का वर्ष बीस महीनों का नहीं होता और दिन तीस घण्टों का नहीं होता। वे समय का समुचित नियोजन कर उससे लाभ उठा लेते हैं। नया वर्ष हाथ से यों ही फिसल न जाए। इसके लिए समय रहते निश्चित लक्ष्य के साथ अपनी-अपनी समयसारिणी निर्धारित की जाए और वर्ष के प्रथम दिन से ही लक्ष्यप्राप्ति की दिशा में प्रस्थान हो जाए। इस क्रम से जो पदचिह्न अंकित होंगे, समय उनको मिटा नहीं पाएगा।

धर्म-सिद्धांतों की प्रामाणिकता : विज्ञान की कसौटी पर

षड्जीवनिकाय

जैन-दर्शन में शरीर की अपेक्षा से समस्त जीव-लोक को छह भागों में विभक्त किया गया है। उनके नाम हैं—

- पृथ्वीकाय—पृथ्वी शरीरवाले जीव।
- अप्काय—जल शरीरवाले जीव।
- तेजस्काय—अग्नि शरीरवाले जीव।

- वायुकाय—वायु शरीरवाले जीव।
- वनस्पतिकाय—वनस्पति शरीरवाले जीव।
- त्रसकाय—दुःख-मुक्ति एवं सुख-प्राप्ति के लिए हलन-चलन, घूमने-फिरने की क्षमता से संपन्न प्राणी। इनका दूसरा नाम 'जंगम' भी है।

इनमें त्रसकाय के जीव सबके सामने प्रत्यक्ष हैं। इसलिए इन्हें अस्वीकार करने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता, पर शेष पाँच कार्यों के जीवों को दूसरे-दूसरे लोग स्वीकार नहीं करते, क्योंकि इन पाँच कार्यों के जीवों की चेतना इतने अविकसित स्तर पर होती है कि वह हमारे ऐंद्रिय ज्ञान का विषय नहीं बन पाती। जैन-तीर्थंकरों ने इनकी जैविक सत्ता का ज्ञान चेतना के चरम स्तर—केवलज्ञान की भूमिका में अनुभव किया है। जब कभी कोई आत्मा चेतना के इस चरम स्तर पर पहुँच जाती है, केवलज्ञान को उपलब्ध हो जाती है, उसे हर प्राणी की जैविक सत्ता के दर्शन होने लगते हैं।

वनस्पति की जैविक सत्ता और विज्ञान

वनस्पति की जैविक सत्ता (प्राणवत्ता) तो आधुनिक विज्ञान ने भी स्वीकार की है। वैज्ञानिकों ने एक लंबी खोज के बाद यह सिद्ध किया है कि वनस्पति में न केवल चेतना है, अपितु सुख-दुःख की संवेदना एवं भावना भी है। एक वैज्ञानिक ने वर्षों का समय इस विषय के शोध में लगाया है।

उसने एक बड़ा ही दिलचस्प प्रयोग किया है। अपने बगीचे से उसने एक पीधे के दो पत्ते तोड़े। उनमें से एक पत्ता उसने अपने डाइनिंग रूम में फेंक दिया तथा दूसरा अपनी निजी टेबल पर रखा। टेबल पर रखे पत्ते को वह प्रतिदिन प्रेम से देखता और कहता—'तुम जीते रहो, तुम जीते रहो!.....' एक महीने तक अनवरत यह

भगवान महावीर इस संसार के सबसे बड़े ज्ञानी पुरुष हुए हैं। जीव-विज्ञान का जितना सूक्ष्म विवेचन भगवान महावीर द्वारा हुआ है, उतना अन्य किसी महापुरुष के द्वारा नहीं हुआ।

प्रयोग उसने किया। परिणाम अत्यंत आश्चर्यकारी रहा। वह पत्ता एक महीने बाद भी जीवंत अवस्था में रहा। इसके विपरीत वह दूसरा पत्ता एक-दो दिनों में ही सूखकर मृत हो गया।

इस प्रकार के अनेक प्रयोग उस वैज्ञानिक ने किए हैं। उसका कहना है कि शत्रुता की भावना अर्थात् काटने-तोड़ने आदि की भावना से जब कोई व्यक्ति वनस्पति के पास जाता है तो वह प्रकंपित हो जाती है। ऐसे यंत्र विकसित किए गए हैं, जिनके माध्यम से उनके सूक्ष्म प्रकंपन आसानी से देखे जा सकते हैं। इसी प्रकार प्रेम की भावना से वनस्पति खिल उठती है। अपना प्रेम अभिव्यक्त करती है।

आप लोग ये बातें सुनकर संभवतः आश्चर्य करते हैं, पर आश्चर्य जैसी कोई बात नहीं है। हमारे धर्मग्रंथों में इन सब बातों की

सविस्तार चर्चा मिलती है, पर इतना अवश्य है कि अब तक ये बातें पढ़ने और सुनने तक ही सीमित थीं। उनका कोई प्रायोगिक रूप हमारे सामने नहीं था। विज्ञान ने इन बातों को प्रायोगिक धरातल पर प्रस्तुत कर इनकी प्रामाणिकता असंदिग्ध कर दी है।

शास्त्रों में कहा गया है कि वनस्पति के पास बैठने मात्र से उसे असह्य पीड़ा हो सकती है। इतने दिन यह बात लोगों की समझ में नहीं आ रही थी, पर अब यह बात विज्ञानसम्मत बन चुकी है। इसी प्रकार हमारे एवं वनस्पति के आभामंडल के परस्पर मिलने मात्र से भी उसे (वनस्पति को) अत्यंत पीड़ा का अनुभव हो सकता है।

सभी प्राणी श्वासोच्छ्वास करते हैं

वनस्पति में श्वासोच्छ्वास की क्रिया भी होती है। हमारा उच्छ्वास यानी कार्बनडाई-ऑक्साइड वह श्वास के रूप में ग्रहण करती है। आगमों में तो यह उल्लेख सदा से प्राप्त था, पर इसकी विश्वसनीयता पर प्रश्नचिह्न लगाया जाता रहा। आज जबकि विज्ञान ने यह बात स्वीकार कर ली है, तब इसे नकारने का कोई अवकाश नहीं है। शास्त्रों में तो यहाँ तक कहा गया है कि न केवल मनुष्य और वनस्पति, अपितु पृथ्वीकाय, अप्काय, तेजस्काय और वायुकाय के जीव भी श्वासोच्छ्वास की क्रिया करते हैं। प्रकारांतर से इसे ऐसा कहा जा सकता है कि संसार में कोई ऐसा प्राणी नहीं, जो श्वासोच्छ्वास की क्रिया न करता हो।

महावीर : सबसे बड़े ज्ञानी पुरुष

हालाँकि विज्ञान अभी तक शास्त्रों की पहुँच से काफी पीछे है, फिर भी जिस गति से वह इस दिशा में आगे से आगे बढ़ रहा है, उससे यह विश्वास बनता जा रहा है कि निकट भविष्य में बहुत-सी सैद्धांतिक पहेलियाँ सुलझ जाएँगी। जिस दिन विज्ञान इस दिशा में पूर्ण सफलता प्राप्त कर लेगा, उस दिन लोग संभवतः पूछेंगे कि ये सब बातें सबसे पहले किसने जानीं। उस समय जैन-तीर्थंकरों के नाम अत्यंत गौरव/श्रद्धा के साथ लिए जाएँगे। लोग यह कहेंगे और लिखेंगे कि भगवान महावीर इस युग में प्रथम व्यक्ति थे, जिन्होंने ये सब बातें जानी और इन्हें सबके सामने प्रस्तुत किया। आप इसे अतिशयोक्ति न मानें। कुछ लोगों ने तो ऐसा लिख भी दिया है। जर्मनी-निवासी डॉ. शुब्रिंग जैन-दर्शन के अंतरराष्ट्रीय-स्तर के जाने-माने विद्वान हैं। उन्होंने यह उल्लिखित किया है कि भगवान महावीर इस संसार के सबसे बड़े ज्ञानी पुरुष हुए हैं। जीव-विज्ञान का जितना सूक्ष्म विवेचन भगवान महावीर द्वारा हुआ है, उतना अन्य किसी महापुरुष के द्वारा नहीं हुआ।

निःसंदेह, यह जैनों के लिए गौरव की बात है, पर इतने मात्र से गौरव करना बहुत महत्त्व की बात नहीं है। बहुत महत्त्व की बात यह है कि जैनों ने स्वयं क्या किया; जैन-धर्म के विकास एवं प्रचार-प्रसार की दृष्टि से उन्होंने पर्याप्त पुरुषार्थ किया या नहीं। संभवतः इस दिशा में जैन लोग बहुत उदासीन रहे हैं; और यही जैन-धर्म के विश्व स्तर पर प्रसरणशील न बनने का मूलभूत कारण है। मेरा विश्वास है कि अब भी यदि जैन लोग अपना कर्तव्य समझकर उसके सम्यक् निर्वहन की दिशा में मनोयोगपूर्वक पुरुषार्थ करें तो जैन-धर्म विश्वव्यापी बन सकता है।



समस्या बन रहा है वैज्ञानिक अनुसंधान

आचार्य महाप्रज्ञ

वैज्ञानिक जगत् की अदृशिता

रहस्य का जगत् बहुत बड़ा है। उसकी खोज अतीत में हुई है और वर्तमान में भी हो रही है। अतीत में खोज का क्षेत्र सीमित था। वर्तमान में उसका क्षेत्र बहुत बड़ा बन गया है। अतीत में रहस्य के ज्ञान और उसकी खोज के साथ पात्रता का अनुबन्ध कर दिया गया। वर्तमान में पात्र-अपात्र का कोई भेद नहीं है। पात्र की कसौटी थी—जो रहस्य ज्ञान को पचा सके, मानव जाति के अहित में उसका उपयोग न करे, हित में उपयोग करने का भी विवेक हो, उसे व्यवसाय न बनाए, उसके परिणाम के प्रति सतर्क रहे। वर्तमान में पात्र की ये सारी कसौटियाँ मान्य नहीं हैं। बहुत सारे वैज्ञानिक अनुसंधान व्यावसायिक बने हुए हैं। शस्त्र-निर्माण अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में एक बहुत बड़ा व्यवसाय है। शस्त्र-निर्माण की नई-नई तकनीकें विकसित हो रही हैं। उनका उपयोग व्यावसायिक दृष्टि से किया जा रहा है। वैज्ञानिकों में एक होड़-सी लगी हुई है। कौन कितना भयंकर शस्त्र बनाए? सुविधा के उपकरणों की भी प्रतिस्पर्धा चल रही है। एक चीज का आविष्कार होता है। उसे व्यापकता मिलती है। कुछ समय बाद उसके बुरे परिणामों की चेतावनी सामने आ जाती है। विद्युत के लिए अणु-भट्टियों के निर्माण का सिलसिला चला, उसकी बहुत गाथाएँ गाई गईं। अनेक राष्ट्रों में अणु-भट्टियों के निर्माण की होड़-सी लग गई। अब चिन्तन की धारा बदल रही है। उनके निर्माण पर पुनर्विचार की बात कही जा रही है। क्या यह वैज्ञानिक जगत् की अदृशिता नहीं है?

मानव उपकरण के लिए नहीं है

अमेरिका, आस्ट्रेलिया, पश्चिमी जर्मनी, स्वीडन, मैक्सिको, स्पेन, ब्राजील, अर्जेन्टीना, चीन आदि ने अपना अणु-भट्टी निर्माण का कार्यक्रम स्थगित कर दिया है। अणु-धूलि और अणु-विकिरण मनुष्य जाति के सामने एक त्रासदी बना है। अणु का ज्ञान पहले भी था किन्तु उसके उपयोग की बात मनुष्य ने नहीं सोची। उसके दुष्परिणाम प्रत्यक्ष थे। वर्तमान में पहले अणु-भट्टी का प्रभाव हजारों किलोमीटर की दूरी तक पहुँच जाता है। उससे प्रभावित भूमि विकास योग्य नहीं रहती। मनुष्य अनेक बीमारियों का शिकार बन जाता है। बताया गया है—चेर्नोबिल के किरणोत्सर्ग से पाँच लाख लोग कैंसर के शिकार होंगे। और भी क्या-क्या होगा, उनका लेखा-जोखा अभी शेष है।

उपकरण मानव के लिए है, मानव उनके लिए नहीं है। जो उपकरण-मानव जाति के विनाश में व्याप्त हो रहे हैं, उनके निर्माण का मोह भंग नहीं हो रहा है। क्या यह कम आश्चर्य की बात है? पदार्थ का अनसोचा-अनसमझा विकास खतरों से भरा हुआ है। कुछ छोटे खतरे हैं और कुछ बड़े खतरे हैं। कुछ तात्कालिक खतरे हैं और कुछ धीमे-धीमे बढ़ने वाले खतरे हैं। ये खतरे वैज्ञानिक खोज के साथ-साथ बढ़ रहे हैं।

मूल्यवान् चिन्तन

आज का समाज इन्द्रिय-प्रधान है। उसमें इन्द्रियों की तुमि की प्रबल आकांक्षा है। व्यवसाय से जुड़े हुए वैज्ञानिक इस सामाजिक

दुर्बलता का लाभ उठा रहे हैं। एक सामाजिक व्यक्ति इन्द्रिय तृप्ति से विमुख हो जाएगा, यह नहीं सोचा जा सकता। इन्द्रिय तृप्ति की सीमा के बारे में सोचा जा सकता है। भारतीय धर्मों में व्रत का चिन्तन बहुत मूल्यवान् रहा है। उसके द्वारा इन्द्रिय तृप्ति पर एक अंकुश लगाया जाता था। विज्ञानोन्मुख समाज लगभग व्रत-विमुख बन चुका है। व्रतजनित नियंत्रण के अभाव में सुखवाद या सुविधावाद को फैलाने का अवसर मिला है। आज का आदमी इन्द्रियों को अधिक-से-अधिक तृप्त करना चाहता है इसीलिए बाजार बहुत बड़े बन गए हैं। वस्तु भंडार अनगिन पदार्थों से भरे हुए हैं। दुकानों का जाल-सा फैल गया है। ऐसे बहुत कारखाने चल रहे हैं, जिनमें निर्मित वस्तुओं की अनिवार्य आवश्यकता नहीं है। वे केवल इन्द्रियों को भुलावे में डाल रहे हैं।

समाधान कौन देगा ?

वैज्ञानिक जगत के अनुसार भूमिगत ईंधन—तेल, कोयला, गैस आदि का भंडार सौ वर्ष में समाप्त हो जाएगा। ऊर्जा के स्रोतों की समाप्ति एक संकट बनकर गहरा गई है। उसके नये विकल्प खोजे जा

रहे हैं। उपभोक्तावादी संस्कृति का समाज ऊर्जा के आधार पर निर्मित हुआ है। ऊर्जा के अभाव में उसका आधार ही ढह जाता है। बार-बार वही प्रश्न उभरकर सामने आता है। क्या मनुष्य के लिए इतने पदार्थ और उपकरण जरूरी हैं? वास्तव में नहीं है—इन्द्रियों की उच्छृंखलता बढ़ाकर उनकी जरूरत पैदा की गई है। इस कृत्रिम जरूरत ने गरीबों को बढ़ावा दिया है, आर्थिक विषमता को सहारा दिया है, फलस्वरूप हिंसा और हत्या को नया आयाम मिला है।

मैं जानता हूँ—वैज्ञानिक युग में जीने वाला विज्ञान से दूर नहीं भाग सकता, वैज्ञानिक उपलब्धियों से मुँह नहीं मोड़ सकता किन्तु क्या वह आवश्यकता और प्रलोभन के बीच भेद-रेखा भी नहीं खींच सकता? आज का वैज्ञानिक अपनी खोजों से विरत नहीं हो सकता। क्या वह उन खोजों से अपने आपको नहीं बचा सकता, जो अपराध, हत्या और नाना प्रकार की बीमारियों के लिए जिम्मेदार है? अनुसंधान स्वयं समस्या बन रहा है। आर्थिक विकास में उलझा हुआ व्यवसायी और व्यवसाय से जुड़ा हुआ विज्ञान क्या इसका समाधान दे सकेगा ?

धर्म के प्रयोग से हो समस्या का समाधान

सामाजिक व्यवस्था में भी आचार्य महाप्रज्ञ जी ने अपनी औजस्वी वाणी एवं प्रवचनों की विधा से कई समस्याओं का निदान किया। प्रेक्षाध्यान आज एक ऐसी तकनीक के रूप में प्रचलित हुई, जिससे स्वास्थ्य विज्ञान लाभान्वित हुआ है। आचार्यश्री धर्म को सामाजिक संरचना चलाने में सहायक बताते थे। आज के वैज्ञानिक अनुसंधान युग में धर्म के प्रयोगों द्वारा वैज्ञानिक अनुसंधानों से हुई समस्याओं पर काफी हद तक काबु पाया जा सकता है—संपादक

अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह—ये धर्म के पाँच प्रयोग हैं। धर्मादायिता के क्षेत्र में इनका सर्वोपरि मूल्य है। सामाजिक क्षेत्र में भी इनका मूल्य कम नहीं है। अहिंसा का धार्मिक मूल्य है—असत् प्रवृत्ति का संयम और सत् प्रवृत्ति का विकास। उसका सामाजिक मूल्य है—समाज व्यवस्था को भंग करने वाली घटना पर नियंत्रण। अहिंसात्मक प्रतिरोध के द्वारा अन्यायपूर्ण प्रवृत्ति को रोका जा सकता है। महात्मा गांधी ने अहिंसात्मक प्रतिरोध की पुरानी परंपरा को नया रूप दिया और वह राजनीति के क्षेत्र में भी प्रतिष्ठित हुई।

मार्क्स ने साधन-शुद्धि को अनिवार्य नहीं माना। उन्होंने साधन के चुनाव को सामाजिक या शक्ति की दृष्टि से देखा। उन्हें ऐच्छिकता में साध्य की प्राप्ति संभव नहीं लगी इसलिए हिंसात्मक नियंत्रण को बहुमूल्य दिया। हिंसा का परिणाम अहिंसा नहीं हुआ। व्यक्तियों की आपसी हिंसा ने सामुदायिक व्यवस्था को विखंडित कर दिया।

अपरिग्रह का आध्यात्मिक मूल्य है—इच्छाजनित क्लेश से मुक्ति। उसका सामाजिक मूल्य है सम्पत्ति के वैयक्तिक प्रभुत्व का समाजीकरण। उसे स्पष्ट करना आवश्यक है। अहिंसा और अपरिग्रह सिद्धांत से फलित नहीं होते। उनकी सिद्धि के लिए चेतना का रूपान्तरण आवश्यक है। अहिंसा की चेतना केवल वैचारिक परिवर्तन नहीं है। वह अभ्यास और प्रयोग से होने वाला परिवर्तन है।

प्रयोग के सूत्र ये बन सकते हैं—

- हिंसा के परिणाम का दीर्घकालिक चिन्तन और ऐतिहासिक विश्लेषण।
- प्राणी-मात्र की एकता की भावना से चित्त को भावित करना।
- 'दूसरों पर अधिकार स्थापित करने की मनोवृत्ति ही मानवीय एकता का सबसे बड़ा विघ्न है।' इस भावना से चित्त को भावित करना।

अपरिग्रह की चेतना को जगाना अहिंसा से भी ज्यादा कठिन है। हिंसा का सबसे बड़ा कारण परिग्रह अथवा संग्रह है। क्रोध, अहंकार और माया—इन्हें छोड़ना कठिन है। लोभ को छोड़ना कठिनतर है। प्रयोग के बिना अलोभ की चेतना को जगाया नहीं जा सकता। प्रयोग के सूत्र ये बन सकते हैं—

- संग्रह से होने वाले कुपरिणामों का पुनः-पुनः चिन्तन।
- आसक्ति से होने वाले मनोकायिक रोगों का पुनः-पुनः चिन्तन।
- अधिक संग्रह से होने वाली सामाजिक प्रतिक्रियाओं और हिंसात्मक उत्तेजनाओं का पुनः-पुनः चिन्तन।
- आसक्ति अथवा मूर्च्छा को कम करने के लिए संकल्प और सुझाव का प्रयोग।
- त्याग की भावना को जामृत करने वाले प्रयोग।

असत्य, स्तेय और अब्रह्मचर्य—ये आत्म-साधना के ही विघ्न नहीं हैं, ये समाज व्यवस्था के भी कण्टक हैं।

समाज की सुव्यवस्था के लिए पाँच अणुव्रत अनिवार्य हैं—

- अहिंसा—अनावश्यक हिंसा का वर्जन।
- सत्य—समाज व्यवस्था को छिन्न-छिन्न करने वाले असत्य का वर्जन।
- अस्तेय—व्यावसायिक और आपराधिक चोरी का वर्जन।
- ब्रह्मचर्य—काम-वासना का संयम।
- अपरिग्रह—इच्छा का परिमाण, व्यक्तिगत स्वामित्व की सीमा।

ये व्रत आध्यात्मिक विकास के लिए जितने उपयोगी हैं, समाज व्यवस्था के लिए भी उतने ही उपयोगी हैं। इनकी उपयोगिता को अस्वीकार करने वाला समाज और व्यक्ति सुख-शांति से नहीं जी सकता। हर मनुष्य में हिंसा और अहिंसा, सत्य और मिथ्यावाद, चौर्य और अचौर्य, अब्रह्मचर्य और ब्रह्मचर्य, परिग्रह और अपरिग्रह—दोनों प्रकार के बीज विद्यमान हैं। इनका अंकुरण कारण-सामग्री सापेक्ष है।

कारणों की मीमांसा प्राचीनकाल में भी की गई है। वर्तमान के वैज्ञानिकों ने कुछ नई खोजें भी की हैं। उनके अनुसार नाडीतंत्र, ग्रथितंत्र और जैव रसायन हिंसा और अहिंसा के बीजों को अंकुरित

है। जिन पुरुषों में इनकी मात्रा सामान्य से अधिक होती है, उनकी प्रवृत्ति हिंसात्मक होती है। इसी प्रकार सेरोटोनिन वह रसायन है, जो मस्तिष्क में शांति का संदेश फैलाता है। इसका एक उप-उत्पाद है एच.आई.ए.ए. नामक रसायन, जो रीढ़ की हड्डी में द्रव रूप में पाया जाता है। इसे मापकर यह जाना जा सकता है कि व्यक्ति में हिंसात्मक प्रवृत्ति किस हद तक फनप चुकी है। लेकिन इस रसायन को निकालना बड़ा कठिन है क्योंकि रीढ़ की हड्डी से द्रव निकालने में असहनीय दर्द होता है। इसी वजह से यह खोज आगे नहीं बढ़ पा रही है। अगर निकट भविष्य में कोई बात बन गई तो शायद हिंसा का रासायनिक उपचार सामने हो।

हिंसा का उपचार आवश्यक है। आज कोई भी अकेला व्यक्ति, अकेली विद्याशाखा और अकेली समाज प्रणाली हिंसा की बीमारी का उपचार नहीं कर सकती। धर्मगुरु के पास हिंसा को कम करने का प्रयोग है तो उसका स्वागत है। किसी रसायन-वेत्ता वैज्ञानिक के पास उसका उपचार है तो उसका भी स्वागत है। समाज व्यवस्था और अर्थव्यवस्था में परिवर्तन लाने वाले समाजशास्त्री और अर्थशास्त्री के पास उसका उपचार है तो उनका भी स्वागत है। किसी मनोवैज्ञानिक और राजनीतिज्ञ के पास उसका उपचार है तो

हिंसा का उपचार आवश्यक है। आज कोई भी अकेला व्यक्ति, अकेली विद्याशाखा और अकेली समाज प्रणाली हिंसा की बीमारी का उपचार नहीं कर सकती। धर्मगुरु के पास हिंसा को कम करने का प्रयोग है तो उसका स्वागत है।

करने में निमित्त बनते हैं। सामान्य धारणा यह है—साम्प्रदायिक कट्टरता मस्तिष्कीय विकार अथवा मस्तिष्कीय रोग है। मस्तिष्क विद्या के अनुसार मस्तिष्क की तीन परतें हैं—

- लिम्बिक सिस्टम
- रेटेलियन मस्तिष्क
- निओ—कार्टेक्स

रेटेलियन मस्तिष्क का प्रभाव अपने संप्रदाय को श्रेष्ठ मानने और दूसरे संप्रदाय को हीन मानने की भावना को जन्म देता है। घृणा और द्वेष के बीज भी उससे अंकुरित होते हैं। साम्प्रदायिक हिंसा से मुक्ति पाने का मार्ग है मस्तिष्कीय शक्ति का सम्यक् विकास, विस्तार और उपयोग। रेटेलियन मस्तिष्क का प्रभाव अपने संप्रदाय को श्रेष्ठ मानने और दूसरे संप्रदाय को हीन मानने की भावना को जन्म देता है। घृणा और द्वेष के बीज भी उससे अंकुरित होते हैं। साम्प्रदायिक हिंसा से मुक्ति पाने का मार्ग है मस्तिष्कीय शक्ति का सम्यक् विकास, विस्तार और उपयोग।

हिंसा की जड़ कहाँ हैं? इस प्रश्न का दार्शनिक उत्तर होगा—हिंसा की जड़ वृत्ति में है, कर्म-संस्कार में है। जीव वैज्ञानिक मानते हैं—हिंसा की जड़ जीन में है। जीन को हर अच्छे-बुरे गुण के लिए जिम्मेदार माना जाता है। कुछ वैज्ञानिकों का मत है कि हिंसा का जन्म न मनोवैज्ञानिक कारण से होता है और न जीन के कारण। इसका कारण रासायनिक परिवर्तन है। अमेरिकी वैज्ञानिकों ने इस पर काफी खोज की है। इनसे कई रोचक नतीजे सामने आए हैं। वैज्ञानिकों ने पाया कि हिंसा का कारण पुरुष यौन हार्मोन टेस्टोस्टेरोन

उनका भी स्वागत है। यह अनुभव-प्रसूत विश्वास के साथ कहा जा सकता है—यदि अध्यात्म और विज्ञान, अर्थव्यवस्था और समाज व्यवस्था का परिवर्तन, इन सबका सामूहिक प्रयत्न हो तो हिंसा की बढ़ती हुई प्रवृत्ति पर नियंत्रण पाया जा सकता है।

हिंसा और आतंक की छाया में जीने वाला समाज कभी स्वस्थ नहीं रह सकता। भय का तनाव बराबर बना रहता है। अभय और स्वास्थ्य में निकट का संबंध है। हिंसा धार्मिक दृष्टि से त्याज्य है। अनावश्यक हिंसा सामाजिक दृष्टि से भी अवांछनीय है। वर्तमान परिस्थिति में अहिंसा के संस्कार का निर्माण करने का दायित्व सबसे ज्यादा शिक्षा पर है। वर्तमान की शिक्षा प्रणाली में बौद्धिक, व्यावसायिक और यांत्रिक विकास के लिए बहुत कुछ है किन्तु संस्कार निर्माण के लिए कुछ भी नहीं है अथवा कुछ है तो वह नगण्य है। इस समस्या पर समाज, राजनीति और शिक्षा क्षेत्र के चिन्तकों और कार्यकर्ताओं का समन्वित ध्यान आकृष्ट होना चाहिए। इस विषय की ओर ध्यान आकृष्ट करने के लिए जीवन-विज्ञान का विकल्प प्रस्तुत किया गया है। जहाँ-जहाँ उसके प्रयोग हुए हैं, वहाँ-वहाँ लक्ष्य की पूर्ति में सफलता मिली है। छात्र-छात्राओं में अहिंसा, मानसिक शांति, तनाव मुक्ति, नशा मुक्ति, पारस्परिक सामंजस्य और स्वास्थ्य का विकास देखने को मिला है। यह अध्यात्म और विज्ञान के समन्वय का प्रयोग है। कोरा अध्यात्म और कोरा विज्ञान—दोनों एकांगी हैं। वे अलग-अलग रहकर जीवन की समग्रता को सिंचन नहीं दे सकते। जीवन के सर्वांगीण विकास की दृष्टि से इन दोनों का समन्वय बहुत उपयोगी हो सकता है।



जीवन का लक्ष्य

आचार्य महाश्रमण

जीवन का कोई अच्छा लक्ष्य बनना चाहिए 'गोल एचीव' करने के लिए अच्छी तकनीक भी काम में ली जानी चाहिए। किसी भी लक्ष्य को पाने के लिए हमारे में इच्छाशक्ति रहे कि मुझे उस लक्ष्य की दिशा में आगे बढ़ना है। विद्यार्थियों का एक लक्ष्य रहता है विद्वत्ता को प्राप्त करना, विद्यार्थी विद्वत्ता प्राप्ति का प्रयास करता है, जैसे आदमी रत्न को पाने के लिए खोज करता है, प्रयास करता है किन्तु रत्न आदमी की खोज नहीं करता, वैसे ही विद्यार्थी भी प्रयत्न करता है; पुरुषार्थ करता है तो उसे विद्वत्ता रूपी रत्न की प्राप्ति हो सकती है। पुरुषार्थ करने से सिद्धि की प्राप्ति होती है, उद्यमशील पुरुष का लक्ष्मी वरण करती है, भाग्य भरोसे रहने वाला अभागी कहलाता है, अतः व्यक्ति को चाहिए कि वह भाग्य के भरोसे न बैठे। वह सद्पुरुषार्थ और पराक्रम में स्वयं को नियोजित कर दे। हो सकता है कि एक-दो बार पुरुषार्थ करने से सफलता न भी मिले, लेकिन मन में यह तो विचार नहीं आना कि सद्कार्य के लिए पुरुषार्थ नहीं किया, ऐसा भी नहीं कि बार-बार पुरुषार्थ करने के बावजूद भी सफलता नहीं मिलेगी। अन्त में पुरुषार्थी के कदम सफलता अवश्य चूमती है।

अध्यात्मविद्या-संपन्न बनो

हमारी दुनिया में विद्या का महत्त्व है। विद्या के दो प्रकार हैं—लौकिक विद्या और अलौकिक विद्या। गृहस्थ के लिए लौकिक विद्या बहुत आवश्यक होती है। आचार्य भिक्षु ने भी गार्हस्थ्य में महाजनी विद्या सीखी थी। जिस विद्या का संबंध धनार्जन के साथ है,

गार्हस्थ्य के साथ है, वह लौकिक विद्या है। जिस विद्या का संबंध आत्मा के साथ है, मोक्ष के साथ है, परलोक के साथ है या जीवन के निर्मल आचरणों के साथ है, उसे मैं अलौकिक विद्या कहता हूँ। उसे अध्यात्मविद्या भी कहा जा सकता है। इस अध्यात्मविद्या को

श्रेष्ठ माना गया है। श्रीमद्भगवद्गीता में कहा गया—
अध्यात्मविद्या विद्यानां वादः प्रवदतामहम्

में विद्याओं में अध्यात्मविद्या अर्थात् ब्रह्मविद्या और परस्पर विवाद करने वालों का तत्त्व निर्णय के लिए किया जाने वाला वाद है। जो विद्याएँ इस शरीर से संबंधित हैं, इस लोक तक सीमित हैं, वे लौकिक विद्याएँ होती हैं। जिस विद्या का संबंध परलोक के साथ भी है उसे पारलौकिक विद्या या अलौकिक विद्या या आत्मविद्या या अध्यात्म विद्या भी कहा जा सकता है। जो गृहस्थ छात्र-छात्राएँ अलौकिक विद्याओं को नहीं पढ़ते, केवल लौकिक विद्या तक ही सीमित रह जाते हैं, उनका ज्ञान तो बढ़ता है, पर उन्हें अध्यात्म का वह तत्त्व प्राप्त होना कठिन होता है, जो जीवन के लिए बहुत जरूरी होता है। अध्यात्मविद्या वह विद्या है, जो आदमी को आत्मिक शांति प्रदान करने वाली होती है, भीतरी आनन्द प्रदान करने वाली होती है। संस्कृत साहित्य में तो यहाँ तक कहा गया कि अध्यात्मविद्या से जो अन्य शास्त्र हैं, उनमें कोई पारंगत हो जाता है, किन्तु अध्यात्म को बिलकुल नहीं समझता है, आत्मसात् नहीं करता है, वह व्यक्ति क्लेश का भागी बनता है। जो अध्यात्मविद्या का वेत्ता है, अध्यात्म को आत्मसात् करने वाला है, वह आनन्द का अनुभव करता है, आत्मिक सुख का अनुभव करता है।

संस्कृत साहित्य में तो यहाँ तक कहा गया कि अध्यात्मविद्या से जो अन्य शास्त्र हैं, उनमें कोई पारंगत हो जाता है, किन्तु अध्यात्म को बिलकुल नहीं समझता है, आत्मसात् नहीं करता है, वह व्यक्ति क्लेश का भागी बनता है। जो अध्यात्मविद्या का वेत्ता है, अध्यात्म को आत्मसात् करने वाला है, वह आनन्द का अनुभव करता है, आत्मिक सुख का अनुभव करता है।

मेरा तो मंतव्य है कि विद्यालय-महाविद्यालय में कुछ-कुछ अध्यात्मविद्या का भी ज्ञान दिया जाना चाहिए। विद्यालयों में जो प्रार्थनाएँ की जाती हैं, उनमें कुछ अध्यात्म का प्रभाव होता है। अनेक विद्यार्थी ऐसे गीत गाते हैं, जो अध्यात्म के रस से ओत-प्रोत होते हैं। उन गीतों पर भी कोई मनन करे तो उनसे भी कुछ अध्यात्म की बात प्राप्त हो सकती है। साधु-संन्यासी यत्किंचित् प्रयास करते हैं कि जनता को अध्यात्मविद्या का ज्ञान प्राप्त हो। वह अलग बात है कि कौन व्यक्ति अध्यात्म को प्रतिपादित करने में कितना समर्थ है और कौन व्यक्ति अध्यात्म का कितना अनुभव रखने वाला है। सब साधु एकसमान नहीं होते। उनमें तारतम्य होता है। यद्यपि सब गृहस्थ भी एकसमान नहीं होते। उनमें भी अन्तर होता है, परन्तु अपेक्षा है कि साधु वर्ग के द्वारा आम जनता को अध्यात्म का ज्ञान प्राप्त हो। दुनिया में लौकिक विद्या तो बहुत मिलती है, किन्तु अलौकिक विद्या प्राप्ति की आशा साधु-संन्यासियों से की जाती है। महात्मा बुद्ध के पूर्वजन्म का एक प्रसंग है। बुद्ध एक गुरुकुल में पढ़ने जाते थे। वहाँ अनेक विद्यार्थी आते। गुरुजी केवल लौकिक विद्या ही नहीं पढ़ाते, अलौकिक या अध्यात्मविद्या का भी कुछ ज्ञान विद्यार्थियों को दिया करते थे। एक दिन गुरुजी ने कहा—प्यारे विद्यार्थियों! आज का तुम्हारा पाठ है कि परमात्मा होता है। वह सब जगह देखता

है। ऐसा कोई स्थान नहीं, ऐसा कोई व्यक्ति नहीं, जिसको परमात्मा नहीं देखता है। परमात्मा से छुपकर हम कोई काम नहीं कर सकते। गुरुजी ने अध्यात्मविद्या का एक सिद्धान्त बता दिया। कुछ दिनों बाद गुरुजी ने सोचा कि मैंने मौखिक रूप से बच्चों को बात बता दी और बच्चों ने सुन भी ली, पर इसके मर्म को इन्होंने आत्मसात् किया या नहीं, इसका परीक्षण करना चाहिए।

एक दिन गुरुजी ने कहा—प्यारे विद्यार्थियों! मेरी पुत्री की शादी होने वाली है। क्या तुम लोग अपनी बहन की शादी के लिए कुछ दान-दक्षिणा दोगे? बच्चों ने कहा—हाँ गुरुजी! अवश्य देंगे। गुरुजी ने कहा—तुम जो पैसा लाओ, वह इस प्रकार लाना कि तुम्हें कोई देख न ले। विद्यार्थी—ठीक है गुरुजी। अब सब इस अवसर की खोज में लग गए कि कब मौका मिले, माता-पिता न देखें और हम पैसा उठा लें। अगले दिन पुनः विद्यार्थी गुरुकुल में आये।

गुरुजी—कल मैंने जो कहा था वह याद है? विद्यार्थी—हाँ गुरुजी। गुरुजी—क्या पैसा लाये हो? विद्यार्थी—हाँ लाए हैं।

गुरुजी—एक-एक विद्यार्थी क्रमशः आओ और जो पैसा लाए हो, वह इस मेज के ऊपर रख दो।

विद्यार्थी आते गये और पैसा मेज पर रखते गये। अंतिम नंबर बुद्ध का था, उसके पास कुछ भी नहीं था।

गुरुजी—तुम कुछ नहीं लाये?

बुद्ध—गुरुजी! मैं कुछ नहीं लाया।

गुरुजी को भीतर से तो कुछ शांति मिली कि एक विद्यार्थी तो ऐसा है, जिसने सिद्धान्त को समझा है।

गुरुजी—तुम क्यों नहीं लाए?

बुद्ध—गुरुदेव! आपका आदेश था कि कोई नहीं देखे तब पैसा उठाना है। मैं जैसे उठाने लगा, मुझे याद आ गया कि कुछ दिनों पूर्व आपने ही बताया था कि परमात्मा सब जगह देखते हैं, सबको देखते हैं। ऐसा कोई स्थान नहीं, कोई व्यक्ति नहीं, जहाँ और जिसको परमात्मा नहीं देखते। तब मैंने सोचा कि मैं अगर घर से पैसे उठाऊँगा तो भले माँ-पिताजी न देखें, किन्तु परमात्मा तो देखेंगे ही, इसलिए गुरुदेव! मैं पैसे नहीं लाया। गुरुजी को बहुत खुशी हुई कि एक विद्यार्थी तो मुझे मिल गया जो सिद्धान्त को आत्मसात् करने वाला है। यह अध्यात्मविद्या का संदेश था। मुझे विश्वास है कि आज भी विद्यालयों, महाविद्यालयों में शिक्षक विद्यार्थियों को ऐसी बातें बताते होंगे। सौ विद्यार्थियों में एक विद्यार्थी भी ऐसी बात ग्रहण कर लेता है तो भी बहुत अच्छी बात है। आदमी अध्यात्मविद्या को समझने का और फिर आत्मसात् करने का प्रयास करे। अध्यात्मविद्या-संपन्न व्यक्ति का मार्ग प्रशस्त हो सकेगा। 🙏

तकनीक की विकास यात्रा



भारतीय परिप्रेक्ष्य में

गगन सेठिया

भारत में प्राचीन काल से, आर्यभट्ट-ब्रह्मिहिर के समय से, वैज्ञानिक एवं तकनीकी विकास की परम्परा रही है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद इस क्षेत्र में हमारे प्रयत्नों की अभिवृद्धि हुई है। हमारे देश में कई अनुसंधान प्रयोगशालाएँ और उच्च तकनीकी शिक्षण संस्थान स्थापित हुए हैं। अनुमानतः देश में लगभग 200 अनुसंधान प्रयोगशालाओं का ताना-बाना है, जो कि देशवासियों को सुरक्षा के लिए आश्वस्त करता है और साथ ही अंतरिक्ष में उपग्रह प्रक्षेपण एवं अन्य चुनौतीपूर्ण कार्य संपन्न करने के लिए जाना जाता है।

आज के आधुनिक तकनीकी युग में घर से लेकर दफ्तर तक तकनीकी विकास की अभिवृद्धि प्रत्यक्ष रूप से देखी जा सकती है। जिस प्रकार इंटरनेट तकनीक में इजाफा हुआ है, उससे मीलों की दूरियाँ सेकण्डों में सिमट गई हैं। संचार उपकरणों में तकनीकी विकास ने पूरी दुनिया को पलक झपकने जितने समय में एक-दूसरे से बाकिफ होने के कगार पर ला दिया है।

देश की तकनीकी नीति सुविचारित है जो स्वदेशी तकनीकी के विकास को बढ़ावा देती है। हाल ही में भारत सरकार ने नई औद्योगिक नीति की रूपरेखा सामने रखी है जिसका उद्देश्य तकनीकी शोध, प्रशिक्षण और विकास के लिए आधारभूत ढाँचा तैयार करना है। वैज्ञानिक एवं औद्योगिक विकास परिषद् अपने विविध अनुसंधान प्रयोगशालाओं एवं संस्थानों के ताने-बाने के साथ वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान संबंधी हमारी मुख्य उपलब्धियों में अग्रणी संगठन रहा है।

1948 में स्थापित परमाणु अनुसंधान आयोग शांतिपूर्ण कार्यों के लिए नाभिकीय अनुसंधान में संलग्न संगठन है। परमाणु ऊर्जा संबंधी कार्यक्रमों को परमाणु ऊर्जा विभाग क्रियान्वित करता है। मुंबई के समीप ट्राम्बे स्थित भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र नाभिकीय अनुसंधान को निदेशित करने वाला देश का सबसे बड़ा वैज्ञानिक संस्थापन है। अफ्सरा, साइरस, ध्रुव, जरीना और पूर्णिमा देश के पाँच नाभिकीय प्रतिकारक हैं। राजस्थान में पोकरण स्थान पर दो भूमिगत नाभिकीय परीक्षण किये हैं। यह देश की उल्लेखनीय

उपलब्धि है जो हमें विश्व के गिने-चुने देशों में खड़ा करती है। परमाणु के क्षेत्र में पोषण तकनीकी का ज्ञान जुटाने वाले सात देशों में भारत एक है। चेन्नई में कल्पक्कम स्थित इंदिरा गांधी परमाणु अनुसंधान केन्द्र में पोषण तकनीकी अनुसंधान अनवरत चलता रहा है।

1992 में इनसेट उपग्रहों को प्रक्षेपित करने के बाद 1994 में ध्रुवीय अंतरिक्ष प्रक्षेपण यान सफलतापूर्वक प्रक्षेपित कर भारत ने अंतरिक्ष में स्थान बनाया। हाल ही में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने दुनिया में सबसे सस्ती उपग्रह प्रक्षेपण तकनीक और मंगलयान तकनीक भारत में विकसित किये जाने की घोषणा की है।

उल्लेखनीय है कि 2003 में भारत ने 2.5 टन भार के उपग्रह को 36,000 किलोमीटर अर्धव्यास की कक्षा में स्थापित किया था। इस कार्य के लिए प्रयुक्त द्वितीय भू-बहुकामीय उपग्रह प्रक्षेपण यान विकसित करने की चुनौती भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन ने स्वीकार की और इसमें उल्लेखनीय सफलता पाई।

सुरक्षा के क्षेत्र में पृथ्वी और नाग जैसे अस्त्रों का निर्माण देश की उच्च अनुसंधान योग्यता का द्योतक है। रात्रि चौकसी उपकरण और हल्का हेलीकॉप्टर विकसित करने में देश ने महत्वपूर्ण सफलता अर्जित की है।

कृषि के क्षेत्र में खाद्यान्न आत्मनिर्भरता का लक्ष्य प्राप्त करने के बाद भारत कृषि उत्पादों के निर्यात की दिशा में भी चल पड़ा है। हमारी तकनीकी विकास यात्रा का ही सुपरिणाम है कि आज अकाल-बाढ़ और प्राकृतिक आपदाओं से जूझने का सामर्थ्य है। निश्चित रूप से बहुत से संकर बीजों का विकास कर हमने देश की पैदावार को बढ़ाया है तथापि देश के सामने वर्षाकाल में भूस्खलन की समस्या विकराल रूप लिये आ खड़ी होती है।

जैसा कि उत्तराखंड, जम्मू कश्मीर में देखा गया है। इसका मूल कारण वनों का नष्ट होना है। अतः समय की आवश्यकता है कि पर्वतीय क्षेत्रों में वनीकरण को भी हम अपनी तकनीकी विकास यात्रा का अंग बनायें।





शोध की प्रवृत्ति जागृत करें

डॉ. राजू सरकार

21वीं सदी संभावनाओं से भरी है। इससे पहले कभी इतनी संभावनाएँ नहीं थीं, न ही इतना काम करने की जरूरत थी। आज के विद्यार्थी को बेहतर दुनिया व बेहतर भविष्य के लिए इन अवसरों को पकड़ लेने के लिए हरसंभव प्रयास करना चाहिए।

औद्योगिक क्रांति की शुरुआत से ही प्रतिस्पर्द्धा ने आविष्कार को बढ़ावा दिया है। जहाँ तक उपभोक्ताओं की बात है, तो उन्होंने हमेशा सक्षम व्यवसायों को चुना और अक्षम को अस्वीकार किया है। डार्विन का 'योग्यतम की जीत' का सिद्धांत विकासवादी परिकल्पना बनकर आधुनिक जीवनशैली के तौर-तरीकों की ओर रुख कर चुका है। मानव आधारित प्रतिस्पर्द्धा बेहतर उत्पादकता व आर्थिक समृद्धि की कुंजी है।

इस परिदृश्य में अतिरिक्त बढ़त को बनाए रखने के लिए विद्यार्थियों पर एक-दूसरे से प्रतिस्पर्द्धा करने के लिए दबाव डाला जाता है। यह एक गहन चिंता का विषय है कि इन सबसे नाबजूद हमारे देश के ज्यादातर उच्च शिक्षण संस्थान उच्च मानक के नहीं हैं। एक ऐसे देश के लिए जिसने सूचना तकनीक के क्षेत्र में क्रांति लाई हो, वहाँ के 80 प्रतिशत नए योग्य इंजीनियर उद्योगों की मानक कसौटी पर खुद को काम करने योग्य नहीं मानते हैं।

आज संस्थान व उद्योग के बीच परस्पर संबंधों को बेहतर बनाने की जरूरत है और इसके लिए सार्वजनिक व निजी क्षेत्र की भागीदारी सहायक सिद्ध होगी। इन कारकों के मद्देनजर उन क्षेत्रों की ओर ध्यान देना चाहिए जहाँ विद्यार्थी के लिए उपयुक्त अवसर मौजूद हैं। उन क्षेत्रों में काम कर वे न सिर्फ अपने भविष्य को संवार सकते हैं, बल्कि समाज की प्रगति में भी भागीदार बन सकते हैं।

शोध का अनुभव न होना अयोग्य साबित करता है

कुछ समय पहले तक अनुसंधान के क्षेत्र में अंडरग्रेजुएट की भागीदारी कभी-कभी देखने को मिलती थी। आज ग्रेजुएट स्कूल के विद्यार्थी इस बात को मानने लगे हैं कि अनुसंधान करने से उन्हें यह बात स्पष्ट समझ आने लगी है कि विज्ञान के क्षेत्र में करियर का भविष्य क्या होगा, लेकिन केवल शोध से परिचित होना ही आगे बढ़ना नहीं है।

आज अग्रणी ग्रेजुएट स्कूल न केवल इसकी अपेक्षा करने लगे हैं, बल्कि कुछ तो पूर्वाकांक्षा के तौर पर माँग भी करने लगे हैं। कुछ समय पहले तक शोध का लंबा समय ग्रेजुएट स्कूलों के पाठ्यक्रमों के स्वीकार्य को बढ़ावा देता रहा है, मगर आज शोध अनुभव का न होना आपको अयोग्य साबित करता है। एक ग्रेजुएट स्कूल अपने

विद्यार्थियों में और कुछ देखने से पहले यह जानना चाहता है कि उसके अंदर शोध की प्रवृत्ति है या नहीं। अंडरग्रेजुएट डिग्री पूरी होने तक जो विद्यार्थी प्रयोगशाला में स्वतंत्र रूप से काम करना सीख जाते हैं, उन्हें ग्रेजुएट स्कूल के लिए तैयार माना जाता है। अनुसंधान परिणामों के प्रकाशन की बजाय प्रत्यक्ष तौर पर प्राप्त की गई उपलब्धि कहीं ज्यादा मूल्यवान होती है और वह विद्यार्थी के साथ हमेशा रहती है। बहुत से अग्रणी विश्वविद्यालय रिसर्च प्रोजेक्ट में शामिल होने के लिए विद्यार्थियों को हमेशा प्रोत्साहित करते हैं। इस कारण इंजीनियरिंग के विभिन्न क्षेत्रों में नई राह दिखाने वाले कई शोध सामने आ सकते हैं।

बायोफ्यूल व क्लीन एनर्जी टेक्नोलॉजी, फ्यूचर ऑटोमोबाइल सॉल्यूशंस, नैनो-स्केल डिवाइसेस व फोटोनिक्स, न्यू एंड स्मार्ट मटीरियल्स, कंडक्टिंग पॉलिमर्स एंड बायो-डी-प्रेडेबल पॉलिमर्स, ब्रॉडबैंड ओवर पावर लाइंस, इंपो-सिक्वोरिटी एंड नेटवर्क मैनेजमेंट, क्लीन इन्वायरनमेंट एंड लो-कॉस्ट वाटर टेक्नोलॉजी, लो-कॉस्ट हाउसिंग आदि प्रमुख अनुसंधान के संभावित क्षेत्र हो सकते हैं। इन विश्वविद्यालयों में बहुत-सी विद्यार्थी शोध टीमों हैं, जिन्होंने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नैनो-स्केल डिवाइसेस एंड फोटोनिक्स, गैप बैंड फिल्टर्स, न्यू मटीरियल साइंस एंड टेक्नोलॉजी, विशेषकर फेरो मटीरियल्स के क्षेत्र में, बायो-डेप्रेडेबल पॉलिमर्स, कंडक्टिंग पॉलिमर्स और नैनो कॉम्पोजिट्स, ब्रॉडबैंड ओवर पावर लाइंस, इंडस्ट्रियल वेस्ट मटीरियल्स आदि पर अपने शोध-कार्य प्रकाशित किए हैं।

बदलते समय का आकलन करें

कुल वैश्विक ऊर्जा के आधे से अधिक की माँग तेल व गैस के माध्यम से पूरी होती है। 1991 में आर्थिक खुलेपन के बाद, भारत अपने औद्योगिक क्षेत्र में तेज गति से होने वाले विकास का गवाह है। इसके फलस्वरूप ऊर्जा की माँग व पूर्ति के बीच अंतर में कमी आई है। बायोडीजल प्राकृतिक ईंधन है, जो वनस्पति तेल या जानवरों की चर्बी से रासायनिक प्रक्रिया द्वारा तैयार किया जाता है। यह ईंधन कंप्रेशन इग्निशन इंजनों में प्रत्यक्ष विकल्प एक्सटेंडर या फॉसिल डीजल ईंधन के एडिटिव के तौर पर इस्तेमाल किया जा

सकता है। विद्यार्थियों को पेट्रो-प्लांट्स के फैलाव, उनके बेहतर एप्रो-प्रैक्टिस, स्वदेशी बायोडीजल उत्पादन तकनीक, छोटे से मध्यम क्षमता वाले बायोडीजल संस्करण, इकाई के डिजाइन व विकास, बायोडीजल के क्वालिटी एश्योरेंस और डीजल इंजन व वाहनों में बायोडीजल का परीक्षण के संदर्भ में अनुसंधान करना चाहिए।

विज्ञान व प्रौद्योगिकी विभाग के प्रौद्योगिकी सूचना व मूल्यांकन परिषद टीआईएफएसी के आरईएसीएच मिशन के तहत योग्य व विशिष्ट केन्द्रों के निर्माण के लिए संस्थानों को लक्षित किया गया है। इस योजना में परियोजनाओं को पुरस्कृत करने के लिए विद्यार्थी विभाग को प्रस्ताव भेज सकते हैं।

9 प्रतिशत सालाना सकल घरेलू उत्पाद व तीव्र गति से होने वाले शहरीकरण से देश में सस्ते मकानों का मिलना मुश्किल हो गया है। इस मुश्किल से निबटने के लिए सस्ता मकान बनाने की जरूरत है और सस्ते मकान तभी बन सकते हैं, जब स्थानीय स्तर पर मकान बनाने के लिए कम दाम पर मिलने वाली सामग्री उपलब्ध हो। इस संदर्भ में जाने-माने संस्थान महत्वपूर्ण शोध कर रहे हैं।

बीते कुछ वर्षों में सिर्फ विकास की जगह सतत विकास ने ले ली है। इस कारण आपदा काल आने के पहले व बाद भवन निर्माण में कचरे को काम में लाना इम्प्लॉयमेंट ऑफ वेस्ट मटीरियल्स, ई-वेस्ट और हरित भवनों का प्रभावशाली तरीके से व्यवस्थापन करना आदि काम भी अनुसंधान के क्षेत्र में सही कोशिश माने जाने लगे हैं।

अपने पैरों पर खड़ा होना आज से शुरू करें

लघु व मध्यम उद्योगों के लिए आसानी से मिलने वाले ऋण ने भी विद्यार्थियों को उद्यमिता के लिए प्रोत्साहित किया है। अपने काम, नवीन विचार, वित्त व व्यवसाय को साथ मिलाकर आर्थिक सामग्री में बदल देना उद्यमिता है। इसके लिए आप जितना जल्दी शुरुआत करेंगे, उतनी ही जल्दी अपने पैरों पर खड़े हो पाएंगे। अपने पैरों पर खड़ा होना आज की तारीख में जल्दी शुरुआत करने का पर्यायवाची बन गया है। एशिया-पैसिफिक स्टूडेंट एंटरप्रेन्योरशिप सोसायटी और एंटरप्रेन्योरशिप डेवलपमेंट सेल विद्यार्थियों को व्यावसायिक परिवेश से रू-ब-रू कराकर उनके महत्व को बढ़ा

रही हैं। सीएनबीसी टीवी 18 जैसे चैनल पर लेसंस इन मार्केटिंग एक्सलेंस जैसे सीरीज विद्यार्थियों को बेहतरीन मंच मुहैया कराते हैं। इसके तहत विद्यार्थी उद्योग जगत की वास्तविक समस्याओं पर काम कर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हैं।

बेहतरी में योगदान देना हम सबका कर्तव्य है

इन सबके अलावा, हमारे देश में अशिक्षा, बेरोजगारी, गरीबी, असमानता, सामाजिक अन्याय, साफ पीने के पानी की अनुपलब्धता, साफ-सफाई व औपचारिक नौकरी के अवसरों में कमी को देखते हुए सामुदायिक सेवा को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। तरक्की करना हमारे लिए तभी सार्थक होगा, जब हम अपने साथ दूसरों को भी साथ लेकर आगे बढ़ेंगे। बिना सबको साथ लिए आगे बढ़ने का अर्थ है—खोखली तरक्की प्राप्त करना। समानता के बिना विकास बेमानी है।

एक जिम्मेदार नागरिक होने के नाते समाज की बेहतरी में योगदान देना हम सबका कर्तव्य है। वित्त मंत्रालय के मुख्य आर्थिक सलाहकार डॉ. कौशिक बासु अपनी पुस्तक, प्रेल्युड टू पॉलिटिकल इकॉनॉमी में सम्मिलित तरक्की के बारे में बताते हुए कहते हैं, किसी भी देश की तरक्की को मापने के लिए हाशिए पर रहने वाले हर पाँचवें व्यक्ति या जनसंख्या के 20 प्रतिशत की प्रति व्यक्ति आय को मापा जाना चाहिए। वे यह तर्क भी देते हैं कि अर्थव्यवस्था की कमाई का बराबर भाग एकदम हाशिए पर रहने वाले हर पाँचवें व्यक्ति को दे देना चाहिए।

जमीन से जुड़ी हुई ऐसी कितनी समस्याएँ हैं, जो सरकार व सामाजिक एजेंसियों द्वारा नजरअंदाज कर दी जाती हैं। इन सारी समस्याओं को सामुदायिक सेवा के माध्यम से उठाया जा सकता है। विद्यार्थियों के लिए यह इसलिए भी जरूरी है, क्योंकि ऐसा करके ही अकादमिक शिक्षा व वास्तविक मानवीय जरूरतों के बीच के फासले को खत्म किया जा सकता है। यह न सिर्फ आपके वैयक्तिक, अंतर-वैयक्तिक व सामाजिक विकास में मदद करती है, बल्कि सकारात्मक जीवनशैली के चयन व व्यवहार को सहारा भी देती है। इन कार्य-कलापों के द्वारा विद्यार्थियों को दया भाव को समझने में मदद मिलती है।

सबसे आगे रहने के लिए

- हरेक विद्यार्थी को चाहिए कि वह अध्ययन करके अधिक से अधिक संबंधित सामग्री जुटाने का प्रयास करे।
- अग्रणी संस्थानों और आर एंड डी हाउसेस से संबंध बनाना, विभिन्न तकनीकी बॉडी की सदस्यता लेना, इंजीनियरिंग अनुसंधानों में संबंधित जानकारियों का आदान-प्रदान करना आदि ऐसे कार्य हैं जो समाज व नीति बनाने वाले संगठनों को मुहैया करवाना चाहिए। ये सभी चीजें उनके विकास कार्यों में हमेशा मददगार साबित होती हैं।
- हम ऐसा वातावरण तैयार करें, जहाँ एक बड़े समाज के निर्माण में हर व्यक्ति अपनी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित कर सके। जहाँ हम अपनी तकनीकी सहायता से आस-पास के सभी लोगों के बीच आपसी सौहार्द बना सकें। समाज में ऐसे विचारों का हमेशा स्वागत किया जाता है।
- अनुसंधान व आविष्कार की महत्ता के मद्देनजर गुणवत्ता आधारित जागरूकता के लिए किया गया अच्छा शोध भी विद्यार्थी समुदाय के लिए काफी मूल्यवान साबित हो सकता है। ये दोनों ही बातें विद्यार्थियों को उनके मध्य व लंबे पेशेवर कैरियर और उनकी रुचि के क्षेत्र में प्रैक्टिसनर के तौर पर सफलता प्राप्त करने के योग्य बना सकती हैं।



वर्ष 2014 के सर्वश्रेष्ठ इन्वेंशन

2014 का वर्ष कई यादगार आविष्कारों के लिए जाना जाएगा। इनमें से अधिकतर इन्वेंशन मानव जीवन को आसान बनाएँगे। हमारे भविष्य की तस्वीर बदलने में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका होगी। नई टेक्नोलॉजी बिजली बचाएगी। पर्यावरण सुरक्षित रखेगी। हर दिन की समस्याओं का हल निकालेगी। सेहत को बेहतर बनाने में मदद करेगी। कुछ इन्वेंशन इंटरटेनमेंट को और मजेदार बनाएँगे। जिंदगी के कई पहलू इनसे प्रभावित होंगे। सुप्रसिद्ध मैग्जीन टाइम ने वर्ष के 25 सर्वश्रेष्ठ इन्वेंशन की सूची जारी की है। इसमें भारत के मंगलयान को विशेष प्राथमिकता दी गई है। मंगलयान को स्पेस साइंस का अहम माइलस्टोन माना है। यहाँ पेश है, सर्वश्रेष्ठ आविष्कारों का ब्योरा।

भारत का मंगलयान स्पेस साइंस की विशेष उपलब्धि

सुपरस्मार्ट स्पेसक्रॉफ्ट मंगलयान उन 18 यानों में शामिल है जिन्हें 1960 से मंगल ग्रह की खोज के लिए भेजा गया है। भारत ने पहले प्रयास में मंगलयान को लाल ग्रह की कक्षा में स्थापित किया है। ऐसी सफलता अमेरिका, रूस और यूरोपीय देश तक हासिल नहीं कर सके हैं।

केवल 400 करोड़ रुपए की लागत से बने स्पेस क्रॉफ्ट में सिर्फ पाँच उपकरण हैं। स्पेस क्रॉफ्ट पर लगे डिवाइस मंगल ग्रह पर मीथेन की मात्रा और सतह के तत्वों की जाँच करेंगे। इस सफलता ने भारत

को दूसरे ग्रहों की खोज में अपनी सक्षमता को दिखाने का अवसर दिया है। इस अभियान से भारत का अंतरिक्ष कार्यक्रम नई ऊँचाइयों पर पहुँच गया है। इससे स्पेस साइंस को नई दिशा मिलेगी।

पोर्टेबल एटमी रिएक्टर

लॉकहीड मार्टिन कंपनी ने हाइड्रोजन परमाणु की फ्यूजन टेक्नोलॉजी विकसित करने का दावा किया है।

इसके जरिये दस वर्ष के भीतर टुक में फिट किए जाने वाले छोटे फ्यूजन रिएक्टर बनाए जा सकेंगे। रिएक्टर के बारे में विस्तृत ब्योरा नहीं दिया गया है। कई वैज्ञानिकों को दावे पर संदेह है। अगर

लॉकहीड ऐसे रिएक्टर वाकई बना लेती है तो एनर्जी की दुनिया बदल जाएगी।

वायरलैस इलेक्ट्रिसिटी

वायरलैस इंटरनेट और वायरलैस फोन पहले से चल रहे हैं। अब अमेरिकी कंपनी विट्रीसिटी कुछ और बढ़ा कर रही है। उसकी टेक्नोलॉजी आठ फीट दूर से वस्तुओं को चला सकेगी।

प्लग से जुड़ा तार बिजली पैदा करने वाला मैग्नेटिक फील्ड बनाएगा। टोयोटा की इलेक्ट्रिक कार, इंटेल के पर्सनल कम्प्यूटर सहित कई चीजों पर इसका परीक्षण हो चुका है। कंपनी के सीईओ एलेक्स ग्रुजेन कहते हैं, दस वर्ष में कमरों में लैम्प, टीवी, स्टीरियो सहित सभी चीजों को एक सेंट्रल चार्जिंग सिस्टम से चलाया जा सकेगा।

हर जगह थ्रीडी का कमाल

थ्रीडी प्रिंटर डिवाइस से डिजिटल ब्लू प्रिंट के जरिये प्लास्टिक की परत चढ़ाकर कई चीजें बनाई जा रही हैं। पिछले वर्ष फिजिक्स की पढ़ाई के लिए थ्रीडी कारें बन गईं। मानव अंगों के लिए थ्रीडी प्रिंटेड टिशू बने।

जनरल इलेक्ट्रिक ने अपने जेट विमानों की सक्षमता बढ़ाने के लिए थ्रीडी प्रिंटिंग का उपयोग किया है। थ्रीडी सिस्टम्स के सीईओ एवि रीछेनताल कहते हैं, यह टेक्नोलॉजी हमारी हलचल के हर क्षेत्र को स्पर्श करती है। थ्रीडी सिस्टम्स के प्रिंटर कैंडी, म्यूजिकल इंस्ट्रूमेंट से लेकर कई वस्तुएँ बनाते हैं। थ्रीडी के कुछ अन्य कारिश्मों पर ध्यान दीजिए।

थ्रीडी कैंडी—यह शेफजेट डिवाइस शक्कर की जायकेदार कैंडी बनाता है।

थ्रीडी कार—लोकल मोटर्स की स्ट्रेटी मॉडल कार कार्बन फाइबर से मिले प्लास्टिक से बनती है। यह 80 किमी प्रति घंटा की गति से दौड़ती है।

थ्रीडी जूते—जूते परंपरागत जूतों से हल्के हैं।

थ्रीडी प्रोस्थेसिस—मानव हाथों जैसी हड्डियाँ हैं। अधिकतर बनावटी अंगों की तुलना में सस्ते हैं।

इंटरनेटमेंट से जुड़े 6 बेस्ट इन्वेंशन

भारतीय इंजीनियर ने बनाया टेबलेट टॉय—कई बच्चों के समान भारतीय मूल के प्रमोद शर्मा की बेटी आईपैड पर आँखें गड़ाए रखती थी। जाहिर है, वे इससे खुश नहीं थे।

लिहाजा, गूगल के इस पूर्व इंजीनियर और उनके पुराने साथी जेरोम स्कोलर ने काल्पनिक खेल को वास्तविक दुनिया में दिखाने का रास्ता निकाला।

ओस्मो कंपनी का रिफ्लेक्टिव एआई अटैचमेंट आईपैड के कैमरा को वस्तुओं को समझने में सहायता करता है। बच्चे ऑनस्क्रीन पैटर्न की नकल रंगीन टाइल से कर सकते हैं।

सेल्फी स्ट्रीमलाइनर्स—वर्ष 2013 में सेल्फी की चर्चा हर तरफ थी। 2014 में सेल्फी ने करोड़ों लोगों के जीवन में हिस्सा बना लिया। इधर, नए बाजार को भाँपकर कई कंपनियों ने सेल्फी के अनुभव को बेहतर बनाने के लिए डिवाइस लॉन्च किए हैं।

सेल्फी ब्रश—बालों के सामान्य ब्रश के समान काम करता है। फोन की पोजीशन बनाए रखता है।

सेल्फी स्टिक—निचले हिस्से में बटन दबाकर यूजर फोटो ले सकते हैं। उनकी पहुँच बढ़ती है।

कोचिंग गेम—94 फिफ्टी स्मार्ट सेंसर नामक बास्केटबॉल की इस गेंद में नौ सेंसर और एक ब्लू टूथ चिप लगी होती है। यह मोबाइल एप से खिलाड़ी को परफॉर्मेंस से संबंधित डाटा भेजेगी। इससे खिलाड़ियों को अपने शॉट को आँकने में सहायता मिलेगी। अगर खेल के दौरान कुछ गड़बड़ होती है तो एप से कोच के निर्देश आएँगे।

खाने वाले रैपर—दही, चीज और आइसक्रीम को ऐसे खोल में रखने का रास्ता खोजा है जो गर्मी और ठंड में अपना आकार बनाए रखते हैं।

प्रत्येक खोल सूखे फलों या अन्य प्राकृतिक वस्तुओं से बनता है। इनके छोटे कण एक-दूसरे से जुड़े रहते हैं। इन्हें मजबूत बनाने के लिए कैल्शियम और शक्कर का उपयोग होता है।

लड़कियों को अधिकार—डान नाडेयू और जूली केरविन ने किकस्टार्टर वेबसाइट पर एक करोड़ रुपए जुटाकर लड़कियों के लिए उपयोगी कंपनी बनाई है। फर्म ने महिलाओं के मजबूत व्यक्तित्व को दर्शाने के लिए आईएम एलीमेंटल सीरीज के एक्शन फिगर बनाए हैं। प्रत्येक फिगर नायकत्व के गुणों जैसे जीवट, साहस और ईमानदारी का प्रतिनिधित्व करता है।

डिजिटल आर्ट स्क्रीन—जेक लेवान की कंपनी ने कलाकृतियों को दिखाने के लिए 22 गुणा 13 इंच के फ्लैट स्क्रीन बनाए हैं। इनकी चमक सूर्य के प्रकाश के साथ कम-ज्यादा होगी। स्मार्ट फोन एप से स्क्रीन को बंद किया जा सकेगा।

इलेक्ट्रॉनिक फार्मेसी—दिनभर में कई किस्म की दवाइयाँ लेने वालों को यह जानने के लिए परेशान नहीं होना पड़ेगा कि कब कौन-सी दवाई लेनी है। इलेक्ट्रॉनिक फार्मेसी पिल पैक मरीजों को हर पंद्रह दिन में एक डिस्पेंसर भेजेगी।

इसमें अलग-अलग पैकेटों में दवाइयाँ रहेंगी। इन पर दवा लेने की तारीख और समय लिखा होगा। फिलहाल यह सेवा कई दवाइयाँ लेने वाले मरीजों तक सीमित है। बाद में इसका विस्तार किया जाएगा। फिलपैक डॉट कॉम पर उपलब्ध है।

बिजली बचाएगा यह एसी—अमेरिकी हर वर्ष अपने घरों की एयरकंडीशनिंग की बिजली पर 678 अरब रुपए से अधिक खर्च करते हैं। ये एयरकंडीशनर दर करोड़ टन कार्बन डाई ऑक्साइड छोड़ते हैं।

खाली घर में एयरकंडीशनर चलने से भारी साधन बेकार जाते हैं। आईटी कंसल्टेंट गार्थेन लेसली ने एसी को रिमोट से बंद और चालू करने के लिए क्विर्की को एक आइडिया भेजा। जनरल इलेक्ट्रिक की मदद से चल रही वेबसाइट लोगों के सुझावों पर अमल करती है।

चार माह बाद एरोस एयरकंडीशनर बाजार में आ गया। देखने में छरहरा और स्मार्ट एरोस अपने मालिक की हलचल को जीपीएस पर

ट्रेक कर स्वयं चालू या बंद हो सकता है। वह लोगों को बताता है कि वे अपने घर को ठंडा रखने के लिए कितना खर्च कर रहे हैं।

खुशनुमा बनेगी पार्टी—रायन ग्रेपर ऐसा कूलर बनाना चाहते थे, जो किसी भी जगह पार्टी को खुशनुमा बना सके। उनकी कंपनी का कूलेस्ट कूलर खाने-पीने का सामान स्टोर करता है। इसमें ब्लेंडर, एलईडी लाइट, बैटरी चार्जर, ब्लू टूथ स्पीकर भी है।

कूलर में बड़े पहिए फिट हैं ताकि इसे कहीं भी आसानी से ले जाया जा सके। इस वर्ष की शुरुआत में कूलर का प्रोटोटाइप किकस्टार्टर वेबसाइट पर पहली बार आया तो प्रोजेक्ट में धन लगाने वालों का ताँता लग गया। अब तक 63,000 लोग 82 करोड़ रुपए दे चुके हैं।

होवरबोर्ड : हवाई उड़ान—यह जादुई कारपेट के समान घूमने वाला एक किस्म का स्केटबोर्ड है। घुमावदार होवर इंजन से बनने वाला मैग्नेटिक फील्ड एल्यूमीनियम जैसी अनुकूल सतह के ऊपर बोर्ड को उठाता है।

बैटरी से चलता है। कैलिफोर्निया स्थित टेक फर्म हेंडो ने इसे बनाया है। वैसे, यह जमीन से केवल एक इंच ऊपर तैरता है। बैटरी 15 मिनट चलती है। कंपनी की योजना भूकंप के दौरान इमारतों को जमीन से ऊपर उठाने की टेक्नोलॉजी विकसित करने की है।

स्वास्थ्य के लिए

अच्छी सेहत और सुकून का रास्ता

अंधत्व रोकेंगे ये केले—अफ्रीका में पाँच वर्ष से कम आयु के 30 प्रतिशत बच्चों के अंधे होने का खतरा है। इन्हें आँख के लिए जरूरी विटामिन ए नहीं मिलता है। कैसा हो अगर इनके मुख्य आहार केले में विटामिन ए की भरपूर मात्रा डाल दी जाए।

आस्ट्रेलिया के जीव विज्ञानी जेम्स डेल को यह आइडिया आया। बिल और मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन की मदद से डेल और उनकी टीम ने विटामिन ए युक्त सुपरबनाना का विकास कर लिया। अमेरिका में मानवों पर इसका ट्रायल जल्द होगा।

कोपेनहेगन व्हील—अमेरिका की कंपनी ने साइक्लिंग को आसान बनाने के लिए कोपेनहेगल व्हील विकसित किया है। इसमें बैटरी से चलने वाली मोटर होती है। व्हील को अधिकतर साइकलों के पिछले हिस्से में लगाया जा सकता है।

स्मार्ट फोन एप के जरिये मोटर से पहियों पर साइकल की गति बढ़ाना संभव है। व्हील में लगे सेंसर सड़क की स्थिति, तापमान की जानकारी देते हैं।

जेल के भीतर पार्क में सैर करने का एहसास—अमेरिका के ऑरेगॉन की सबसे बड़ी जेल में कैदियों को अपने तरह के अलग कमरे—ब्लू रूम में प्रतिदिन एक घंटा रखा जाता है। यहाँ प्रोजेक्टर पर रेगिस्तानों, बहते झरनों और अन्य आउटडोर दृश्यों के वीडियो दिखाते हैं।

इन दृश्यों की क्रिएटर भारतीय मूल की नलिनी नाडकर्णी कहती हैं, यह पार्क में घूमने जैसा अनुभव है। वे कैदियों के व्यवहार को शांत रखने में प्रकृति के प्रभाव का अध्ययन कर रही हैं। ब्लू रूम में समय बिताने से कैदियों पर अच्छा प्रभाव पड़ा है।

इबोला से लड़ाई—जानलेवा इबोला वायरस को शरीर से अलग करने के लिए हीमोप्योरिफायर फिल्टर बनाया गया है। विशेष रूप से डिजाइन कार्ट्रिज को डायलिसिस मशीन के साथ अटैच किया जाता है।

इसका लेक्टिन फिल्टर इबोला वायरस को आकर्षित करता है। उसे खून से अलग कर देता है। इसका जर्मनी में केवल एक बार उपयोग किया गया है।

सुनने में सहायता—श्रवण शक्ति से वंचित लाखों लोग बोल भी नहीं सकते हैं। कंपनी का डिवाइस यूएनआई अमेरिकी भाषा में कही गई बात को बोलने वाले शब्दों और टेक्स्ट में तत्काल बदल देता है। डिवाइस के साथ टेबलेट, कैमरा और आवाज पहचानने वाले सेंसर जुड़े हैं।

हर दिन की समस्याएँ सुलझाने वाले 6 बेस्ट इन्वेंशन

एपल वॉच—यह वॉच कलाई में बंधा कम्प्यूटर है। टच स्क्रीन और बटन के अनूठे मेल से चलती है। समय के साथ फिटनेस का हालचाल बताएगी। पेमेंट करेगी। फैशन के हिसाब से आकर्षक है। 18 कैरेट सोने के मॉडल भी होंगे।

ब्लैकफोन : प्राइव्सेसी के फीचर—इस स्मार्ट फोन में प्राइव्सेसी का खास ध्यान रखा गया है। एडवर्ड स्नोडन द्वारा अमेरिका के सैकड़ों गोपनीय दस्तावेज लीक करने के बाद कंपनी ने फोन का निर्माण किया है। एंड्रॉयड ऑपरेटिंग सिस्टम पर आधारित डिवाइस में डाटा सुरक्षित रखने वाले कई फीचर हैं।


लूमो लिफ्ट : कमर और रीढ़ की निगरानी—बहुत सारे लोग कमर दर्द से पीड़ित क्यों हैं? कंपनी की मोनिका परकाश बताती है, हम भूल गए हैं कि ज्यादा नहीं झुकना चाहिए।

कंपनी का चिप जैसा अँगूठे के आकार का गैजेट लूमो गर्दन और रीढ़ की स्थिति का विश्लेषण करता है। इनके आदर्श स्थिति में नहीं होने पर वह हिलता है। जरूरी कारणों से झुकने पर घंटी बजाता है।

सरफेस प्रो 3—माइक्रोसॉफ्ट के 12 इंची टेबलेट में लैपटॉप की शक्ति है। यह वर्ड, एक्सेल और पावरपॉइंट जैसे डेस्कटॉप के एप चलाता है। इसके कीबोर्ड कवर को अलग कर सकते हैं। अन्य टेबलेट की तुलना में डॉक्टरों, बिजनेसमैन के लिए अधिक उपयोगी है।

यह अँगूठी अलर्ट करेगी—रिंगली कंपनी की अँगूठियाँ आपको ई-मेल और अन्य सूचनाओं की जानकारी देंगी। अगर आपका मोबाइल जेब या पर्स में रखा है तो अँगूठी की चमक से संकेत मिलेंगे। इसे की पूर्व प्रोडक्ट और डिजाइन मैनेजर क्रिस्टीना मकेंडो ने रिंगली की कल्पना की है।

वीएचडब्ल्यू की इलेक्ट्रिक कार लुभाती है—बीएमडब्ल्यू की आई-3 इलेक्ट्रिक कार कुछ अलग है। यह 113 से 177 किमी/घंटे की रफ्तार से दौड़ती है।

एक बार चार्ज करने पर तीन घंटे चलती है। एक ही पैडल से गाड़ी की गति बढ़ती है और ब्रेक लगता है। गैस की मोटर से बैटरी को रिचार्ज किया जा सकता है। साभार : दैनिक भास्कर 

कल, आज और कल

प्रकृति ने एकमात्र मनुष्य जाति को ही मस्तिष्कीय शक्ति प्रदान की है। आदिकाल से ही मनुष्य अपनी इस क्षमता को जीवन विकास हेतु बढ़ाता आया है। आवश्यकता के अनुसार प्राणी नित नए तरीकों से अपने जीवन स्तर को सुगम बनाता रहा है। समय के साथ-साथ मनुष्य अपने तार्किक कौशल से नई-नई तकनीकों का इस्तेमाल करने लगा। शनैः शनैः मनुष्य अपनी विकास गाथा को विकास व तकनीकी उपयोग से लिखने लगा।

साधारण जीवन में विकास

घड़ी, टी.वी., फ्रिज, कूलर, प्रेस, गैस-चूल्हा आदि-आदि ऐसे साधन तकनीक ने दिए हैं कि आम जीवन में इनकी उपयोगिता एक जरूरत बन चुकी है। आज भी इनमें संशोधन के प्रयोग निरंतर चल रहे हैं। जहाँ जीवन के हर क्षेत्र में तकनीक का उपयोग हो रहा है, वहीं इससे सभी वर्गों में रोजगार प्राप्त हो रहा है।

शिक्षा के क्षेत्र में

अंगुलियों पर पहाड़े, गिनती सीखना, लकड़ी के पट्टे (तख्ती) पर सरकण्डे की कलम से लिखना-पढ़ना, ये सब पुराने जमाने का इतिहास बन गया। आधुनिक विज्ञान ने शिक्षा के क्षेत्र में बहुत तरक्की की है। स्कूल-कॉलेजों में स्मार्ट-क्लास और विडियोग्राफी के द्वारा पढ़ाया जा रहा है। इंटरनेट और मोबाइल ने भी शिक्षा के स्तर को बढ़ाया है।

चिकित्सा क्षेत्र में

कुछ वर्षों पहले तक मलेरिया, निमोनिया आदि बीमारियों को घातक समझा जाता था। लेकिन इस क्षेत्र में हो रहे नित नए शोधों से काफी हद तक बीमारियों की रोकथाम में सफल हुए हैं। आधुनिक तकनीक से मनुष्य स्वास्थ्य के हर क्षेत्र में जानकारी प्राप्त कर रहा है। आज शरीर के हर अंग की विस्तृत जानकारी नई तकनीकों से हो रही है। होने वाली संभावित बीमारियों की रोकथाम की तैयारी पहले से ही की जा रही है। एक दशक पहले तक दिल की बीमारियाँ और कैंसर को असाध्य रोग समझा जाता था। लेकिन आज इस क्षेत्र में भी काफी हद तक सफलता प्राप्त कर ली है और इसकी सम्पूर्ण रोकथाम के लिए निरन्तर शोध जारी है।

संचार माध्यम

तकनीक ने इस क्षेत्र में आशातीत विकास किया है। आदिम युग में संदेश पहुँचाने के लिए ढोल-नगाड़ों को विशेष शैली में बजाया जाता था। धीरे-धीरे पक्षियों को इस हेतु विशेष प्रशिक्षण दिया जाने लगा। राजा-महाराजाओं के काल में दूत (हरकारे) का प्रयोग हुआ। मानव सभ्यता के विकास के साथ इस क्षेत्र में निरंतर प्रयोग होने लगे। एक समय में कागज और कलम संचार का माध्यम बना। समयान्तराल में टेलिफोन, तार आदि के आविष्कार से मानव जाति को भरपूर लाभ मिला। संचार माध्यम में सबसे बड़ी क्रान्ति टेलिविजन के साथ शुरू हुई। इसके साथ एक नया अध्याय संचार क्षेत्र में शुरू हो गया। आधुनिक युग में पेजर, मोबाइल और वर्तमान में इंटरनेट एक सशक्त माध्यम बना हुआ है। अब भी इस क्षेत्र में नित नए आवाम स्थापित हो रहे हैं।

परिवहन क्षेत्र

पैदल चलने के युग से लेकर आज विमानों के आधुनिक युग के बीच मनुष्य ने बेहतर प्रगति की है। मानव सभ्यता में जैसे-जैसे जनसंख्या में बढ़ोतरी होने लगी, वैसे-वैसे ही मनुष्य एक जगह से

दूसरी जगह तलाशने लगा। अपनी जरूरतों के अनुसार आने-जाने के तरीकों को तलाशने लगा। शुरूआती दौर में पशुओं के ऊपर बैठकर, फिर पहिए की खोज के साथ ही गाड़ी बनाकर अपने विकास-क्रम को चलाता रहा। आज आधुनिक युग में परिवहन के इतने साधन हो गए हैं कि मीलों की दूरी को कम से कम समय में तय कर सकते हैं।

विज्ञान का क्षेत्र

तकनीक और विज्ञान का चोली-दामन का साथ है। विज्ञान की शिक्षा के बिना तकनीकी क्षेत्र में विकास करना असंभव है। मनुष्य अपनी वैचारिक क्षमता को प्रायोगिक धरातल पर स्थापित करता आ रहा है। आदिम युग से ही अपने जीवन स्तर को निरंतर सुविधावादी बनाता आ रहा है। अपनी क्षमताओं का भरपूर उपयोग विज्ञान के द्वारा निरंतर किया जा रहा है।

मनोरंजन के क्षेत्र में

खो-खो, छुपा-छुपी, गिल्ली-डंडा, सतौलिया आदि ऐसे खेल हैं जो बीते दिनों की याद दिलाते हैं। इन सब खेलों में मनोरंजन के साथ-साथ शरीर की अच्छी कसरत हो जाती थी। इन सब खेलों में खर्च भी नहीं होता था। लेकिन बदलते जमाने में मनोरंजन क्षेत्र के मायने ही बदल दिए हैं। कुछ समय पहले तक वीडियो गेम आदि का चलन चला था। तकनीकी विकास ने इस क्षेत्र को असीमित कर दिया है। आजकल मोबाइल, इंटरनेट पर हर उम्र के लिए असंख्य गेम एप्स उपलब्ध हैं।

बदलती तकनीकों का दुष्प्रभाव

आज की वैश्विक संस्कृति ऐसी हो गयी है कि आज के युवाओं को अपने कार्यक्षेत्र में लगातार कम्प्यूटर के सामने बैठे रहना पड़ता है। जिससे कमर दर्द, गर्दन में दर्द एक आम बीमारी बनती जा रही है। आज के प्रतियोगी वातावरण में मानसिक तनाव के कारण युवा चिन्तित रहते हैं। उनकी दिनचर्या में सुबह सैर करना या फिर परिवार के साथ बैठना ये होता ही नहीं। कारणवश हर वक्त एक घुटन सी रहती है। आदिकाल को यदि आधुनिक विज्ञान की तकनीक से तुलना करें तो हमें पता चलता है कि मनुष्य ने जीवन के हर स्तर का विकास किया है। रहन-सहन से लेकर, शिक्षा, विज्ञान, संचार आदि में उत्तरोत्तर विकास किया है और यह क्रम अनवरत जारी भी है। लेकिन विडंबना यह है कि मनुष्य भौतिक विकास में बहुत आगे बढ़ रहा है परन्तु संस्कार के क्षेत्र में बहुत पीछे रह गया है। आज स्वार्थ की भावना बलवती होती जा रही है। भौतिक संशोधनों में ही हम लिप्त हो रहे हैं। सामाजिक संवाद में न्यूनता आ गयी है। भ्रष्टाचार, व्यभिचार, नशाखोरी, समाज में दिनोंदिन विकराल रूप से बढ़ रही है। नए-नए माध्यम से भ्रष्टाचार व नशा बढ़ रहा है। मोबाइल, इंटरनेट का दुरुपयोग हो रहा है। अतः जरूरत है विज्ञान और तकनीक का समाज के लिए बेहतर उपयोग हो। भौतिक विकास के साथ सामाजिक व आध्यात्मिक उत्थान हो।



आविष्कार जो बदलेंगे आपकी दुनिया

हितेन्द्र जैन

स्कैन भी करेगा यह माउस

कम्प्यूटर का एक ऐसा माउस तैयार है जो स्कैन करने का भी काम करेगा। मोबस्कैन ने ऐसी प्रौद्योगिकी तैयार की है जिसकी मदद से स्कैन के साथ ही साथ स्कैन की गई सामग्री का संपादन भी किया जा सकेगा। देखने में यह किसी आम कम्प्यूटर माउस के जैसा है, लेकिन इसकी तलहटी में कैमरा लगा हुआ है। ज्यूरिख स्थित डैकुडा एजी के संस्थापक और सीएफओ ने कहा, "इसके जरिए टेक्स्ट, तालिका और चित्रों का संपादन किया जा सकता है।" इस उत्पाद को हांगकांग में तैयार करने के लिए डैकुडा ने दुबई की जेनेसिस इंटरनेशनल के साथ करार किया है। जेनेसिस इंटरनेशनल के सत्यप्रकाश मेनन ने कहा, "हमने देश में इस उत्पाद का विपणन करने के लिए कुछ कंपनियों के साथ करार किया है।"

15 साल बाद बैटरी से उड़ेगा यात्री विमान

तकनीकी विकास के इस युग में बिजली से चलने वाली कारों की बात छोड़िए, अब तो बिजली से चलने वाले निजी जेट विमानों में सैर पर जाने की योजना बनाइए। फ्रांस की कंपनी एयरबस ऐसे यात्री जेट विमानों के निर्माण के क्षेत्र में कदम रखने जा रही है, जो हाइब्रिड इलेक्ट्रिक इंजन से चलेगा। इस विमान में 70-90 लोग सफर कर सकेंगे। विभिन्न मीडिया रिपोर्टों के मुताबिक, एयरबस समूह के मुख्य प्रौद्योगिकी अधिकारी जीन बोर्ट्रे ने कहा, "विमान 15-20 साल में हवाईपट्टी पर दौड़ सकता है। हाल में फ्रांस में मैरीनैक हवाईअड्डे पर इस विमान के एक 9.5 मीटर के लंबे प्रारूप का प्रदर्शन किया गया। प्रारूप विमान को ई-फैन कहा गया। यह दो सीटों वाला दो इलेक्ट्रिक मोटर से चलने वाला विमान था। वह विमान 177 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से करीब डेढ़ घंटे तक उड़ सकता है।"

अपनी सफाई खुद कर सकेगी ये कार

जापानी कार निर्माता कंपनी ने एक ऐसी कार बनाई है जो अपनी सफाई खुद करती है। इसका मतलब यह हुआ कि आप कितनी भी लंबी यात्रा करके लौटें आपको कार की सफाई करने की चिंता करने की बिल्कुल जरूरत नहीं है। जापानी कार निर्माता कंपनी ने अब इस कार पर से पर्दा हटा दिया है। यह कार न केवल अपनी सफाई खुद करती है बल्कि 'नैनो-पेंट प्रौद्योगिकी' के जरिये धूल-मिट्टी और गंदगी की सफाई भी करती है। कंपनी के एक प्रवक्ता ने कहा कि कार 'नोट' पेंट प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल करने वाली पहली कार है। खबरों में बताया गया कि 'सुपर-हाइड्रोफोबिक' और 'ओलिओफोबिक' पेंट पानी और तेल की गंदगी की भी सफाई करती है। अगर आप इस प्रौद्योगिकी 'अल्ट्रा इवर ड्राई' का उपयोग करना चाहते हैं तो इसके लिए आपको अतिरिक्त कीमत चुकानी होगी।

चेहरे के भावों की सच्चाई जान सकता है कम्प्यूटर

कम्प्यूटर ने चेहरे के भाव पहचानने के मामले में सबसे तेज माने जाने वाले मानव दिमाग को भी मात दे दी है। यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया (यूसी) सेन डियागो और यूनिवर्सिटी ऑफ टोरंटो के शोधकर्ताओं का कहना है कि एक कम्प्यूटर मशीन किसी के चेहरे पर दर्द के भाव की सच्चाई को मानवों से ज्यादा बेहतर पहचान सकती है। यूसी सेन डियागो के इंस्टीट्यूट फॉर न्यूरोल कम्प्यूटेशन में शोधकर्ता मेरियन बार्टलेट ने कहा, "कम्प्यूटर मशीन चेहरे के भावों की उन विशिष्ट गतिशील विशेषताओं को भी पहचान सकती है, जिसे पहचानने में मानवों से भी भूल हो सकती है।" यूनिवर्सिटी ऑफ टोरंटो के एरिक जैकमैन इंस्टीट्यूट ऑफ चाइल्ड स्टडी के शोधकर्ता कांग ली ने कहा, "मानवों से चेहरे के नकली भावों और असली भावों के बीच फर्क करने में भूल हो सकती है। लेकिन कम्प्यूटर मशीन की चेहरे के भाव पढ़ने की क्षमता मानवों से कहीं बेहतर है, जैसे कि चेहरे पर दिख रहा दर्द का भाव असली है कि केवल नाटक है।"

अब विज्ञापनों में होगी खाने की सुगंध

जब भी आप कोई स्वादिष्ट पकवान या अपने मनपसंद चॉकलेट, पेस्ट्री या धुआँ उठते हुए गर्मागर्म पिज्जा का विज्ञापन देखते हैं, तो क्या होता है? जी हाँ, आप उन लुभावने पकवानों की सुगंध महसूस करने लगते हैं और मुँह में पानी भर आता है। असल में तो सुगंध के साथ-साथ मुँह में पकवान का स्वाद तक आने लगता है। भारतीय मूल की प्रोफेसर आराधना कृष्णा ने उपभोक्ताओं से विज्ञापन में दिखने वाले पकवान की खुशबू की कल्पना करने को कहा और पाया कि पकवानों के चित्र आँखों के सामने आने से दिमागी प्रतिक्रिया सक्रिय हो उठती है। कृष्णा का शोध इस महत्वपूर्ण प्रभाव का प्रमाण है कि बढ़ते खाद्य विज्ञापन उद्योग के लिए यह फायदेमंद बात है और इससे उनके पकवान की खपत ज्यादा होगी।

वियरेबल डिवाइस से हाथ बन जाएगा की-बोर्ड

वो दिन दूर नहीं जब लोग अपनी अँगुलियों में फोन नंबर डायल करते हुए नजर आएँगे। एक वियरेबल डिवाइस पर काम कर रही है, जिससे हमारा हाथ की-बोर्ड की तरह काम कर सकेगा। यह एक प्रकार का कैमरा है, जिसे पहना जा सकेगा। इस कैमरे के सहारे आप अपने हाथ को देखेंगे और आपके अँगूठे के संचालन को यह कैमरा एक की-बोर्ड की तरह पढ़ पाएगा।

इस कैमरे से देखने पर आपकी हथेलियों और अँगुलियों के विभिन्न हिस्सों पर अलग-अलग अक्षर और संकेत दिखेंगे और आप अपने अँगूठे का संचालन इन अक्षरों को दबाने के लिए कर सकेंगे। द कोरिया टाइम्स में प्रकाशित एक रिपोर्ट के मुताबिक कैमरा आपके अँगूठे की हरकतों को उसी प्रकार से पढ़ेगा, मानो आप की-बोर्ड दबा रहे हों और आपका संदेश टाइप होता जाएगा। अगर इस तरह का कोई की-बोर्ड बना लिया जाता है तो आने वाले समय में लोगों को भारी भरकम फोन अपनी पॉकेट से निकालने की कम ही जरूरत पड़ेगी। रिपोर्ट के मुताबिक इस गैलेक्सी ग्लास का उपयोग फोन करने या रिसीव करने तथा संगीत सुनने के लिए भी किया जा सकता है।

अब इयरिंग आकार का कम्प्यूटर

बाजार में बहुत जल्द इयरिंग (बाली) के आकार जितना कम्प्यूटर आने वाला है, जो आपकी आँख या जीभ के इशारे पर काम करेगा। ब्लूटूथ, ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम (जीपीएस), कंपास, गाइरो-सेंसर, बैटरी, बैरोमीटर, स्पीकर और माइक्रोफोन जैसी आधुनिक सुविधाओं से लैस बेतार उपकरण के जरिये उपभोक्ता नए सॉफ्टवेयर भी डाउनलोड कर पाएँगे।

जापान की हिरोशिमा यूनिवर्सिटी के इंजीनियर कानुहिरु तनिगुची ने कहा, “इस उपकरण को फिलहाल इयरक्लिप टाइप वियरेबल पीसी” नाम दिया गया है। इसमें एक माइक्रोचिप के साथ डाटा स्टोरेज की सुविधा भी होगी।

इसे किसी स्मार्ट फोन, आईफॉन या दूसरे इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के साथ जोड़ा जा सकेगा। हिरोशिमा सिटी यूनिवर्सिटी द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के मुताबिक, उपभोक्ता अपने चेहरे के भाव और गतिविधियों जैसे भींचे चढ़ाना, नाक हिलाना या दाँत दबाना जैसे इशारों से इसे संचालित कर सकेंगे। यह उपकरण कान के अंदर छोटी से छोटी गतिविधि से उत्पन्न संवेदना को ग्रहण कर सकता है।

अँधेरे में भी देखेगा आपका स्मार्टफोन

स्मार्टफोन निर्माता कंपनी ने मोबाइल के साथ इस्तेमाल की जा सकने योग्य एक ऐसा उपकरण उपलब्ध कराया है जिसकी मदद से अब फोन के उपयोगकर्ता अँधेरे में भी देख सकेंगे। दरअसल, यह ‘फिल्टर वन’ नाम के सहायक उपकरण के जरिए मुमकिन हो सका है।

इस उपकरण के जरिए फोन का कैमरा किसी व्यक्ति, पशु या किसी भी अन्य वस्तु की ओर करने के आप उस वस्तु से निकलने वाली उष्मा के जरिए उसे देख सकेंगे। इस उपकरण के जरिए आप अपने स्मार्टफोन की मदद से अँधेरे में अपने दोस्तों को खोजने, अँधेरे में झाड़ियों में छिपे जानवरों को देखने या अँधेरे में इलेक्ट्रिक शॉर्ट सर्किट का पता लगा सकेंगे।

इस उपकरण में अपनी बैटरी लगी होती है और इसे मोबाइल के पीछे लगाया जा सकता है। इतना ही नहीं, आप अँधेरे में खड़ी अपनी कार को भी इसकी मदद से आसानी से ढूँढ़ पाएँगे। इसके अलावा अग्निशमन अधिकारियों और सेना के जवानों के लिए भी यह उपकरण काफी उपयोगी साबित हो सकता है।

इंटरनेट बनता जा रहा है डॉक्टर

एक नए शोध में पाया गया है कि आज के समय में स्वास्थ्य समस्याओं के बारे में जानने और साझा करने के लिए ज्यादा से ज्यादा लोग इंटरनेट का इस्तेमाल कर रहे हैं। यह चलन पिछले दशक से तेजी से बढ़ा है। लोग ज्यादा से ज्यादा जानकारी इंटरनेट पर चाहते हैं वे अन्य रोगियों के विचार, अंतर्दृष्टि और व्यावहारिक सलाह भी चाहते हैं। इस अध्ययन में 2001 से 2013 के बीच लिए गए रोगियों के साक्षात्कारों का अध्ययन किया और देखा कि लोग इंटरनेट के बारे में किस तरह बात करते हैं, स्वास्थ्य के लिए इंटरनेट के प्रयोग के प्रति बदलते नजरिए को किस तरह स्वीकार कर रहे हैं। यूनिवर्सिटी ऑफ ऑक्सफोर्ड के स्यू जीब्लैंड ने बताया, “2013 तक वेब अधिकांश लोगों की बीमारी और स्वास्थ्य के अनुभवों का नियमित हिस्सा बन चुका था। इंटरनेट ने लोगों की समझ को बदला है, वे जानकारी प्राप्त कर उपचार पद्धति का चयन करते हैं, बीमारी का सामना करते हैं और अन्य लोगों से जुड़ते हैं। ऑनलाइन फिल्म, एनिमेशन, साउंड, तस्वीरें और व्यक्तिगत अनुभव स्वास्थ्य जानकारी को हर पृष्ठभूमि के लोगों के लिए सुगम बनाते हैं।”



सफर में सूटकेस पर नजर रखेगा एप

विमान में सफर के वक़्त आपको सामान की चिंता रहती है, तो ऐसे में अब घबराने की जरूरत नहीं होगी। एक कंपनी ने ऐसा लगेज बैग तैयार किया है, जिसे मोबाइल फोन से संचालित कर सकेंगे। लगेज बैग को आप मोबाइल एप के जरिए लॉक कर सकते हैं, लोकेशन और वजन का पता लगा सकते हैं। अगर कोई अन्य व्यक्ति उसे खोलने की कोशिश करेगा, तो एप के जरिए सूचना मिल जाएगी। इसमें लगे जीपीएस ट्रैकिंग सिस्टम और प्रॉक्सिमिटी सेंसर से यह पता चलता है कि बैग आपसे कितनी दूर रखा है। सूटकेस के लिए कंपनी ने प्री-बुकिंग शुरू की है, लेकिन डिलीवरी अगले साल की जाएगी।

हादसे रोकने के लिए इजरायल में अनोखा विज्ञापन

इजरायल के दूसरे प्रमुख शहर तेल अवीव के हाइवे पर युवाओं ने दुर्घटनाओं को रोकने के लिए अजीब प्रचार किया था। इसमें पुरानी कारों एक के ऊपर एक रखकर शराब की बोतल का आकार देकर यह संदेश दिया था कि लोगों को नशे में गाड़ी नहीं चलानी चाहिए। 10 लाख लोगों को दिखाने के लिए तीन महीने तक हाइवे पर सड़क किनारे पुरानी कारों की यह आकृति रखी रही। कई अंतर्राष्ट्रीय कंपनियों ने इसे पिछले 10 सालों में विज्ञापन का सबसे श्रेष्ठ आइडिया माना। कंपनियों ने यह कहा कि अगर सभी देशों में विज्ञापनों के साथ इस तरह के प्रयास किए जाएँ, तो सड़कों पर होने वाले हादसों का प्रतिशत काफी कम किया जा सकता है। तेल अवीव यूनिवर्सिटी के छात्रों ने यारोक एसोसिएशन की टीम के सहयोग से इस प्रचार के लिए 80 कारों का फ्रेम 15 टन अनुपयोगी लोहे के एंगलों के साथ जोड़कर 20 मीटर ऊँची आकृति बनाई थी।

भावनाओं पर नियंत्रण रखती है यह डिवाइस

न्यूरोसाइंस और टेक्नोलॉजी की मदद से एक कंपनी ने ऐसी डिवाइस बनाने में सफलता हासिल की है, जो भावनाओं पर नियंत्रण रखेगी। इसे संचालित करने के लिए कंपनी ने एक एप बनाया है, जिसके बटन दबाते ही भावनाओं को बदला भी जा सकेगा। सीधे तौर पर इसे किसी भी व्यक्ति का मूड बदलने वाली डिवाइस कहा जा सकता है। यानी अब यह संभव हो गया है कि इलेक्ट्रॉनिक मशीन पर भरोसा करके आप किसी भी वक़्त खुद का मूड बदल सकते हैं। डिवाइस को बड़े पैमाने पर एवं कम कीमत में

एक नजर इधर भी

सुरेश कुमावत

उपलब्ध के लिए कंपनी ने 78 करोड़ रुपए वित्तीय सहायता जुटाई है। कंपनी के सीईओ व सह-संस्थापक कहते हैं—यह ऐसी मशीन कहलाएगी, जिससे कोई भी व्यक्ति अपनी पसंद की चीजों को दिमाग में आसानी से ला सकेगा। इससे हमारे दिमाग के लिए ज्यादा प्रोडक्टिव लाइफ जीने की संभावनाएँ बढ़ जाएँगी। कंपनी ने कहा है कि अगर कोई अपनी भावनाओं को स्थिर रखना चाहता है, तो उसमें भी यह मददगार है। अगर कोई फैसला लिया जाना है, तो यह डिवाइस उसमें भी मदद करेगी।

दक्षिण कोरिया में बन रहा है दुनिया का सबसे बड़ा जहाज

दक्षिण कोरिया के बंदरगाह ओक्पो में डेवू शिप बिल्डिंग एंड मरीन इंजीनियरिंग के विशाल संयंत्रों में अब तक का सबसे बड़ा मालवाहक जहाज 'दि मेट्रज माएस्क ट्रिपल ई' बनाया जा रहा है। कोपेनहेगन के फोटो जर्नलिस्ट एलेस्टर फिलिप वाइपर ने जहाज की जो तस्वीरें ली हैं, वे आश्चर्यचकित करती हैं। 194 फीट चौड़ा और 1,312 फीट लंबा यह जहाज पनामा नहर से नहीं गुजर सकेगा। इसके प्रोपेलर का वजन 70 टन है।

बंदरगाह में जहाँ भी इस जहाज से संबंधित कार्य चल रहा था वहाँ पहुँचकर एलेस्टर ने भारी मशीनों के फोटोग्राफ लिए। उनके अनुसार डेवू शिपयार्ड दक्षिण कोरिया के तीन प्रमुख शिपयार्ड में प्रमुख है। यहाँ ट्रिपल-ई सीरीज के आठ अन्य जहाज बन रहे हैं। उनका निर्माण अलग-अलग समय पर पूरा होगा, लेकिन इस सीरीज का सबसे बड़ा जहाज अगले साल बनकर दुनिया के सामने होगा। ट्रिपल ई जब समुद्र में होगा, तब केवल 15 क्रू मेम्बर इसे चला रहे होंगे। उनके रहने के कमरों में छोटा सिनेमा और स्वीमिंग पूल भी होगा। इस जहाज को चलाने की जिम्मेदारी लार्स पीटर जेन्सन को सौंपी गई है। वे पिछले 42 साल से कंपनी के साथ जुड़े हैं और इससे पहले के चार बड़े जहाज चला चुके हैं।

अब ज्यादा ऊर्जा दे सकेंगे सोलर पैनल

दुनियाभर में सोलर प्लांट वैकल्पिक ऊर्जा का बड़ा महत्वपूर्ण स्रोत साबित हो रहे हैं। इसे ध्यान में रखते हुए यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया ने ऐसा 'नैनो-मटेरियल' तैयार किया है, जो सूरज की किरणों से ज्यादा ऊर्जा खींचने में सोलर पैनल की मदद करेगा। विशेषज्ञों का कहना है कि अगर मौजूदा पैनल के साथ नैनो-मटेरियल को जोड़ दिया जाए, तो वे बूस्टर का काम करेंगे और हमें ज्यादा ऊर्जा मिल सकेगी।

मौजूदा पैनल काँच से बनती हैं, जिनके पीछे काले रंग का मटेरियल होता है, जिससे वह किरणें कैप्चर करती हैं। उनका हर साल मेन्टेनेंस करना जरूरी होता है। नया मटेरियल विशेष पार्टिकल्स से बना है, जिसे पैनल पर स्प्रे करना होता है। इससे वह ज्यादा किरणें कैप्चर कर सकेंगी। इसमें सालों तक मेन्टेनेंस की भी जरूरत नहीं पड़ेगी।

एम्सटर्डम के रोड पर साइकिल चलाने से बनती है बिजली

नीदरलैंड्स के एम्सटर्डम में दुनिया की पहली सोलर साइकिल लेन शुरू हो गई है। प्राकृतिक स्रोतों से विद्युत उत्पादन का यह सबसे नायाब तरीका है। शहर के क्रोमोनी और वॉर्मरवीर क्षेत्रों को जोड़ने वाली इस लेन पर विशेष तकनीक वाली सोलर पैनल लगाई गई हैं, जो व्यक्ति साइकिल के पैडल चलाकर इस पर से गुजरेगा, उससे विद्युत उत्पादन होगा। वह कम से कम तीन घरों के लिए काफी रहेगी। सोलर साइकिल लेन का शुभारंभ करने वाले आर्थिक मामलों के मंत्री हेन केम्प कहते हैं—यह अभी शुरुआत है। इससे प्रेरित होकर ज्यादा से ज्यादा लोग साइकिल चलाने के प्रति जागरूक होंगे और अन्य देश भी वैकल्पिक ऊर्जा के स्रोत के रूप में यह तरीका अपनाएंगे। इसका निर्माण ऑर्गेनाइजेशन फॉर एप्लाइड साइंटिफिक रिसर्च ने किया है। 328 फीट लंबी लेन बनाने में 26 करोड़ रुपये खर्च किए गए। एर्जेसी ने कहा कि बड़े पैमाने पर इसे बनाकर लागत घटाई जा सकती है।

अमेरिकी कंपनी ने किया था प्रयोग—अमेरिकी कंपनी सोलर रोडवेज ने आयडहो के टंपती के यहाँ पार्किंग की जगह पर यह प्रयोग किया था। उनका वीडियो यूट्यूब पर इतना पॉपुलर हुआ था कि उन्हें 13 करोड़ रुपये मिले थे।

ओहियो में बनी पहली सोलर बैटरी

अमेरिका में ओहियो यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने सौर ऊर्जा का उपयोग बढ़ाने की दिशा में दुनिया में पहली सौर ऊर्जा चालित बैटरी बनाई है, जिसे अन्य जगहों पर ले जाना भी आसान है। इसके पहले सौर ऊर्जा से चलने वाले कई उपकरण बनाए गए हैं, लेकिन रिचार्जबल बैटरी पहली बार बनाई गई है। इसमें एक सोलर पैनल लगा है, जिससे ऊर्जा परिवर्तित होकर बैटरी तक पहुँचती है। अब यूनिवर्सिटी लाइसेंस लेने की तैयारी कर रही है, जिससे उद्योगों को बड़े पैमाने पर इस तरह की सोलर बैटरी पहुँचाई जाएगी। यूनिवर्सिटी में कैमिकल और बायोकेमिस्ट्री के प्रोफेसर विरिंग वु ने उम्मीद जताई है कि जल्दी रिन्यूएबल एनर्जी की लागत कम हो जाएगी। उन्होंने बताया कि कई जगहों पर अब तक सोलर पैनल का उपयोग किरणों को संग्रहित करने और घटिया बैटरी से उसे ऊर्जा के रूप में संग्रहित करने में किया जाता है। इसके लिए हमने दोनों फंक्शन इस डिवाइस में तैयार कर दिए हैं। किसी भी समय इसका उपयोग किया जा सकता है, जिससे सोलर एनर्जी की लागत में 25 प्रतिशत तक कमी आएगी।

चिकित्सा विज्ञान में नया करिश्मा पोलैंड के नाम

डेरेंक फिदीका (38) को लुटेरों ने चाकू से हमला करके घायल कर दिया था। जब डॉक्टरों ने बताया कि उन्हें लकवा हो गया है, तो उनके पैरों तले जमीन खिसक गई। हमले में उनकी स्पाइनल कॉर्ड क्षतिग्रस्त (डेमेज्ड) हो गई थी, जिससे पैरों की ऊर्जा खत्म हो गई थी। ब्रिटिश डॉ. पावेल तबाकोव की टीम ने पुराने शोधों में कारण का पता लगाया। उन्हें सेल ट्रांसप्लान्टेशन जर्नल में वह कारण मिल गया। डॉ. पावेल की टीम को क्षतिग्रस्त रीढ़ की हड्डी के अंदर दो सेगमेंट के बीच 'नर्व ब्रिज' बनाना था। इसके लिए उन्होंने डेरेंक के

एक ऑलफैक्ट्री बल्ब्स (सूँघने की समझ इससे होती है), ऑलफैक्ट्री सेल्स और नर्व फाइब्रोब्लास्ट्स को क्षतिग्रस्त हिस्से में ट्रांसप्लांट कर दी। इन सेल्स ने उस जगह पर नया रास्ता (ब्रिज) बनाया, जिससे पास की नर्व फाइबर्स रीजनरेट होन लगे। नए फाइबर्स के क्रियाशील होने से पैर काम करने लगे। डॉ. पावेल के लिए यह अद्भुत था। वे कहते हैं, रीढ़ की हड्डी का फिर से बन जाना और क्रियाशील होना चौंकाने वाली बात है। चिकित्सा विज्ञान में सालों तक यह संभव नहीं था। कुछ दिनों में डेरेंक सामान्य जिंदगी जीने लगे।

तेज रफ्तार के लिए कार में लगा दिया जेट इंजन

तेज रफ्तार कार चलाने के शौकीन कैलिफोर्निया के रॉन पैट्रिक (47) ने नया प्रयोग किया है। उन्होंने गैराज में 1500 एचपी का जेट इंजन बनाकर उसे अपनी बीटल कार में फिट कर दिया। इसके लिए उन्हें कार में परिवर्तन करना पड़ा। जेट इंजन में धुएँ के साथ 50 फीट तक लपटें भी निकलती हैं। पैट्रिक चाहते थे कि उनकी कार रॉकेट जैसी नजर आए। ऐसा हो भी गया है और अब उन्हें इस पर गर्व है। वे कहते हैं—मैंने छह साल में जेट इंजन बनाया और उस पर सवा करोड़ रुपये खर्च किए। वे इस कार को उस स्थान पर रखेंगे, जहाँ जेट इंजन वाले अन्य वाहन बनाए जा रहे हैं। वे अब यह तकनीक खोज रहे हैं कि किस तरह कार को उसके स्पीडोमीटर से ज्यादा रफ्तार दी जा सके। पैट्रिक ने कहा कि वे इसके विशेष शो करेंगे, प्रदर्शनी लगाएँगे जिससे लोग इस प्रयोग के बारे में जान सकें।

आरामदायक सफर के लिए जापान में पहली पसंद है यह टैक्सी

यदि कोई व्यक्ति को तेज रफ्तार सफर करना अच्छा नहीं लगता, या चुनिंदा जगहों पर वह धीमी गति चाहता है, तो टर्टल टैक्सी अच्छी है। जापान के योकोहामा शहर में ऐसे ही लोगों के लिए सानवा कोत्सो ग्रुप ने टर्टल टैक्सी शुरू की है, जो पसंद की जा रही है। काले रंग की इस टर्टल टैक्सी में टाइटल के साथ कछुआ भी प्रिंट है, जो इसे विशेष पहचान देता है। इस समूह के पास कुल 500 टैक्सी हैं, लेकिन उनमें से 10 को उन्होंने टर्टल टैक्सी का टाइटल दिया है। किसी भी यात्री को एक फोन कॉल पर यह सुविधा उपलब्ध है। इस टैक्सी के लिए कोत्सो ग्रुप ने ड्राइवरों को विशेष प्रशिक्षण दिया है। उन्हें विशेष रूप से ज्यादा उम्र वाले यात्रियों, गर्भवती महिलाओं, छोटे बच्चों की माँ और पर्यटकों का ख्याल रखने के लिए कहा गया है। एक महिला जिनका एक साल का बच्चा है, ने कहा कि उनके लिए इसमें चढ़ना और उतरना बेहद आरामदायक रहा। यह उस समय के लिए बिल्कुल परफैक्ट है, जब छोटे बच्चे सो रहे होते हैं। योकोहामा में इस टैक्सी की माँग बढ़ रही है। यह ध्यान में रखकर कोत्सो ग्रुप अगले वर्ष से सभी टैक्सियों को ऐसा बनाएगा और टोक्यो सहित अन्य शहरों तक सेवा का विस्तार करेगा। टैक्सी में बैठते ही यात्री युकुरी बटन दबा देता है, जिसका मतलब स्लो होता है। इसी के साथ मधुर धुन बजती है और बटन पर टर्टल उभरता है, जिससे ड्राइवर को संकेत मिलता है कि यात्री और धीमी गति चाहता है।



भविष्य का दर्शन

आशीष खण्डेलवाल

आने वाली दुनिया कैसी होगी? सबकी अपनी कल्पनाएँ और अपने अंदाजे हैं। विज्ञान दुनिया को नए तरीके से देख रहा है। फिल्मी दुनिया की अपनी फंतासियाँ हैं। बात हो रही है 2050 की। आज की कल्पनाएँ निश्चित तौर पर आने वाले वक्त के घरातल पर होंगी। संभव है दिमाग को कम्प्यूटर की फाइल के तौर पर सुरक्षित किया जाए। यह भी मुमकिन है कि आदमी गायब होना सीख ले। बहुत कुछ संभव है। इस नई दुनिया की संभावनाओं पर एक नजर...

यह है फ्यूचरोलॉजी

ऐसा नहीं है कि भविष्य दर्शन केवल फिल्मकारों की कल्पना तक सीमित है। वैज्ञानिक भी इसमें खासी रुचि ले रहे हैं। तथ्यों और पूर्वानुमानों के सामंजस्य को विज्ञान की कसौटी पर परखकर भविष्य की कल्पना एक नए विज्ञान की राह खोल रही है। यह विज्ञान है फ्यूचरोलॉजी यानी भविष्य विज्ञान। क्या भविष्य में चाँद पर बस्ती बसेगी? क्या हमारा परिचय धरती से परे किसी दूसरी दुनिया के प्राणियों से होगा?

क्या इंसान मौत पर विजय पाने में कामयाब हो जाएगा? नामुमकिन सी लगने वाली ऐसी कल्पनाओं का वैज्ञानिक अध्ययन भी फ्यूचरोलॉजी के तहत किया जा रहा है। जिस तरह से मौसम-विज्ञानी भविष्य के मौसम का, अर्थशास्त्री भविष्य की विकास दर और इतिहासकार अतीत की घटनाओं का तार्किक आकलन पेश करते हैं, उसी तरह से भविष्यविद् (फ्यूचरिस्ट्स) भविष्य में होने वाले बदलाव की तस्वीर उकेरते हैं।

भविष्यविदों की साल 2050 पर खास नजर है। कारण यह है कि 2050 ऐसा वक्त है, जिसे वर्तमान पीढ़ी के अधिकतर लोग देख सकेंगे और तब तक तकनीकी रूप से उन्नत 21वीं सदी का आधा वक्त गुजर चुका होगा। अमेरिका और ब्रिटेन के कुछ

विश्वविद्यालयों में फ्यूचरोलॉजी सेंटर स्थापित हो चुके हैं और 2050 की दुनिया की तस्वीर का अनुमान लगाने के प्रयास चल रहे हैं। भविष्यविद् हरसंभव तरीके से भविष्य का सटीक आकलन करने में जुटे हैं और अपने अनुमानों को दुनिया के सामने रख रहे हैं।

दिमाग होगा डाउनलोड

वैज्ञानिकों की मानें तो 2050 तक इंसान मौत को चुनौती देने में कामयाब हो सकता है। शारीरिक रूप से भले ही यह संभव न हो सके, लेकिन दिमागी रूप से ऐसा मुमकिन है। ऐसी तकनीक विकसित हो सकती है, जिसके जरिए इंसान के दिमाग को कम्प्यूटर से जोड़कर उसे हार्ड डिस्क में सेव किया जा सकता संभव होगा। इसके बाद दिमाग का डाटा कम्प्यूटर में एक फाइल के रूप में होगा और उसे कभी भी इस्तेमाल किया जा सकेगा। अभी तक इंसान के संवेदी तंत्र को कम्प्यूटर से जोड़कर एनिमेशन तैयार करने के प्रयोग हो चुके हैं। ऐसे में इस सोच को कपोल कल्पना मानकर ठुकराया नहीं जा सकता। इसके अलावा 2050 में सुपरकम्प्यूटर आज के मुकाबले में एक हजार गुना ज्यादा शक्तिशाली होंगे। साथ ही इनके आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के स्तर में भी उल्लेखनीय बढ़ोतरी होगी। जाहिर है तकनीकी तंत्र की मजबूती से इंसानी जिंदगी की रफ्तार भी बढ़ जाएगी।

नाए लुक में टेलीविजन

चार दशक बाद वर्तमान टेलीविजन पूरी तरह से गायब हो जाएंगे। इनकी जगह लेगा इंटरैक्टिव होलोग्राम टीवी, जिस पर दर्शक मनचाहे समय पर कोई भी कार्यक्रम अपनी सुविधा से देख सकेंगे। दर्शक त्रिआयामी (थ्री-डी) तस्वीरों के साथ सुगंध का मजा भी ले सकेंगे। वर्तमान प्रसारण व्यवस्था बदलेगी और कार्यक्रम के प्रसारण के बजाय दर्शक को सूचना दी जाएगी कि अगले कार्यक्रम प्रसारण के लिए उपलब्ध है। दर्शक अपनी सुविधा से चैनल डायरेक्ट्री में जाकर कार्यक्रम देख सकेंगे। फिलहाल इंटरनेट पर कार्यक्रम इसी तरह उपलब्ध रहते हैं और दर्शक जब चाहे उन्हें देख सकता है। कुछ खास सिनेमाघरों में फिल्म के प्रदर्शन के साथ खुशबू बिखरने के प्रयोग हो चुके हैं। इनके अलावा आईपीटीवी (इंटरनेट प्रोटोकॉल टीवी) भी हर घर में होंगे, जो टेलीफोन, इंटरनेट और केबल टेलीविजन जैसी सभी जरूरतों को वायरलेस तरीके से पूरा करेंगे। तो टेलीविजन को अपना सबसे प्यारा दोस्त बनाने के लिए तैयार रहिए।

एलियंस हमारे दोस्त

फिलहाल दूसरे ग्रह पर जीवन के संकेत ढूँढने में लगे वैज्ञानिक इस कल्पना को नकार नहीं सकते कि किसी अन्य ग्रह पर धरती से विकसित सभ्यता का अस्तित्व हो सकता है। कई बार वैज्ञानिकों की ओर से उड़न तश्तारियाँ देखे जाने के दावे किए जाते हैं, लेकिन अभी तक प्रामाणिक रूप से किसी और ग्रह पर जीवन की पुष्टि नहीं हुई है। भविष्यवक्ताओं के मुताबिक साल 2050 तक दूसरे किसी ग्रह पर जीवन का पता लग सकता है और उस ग्रह के प्राणियों यानी एलियंस के साथ इंसान का संपर्क भी स्थापित हो सकता है। फिलहाल दुनिया में कई एजेंसियाँ कथित यूएफओ (अनआइडेंटिफाई फ्लाईंग ऑब्जेक्ट) संकेतों के विश्लेषण में जुटी है। इसी तरह की सेटी नामक एक परियोजना में हजारों कम्प्यूटरों की मदद से संकेतों का विश्लेषण किया जा रहा है। मतलब हम चार दशक में किसी नई प्रजाति के दोस्तों का स्वागत करने के लिए तैयार रह सकते हैं।

उड़न कार है ना

आप मानकर चलिए कि 2050 तक निजी उड़न कारें बहुतायत में होंगी और आवागमन के लिए वायुमार्ग का सबसे ज्यादा प्रयोग होगा। उड़न कारों के आंशिक प्रयोग फिलहाल सफल रहे हैं और उम्मीद है कि अगले दशक तक उड़न कारों का प्रयोग शुरू हो जाएगा। ये कारें टू-सीटर और फोर-सीटर होंगी और उन्हें उतारने के लिए किसी खास हवाई पट्टी की जरूरत नहीं होगी। सड़कों पर दुर्घटना की आशंका नगण्य हो जाएगी, क्योंकि सभी वाहन कम्प्यूटर संचालित होंगे। उनके सेंसर दूसरे वाहन की मौजूदगी या किसी अन्य बाधा को समय रहते भाँप लेंगे और वाहन को रोक देंगे। आवागमन के दौरान रफ्तार में इजाफा होगा। आज मिंगलेव ट्रेन 500 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार पकड़ चुकी है और उम्मीद है कि 2050 तक यह रफ्तार 1000 किलोमीटर प्रति घंटे तक पहुँच सकती है।

भूल जाएंगे पेट्रोल

हरित मत कीजिए, हो सकता है साल 2050 तक वर्तमान पेट्रोलियम ईंधन का प्रयोग बंद हो जाए और इसका स्थान हाइड्रोजन

या कोई दूसरा वैकल्पिक ईंधन ले ले। फिलहाल हाइड्रोजन चलित कार का प्रयोग सफल रहा है और इसे भविष्य के ईंधन के रूप में देखा जा रहा है। इसके अलावा कुछ अन्य रासायनिक तत्वों को भी ईंधन के रूप में विकसित करने के प्रयास चल रहे हैं। असीमित ईंधन के रूप में वायु एवं सौर ऊर्जा को भी परखा जा रहा है। कुछ भी हो, चार दशक बाद का समय पर्यावरणप्रेमियों के लिए जश्न का समय होगा, क्योंकि उन्हें पेट्रोलियम गुबार से पर्यावरण को नुकसान पहुँचने का डर नहीं होगा। साथ ही आम जनता को भी सस्ता और स्वच्छ ईंधन मुहैया हो सकेगा।

आबादी में इजाफा

सहज जीवनशैली और चिकित्सा के निरंतर विकास के कारण मृत्युदर कम होगी और जनसंख्या बढ़ेगी। औसत उम्र 65 साल से 80 साल तक पहुँच जाएगी। सबसे ज्यादा संकट जापान जैसे देशों के लिए होगा, जहाँ वर्तमान औसत उम्र दुनिया में सर्वाधिक है। तकनीकी विकास के चलते चिकित्सा सेवाएँ बेहतर होंगी और आज की कई बीमारियों का नामो-निशान तक नहीं रहेगा। सभी बीमारियों की रोकथाम के लिए एक ही टीका पर्याप्त होगा। कृत्रिम खून का प्रयोग होने लगेगा और कोई भी मरीज खून की कमी के कारण जान नहीं गँवाएगा। एड्स जैसे असाध्य रोगों का इलाज संभव हो सकता है, लेकिन नई तरह की बीमारियों के प्रकट होने की आशंका को भी नजरानदाज नहीं किया जा सकता।

रोबोट्स का बोलबाला

माना जा रहा है कि घरों में नौकर 2050 तक गायब हो चुके होंगे। उनकी जगह लेंगे रोबोट्स। फिलहाल होंडा कंपनी का असीमो नामक रोबोट समझदारी के साथ कई काम निपटाने में माहिर है। घर साफ करने से लेकर कपड़े सुखाने तक का काम यह रोबोट कर सकता है। भविष्य में रोबोट तकनीक में काफी सुधार होगा और ये वहन करने लायक कीमत पर जनता को मुहैया होंगे। मशीनों को कुछ स्तर तक संवेदनशील बनाने के प्रयास भी चल रहे हैं और भावनात्मक दोस्तनुमा रोबोट बनाने में कामयाबी मिल चुकी है। चार दशक बाद अधिकतर दुकानें मशीनों से ही संचालित होंगी। बिल्कुल उसी तरह, जैसा आज चाय या कॉफी वेंडिंग मशीन का संचालन होता है। मानवीय श्रम लगभग गायब हो चुका होगा और वर्तमान श्रमिक रोबोट संचालक के रूप में नजर आएँगे। फिर तो इंसानी ओलंपिक के साथ ही रोबोट ओलंपिक का भी आयोजन होगा।

हाइटेक आशियाने

मकानों की ऊँचाई 2050 तक लगातार बढ़ेगी, लेकिन भविष्य में बनने वाली इमारतें आज के मुकाबले सुरक्षित होंगी। बड़े शहरों में सौ-मंजिला इमारतें आम होंगी। ऊँची इमारतों का संचालन कम्प्यूटराइज्ड होगा। मकान में फाइबर, स्टील और लकड़ी का इस्तेमाल आज के मुकाबले में ज्यादा होगा। भूकंप संभावित क्षेत्र में निर्माण के विशेष एहतियात बरतने का काम शुरू हो चुका है और चार दशक में इमारतें सुरक्षा मानकों पर पूरी तरह खरी उतरेंगी। हरियाली और सिकुड़ेगी और उनकी जगह कंकरीट के जंगल लेंगे। आज की कुछ दुर्लभ वन्य प्रजातियाँ 2050 में केवल तस्वीरों तक सिमट सकती हैं। बढ़ती आबादी की जरूरतों को पूरा करने के लिए आवासीय भूमि में बढ़ोतरी होगी।



दुनिया को बदलने का दम रखती किशोर वैज्ञानिक प्रतिभाएँ

संजीव कोठारी

कहते हैं कि पूत के पाँव पालने में ही दिख जाते हैं, प्रतिभा के लक्षण बचपन में ही दिखने लगते हैं और अनुमान हो जाता है कि अमुक बच्चे में कुछ अलग कर दिखाने की क्षमता है। कुछ ऐसा जो शायद दुनिया में उसकी प्रतिभा का लोहा मानने पर मजबूर कर दें। निःसंदेह दुनिया में ऐसी प्रतिभाओं की कमी नहीं है, जरूरत होती है उन्हें पहचानने की। सूचना प्रौद्योगिकी की पल-पल बदलती दुनिया पर आज के किशोर पैनी नजर रखते हैं। ऐसे ही किशोर प्रतिभाओं के बारे में आप भी जानिये।

लुई फर्नेन्डो क्रूज

इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग के इस 19 वर्षीय छात्र ने एक ऐसे अजीबोगरीब आईबोर्ड सॉफ्टवेयर का आविष्कार किया जो शारीरिक रूप से विकलांग लोगों के लिए काफी मददगार साबित होगा क्योंकि यह आईबोर्ड सॉफ्टवेयर आँखों से नियंत्रित होगा। इस पर एक आईफोन से भी काम खर्च आया। लुई की प्रतिभा 14 वर्ष में ही दिखने लगी थी जब उन्होंने प्रोग्रामिंग और डिजिटल इलेक्ट्रॉनिक्स के बेसिक सीखना शुरू किया था। 16 वर्ष की उम्र तक पहुँचते ही उन्होंने होडुरास में पहला वीडियो गेम सिस्टम डेवलप कर लिया था। अब उन्होंने अपना फोकस बिजनेस से सोशल एन्टरप्रेन्योर पर कर लिया था। इसी प्रतिभा के बल पर उन्होंने 19 वर्ष की उम्र में ही आईबॉल के मूवमेंट को ट्रैक करने वाले डैशबोर्ड सॉफ्टवेयर का निर्माण कर डाला। इसका एक बड़ा लाभ यह है कि विकलांग लोग अपनी आईबॉल मूवमेंट से ही स्क्रीन पर शब्द रचना कर पाएँगे और साथ ही कम्प्यूटर डिवाइस भी चला पाएँगे। लेकिन लुई का लक्ष्य यहाँ आकर समाप्त नहीं होता बल्कि वह अपने इस डिवाइस को हर जरूरतमंद तक पहुँचाना चाहते हैं जिससे कि अक्षम लोग सरलता से कम्प्युनिकेशन कर सकें और अपनी भावनाओं को प्रकट कर सकें।

कोल्चिन दोए

सिएरा लियोन जैसे युद्धग्रस्त देश में कोल्चिन दोए ने अपनी इंजीनियरिंग प्रतिभा की स्वयं निखारा और अपने समाज के लोगों के जीवन को सुधारने में अपनी नैसर्गिक प्रतिभा का प्रयोग किया। 11 वर्ष की आयु में ही अपनी अंतःप्रेरणा से वह कूड़े-कचरे के अंबार से बाहर निकलकर इलेक्ट्रॉनिक कम्पोनेंट्स में रुचि लेने लगा जिन्हें वह सामाजिक आविष्कारों में उपयोग कर सके। 13 वर्ष की आयु में ही उसने बेकार पड़े सामान से स्काँच टेप से लिफटे टिन के कप में एक पूर्ण विकसित बैटरी बना डाली जिसे उसको लोगों पर पढ़ने वाले बैटरी के अतिमात्र को कम कर दिया। अपनी इसी सफलता से प्रेरित होकर कोल्चिन आगे बढ़ा और स्क्रीप एवं बेकार सामान से एक जेनेरेटर बना डाला। यूट्यूब वीडियो ने मात्र 15 वर्ष की उम्र में ही उसे विश्वप्रसिद्ध कर दिया और एमआईटी ने उसे अपने संस्थान में सबसे युवा विजिटिंग प्रैक्टिशनर के तौर पर आमंत्रित किया और कोल्चिन ने भरपूर उत्साह एवं गर्व से

एमआईटी, हार्वर्ड और अन्य विश्वविद्यालयों के छात्रों को लेक्चर दिये तथा ट्रेड में भी बतौर स्पीकर अपने विचार प्रकट किये। अद्वितीय प्रतिभा का धनी कोल्चिन केवल अपने तकनीकी योगदान के लिए ही विख्यात नहीं है अपितु उस पाइरेट रेडियो स्टेशन पर रिकॉर्ड घुमाने वाले ऑनएयर अवतार डीजे फोकस के लिये भी जाना जाता है जो उसने अपने दोस्तों के साथ मिलकर सिएरा लियोन में शुरू किया था।

एरी डायकावस्की

एरी के भीतर छिपा गणित मात्र चार वर्ष की उम्र में ही जटिल गणितीय सवालियों को सुलझाने लगा था और 18 वर्ष की उम्र में वह लाउडोन एकेडमी ऑफ साइंस में क्वांटमफिजिक्स पर अपने विचार व्यक्त कर रहा था। इतना ही नहीं, 18 वर्ष की आयु में ही 'फिजिक्स रिव्यू' में प्रकाशित उसके एक लेख ने क्वांटम कंप्यूटर्स के क्रिएशन एवं क्वांटम एन्टैगलमेंट में अब तक किये सभी अनुसंधानों के आधारों को ध्वस्त कर दिया। वस्तुतः वह एक ऐसी त्वरित डाटा ट्रांसफर प्रौद्योगिकी की रचना का इच्छुक है जो स्पीड और एक्युरेसी की समस्याओं को सुलझा सके। इसलिये उसने वह अपनी 'आर्कटांस' की स्थापना के लिए स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय छोड़ दिया। आज वह सटीक डाटा विजुअलाइजेशन प्रोग्राम बनाने में माइक्रोसॉफ्ट जैसी कंपनियों को अपनी सेवाएँ दे रहा है। निःसंदेह उसके नवप्रयोगों ने विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विस्तार को नया मोड़ दिया है।

नाथन हान

ब्रोस्टन लैटिन स्कूल के इस छात्र ने इंटेल द्वारा 2014 में आयोजित इंटरनेशनल साइंस एंड इंजीनियरिंग फेयर में अपनी काबिलियत का लोहा मनवाया। उसने बीआरसीए 1 नाम ट्यूमर निरोधक जीन में होने वाले विभिन्न प्रकार के बदलावों की विशेषताओं के परीक्षण हेतु बाजार में उपलब्ध साधारण डाटाबेसों से ही अपना सॉफ्टवेयर बना डाला। डाटा का उपयोग कर वह सॉफ्टवेयर कैंसर का कारण बनने वाले जीन और अन्य जीन्स में होने वाले बदलावों के आधार पर उनमें अंतर करना सिखाता है। अतिशयोक्ति न होगी कि नाथन ने बायोलाॅजी, सॉफ्टवेयर एवं स्टैटिस्टिकल एनालिसिस को मिलाकर वैज्ञानिकों के सामने कैंसर से लड़ने का एक नया मार्ग प्रशस्त किया है। नाथन अभी नवीं कक्षा के

छात्र सरीखा लगता है किंतु इस अल्पायु में ही वह दुनिया में अपनी प्रतिभा का सिक्का जमा चुका है और यह दिखा चुका है कि कल्पना शक्ति, दृढसंकल्प और सहयोग के बल पर किशोरवय भी अपने लैपटॉप से आश्चर्यजनक खोज कर सकता है।

इयोनट बडिस्टीन

रोमानियन हाई स्कूल के इस छात्र ने एक सेल्फ ड्राइविंग कार इजाद की है। वह अब तक 75,000 अमेरिकी डॉलर की स्कॉलरशिप सहित दुनियाभर में अनेकों पुरस्कार जीत चुका है। इसकी कार की खासियत है कि इसे बनाने में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस प्रोग्रामिंग का इस्तेमाल किया गया है जो गूगल द्वारा विकसित कार की तुलना में बहुत कम खर्च में बनी है।

क्योंकि जहाँ अन्य डिजायन्स की लागत 75,000 अमेरिकी डॉलर तक पहुँचती है वहीं यह केवल 4,000 डॉलर के भीतर ही बेहतर परिणाम देती है। इयोनट ने अपनी इस उपलब्धि में केवल पाँच लैपटॉप प्रयोग किये—चार रियल टाइम डाटा कलेक्शन के लिये तो एक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित डिजाइन मेंकिंग के लिये।

वह स्वयं ऐसा प्रोग्राम विकसित करने में सक्षम था जो लो-रेजोल्यूशन 3D-LIDAR (लाइट डिटेक्शन एंड रेंजिंग) से ट्रैफिक के आवागमन, सड़कों, पैदल मार्गों, बाधाओं एवं अन्य कारकों को सुरक्षित व संरक्षित तरीके से कार चलाने के लिये डाटा को ले सकता था। फिलहाल वह एक ऐसा क्रांतिकारी मोबाइल एप बनाने में लगा है जो नेत्रहीन लोगों को आसानी से चलने में मदद कर सके।

जैक एन्ड्राका

जैक एन्ड्राका की महान उपलब्धि है कि उसने केवल 15 वर्ष की अल्पायु में ही घातक पैन्क्रिएटिक कैंसर को ज्ञात करने में सफलता हासिल की। उसने टेस्ट का एक ऐसा तरीका खोजा जो 90 प्रतिशत तक सही तरह से पैन्क्रिएटिक कैंसर की पहचान करता है और जो भी नाममात्र के खर्च पर।

उसने रोगी के खून में मेसोथिलीन (एक कैंसर लक्षण) को ज्ञात करने के लिए पेपर सैंसर का सहारा लिया, और यह उपलब्धि मात्र 3 सेंट में हासिल की। जैक ने 2011 में आयोजित इटैल्स इंटरनेशनल साइंस एंड इंजीनियरिंग फेयर में पहला स्थान पाया। अब वह कॉलेज की पढ़ाई के लिये पैसा इकट्ठा कर रहा है जिसे कि ज्ञान के बल पर दुनिया में कुछ जरूरी बदलाव कर सके।

टेलर विल्सन

16 वर्षीय टेलर विल्सन ने 2010 में इटैल इंटरनेशनल साइंस एंड इंजीनियरिंग फेयर में अपने प्रोजेक्ट के लिये पुरस्कार जीता था जिसका शीर्षक था “फिशियन विजन : द डिटेक्शन ऑफ प्रॉप्ट एंड डिलेट इन्टयूस्ड फिशियन गामा, रेडिएशन एंड द एप्लिकेशन टू द डिटेक्शन ऑफ प्रोलिफेरिटिव न्यूक्लियर मैटिरियल्स” जिसे आम बोलचाल में रेडिएशन डिटेक्टर कह सकते हैं।

उसकी प्रतिभा से प्रभावित होकर यूएस डिपार्टमेंट ऑफ होमलैंड सिक्योरिटी एंड द यू एस डिपार्टमेंट ऑफ एनर्जी ने सीमा सुरक्षा एवं प्रति-आतंकवादी खतरे के लिये कम कीमत वाले चेरनोकोव रेडिएशन डिटेक्टर बनाने के लिए पैसा दिया और विल्सन 18 वर्ष की आयु में ही एक बोनाफाइड न्यूक्लियर भौतिकविद

बनकर काम करने लगा। उसकी प्राथमिकता बेकार तेल से कम कीमत वाले न्यूक्लियर रिएक्टर बनाने की है।

निक डी एलाइसियो

याहू के इस सबसे युवा कर्मचारी ने 17 वर्ष की आयु में ही लाखों रुपये कमा लिये हैं। याहू की कार्यशीली प्रोग्रामिंग पर टिकी है और इसी को आधार बनाकर निक ने सम्मली नामक एक अद्भुत एप बनाकर याहू को बेचा तो उसे बदले में 30 मिलियन डॉलर मिले।

फिर निक ने एल्गोरिथम का प्रयोग कर एक न्यूज रीडिंग बना डाला जो यूजर्स को उनके मोबाइल डिवाइस पर लंबे स्टोरीज का सरलता और फुर्ती से पढ़ने में मदद करेगा। इस एप को खरीदने के बाद याहू ने उसे कंपनी में नौकरी का प्रस्ताव भी दिया था। किंतु निक फिलहाल पार्ट टाइम काम कर अपनी पढ़ाई पूरी कर रहा है। वह अपने पैसों को नए विचारों व शोध में लगाने को प्रतिबद्ध है किंतु उसका मकसद आक्सफोर्ड से दर्शनशास्त्र में डिग्री पाना भी है जिसके लिए वह प्रयासरत है।

चिमन प्रकाश रेड्डी

कभी-कभी दोबारा आविष्कार करना भी जीनियस होने की बड़ी पहचान है और यही बात चिमन पर बिल्कुल सटीक बैठती है। हैदराबाद के इस 16 वर्षीय किशोर ने हालाँकि कोई औपचारिक शिक्षा हासिल नहीं की है किंतु शतरंज और इलेक्ट्रॉनिक्स में उसका कमाल देखते ही बनता है। वह दुनिया में पीसी टैबलेट बनाने वाला सबसे युवा आविष्कारक है।

उसने एवीई-7 इंच का जिम टैबलेट का आविष्कार किया उसने 2011 में मोबाइल सेवा की दिग्गज कंपनी रिलायंस कम्युनिकेशन का ध्यान आकर्षित किया। चिमन की ख्याति भारत की सीमा को पारकर यूके तक पहुँची और उसने अपने नव आविष्कारों को वहाँ की कंपनी सारेड्डी टेक्नोलॉजिज के साथ बिजनेस वेंचर के द्वारा जोड़ दिया जहाँ चीन में बने कंपोनेंट्स को असेम्बल किया जाता है। आज वह एक सफल एवं वैश्विक उद्यमी एवं नवप्रवर्तक बन चुका है।

एलेक्स गोडिन

मार्केटिंग गुरु सेठ गोडिन के 19 वर्षीय पुत्र स्टोक्स ने हाई स्कूल में ही अपने करियर की एक महान उपलब्धि हासिल कर ली थी। मात्र 17 वर्ष की किशोरावस्था में ही उसे टेकस्टार प्रोग्राम में सबसे कम आयु की प्रतिभागी होने का गौरव हासिल हुआ और विश्व में सफलतापूर्वक टेक इंडस्ट्री आरंभ करने की उपलब्धि अपने नाम लिखी। उसने शुरुआत में ही 1 मिलियन यूएस डॉलर से अधिक की धनराशि जुटाई। कंपनी ने उद्योग बाजार में भी अपने कदम जमाए। डिस्पैच डॉट आईओ के मूल नाम से आरंभ की गई कंपनी ने क्रोम, ब्राउजर एक्सटेंशन के तीर पर काम शुरू किया था, ड्रापबॉक्स एवं गूगल डॉक्स जैसी विभिन्न क्लाउड सर्विसेज के बीच सेवाओं को कन्वर्ज करती थी। कालांतर में कंपनी ने एंटरप्राइज सर्विसेज में कदम रखा और धीरे-धीरे अपना स्टार्टअप बनाया। हालाँकि गोडिन पहले से ही डीजे बिजनेस चलाने, डाक्युमेंट्रीज बनाने, कोडिंग में शोध करने, इंटरनैशियल एवं कॉलेज शिक्षा की प्लानिंग आदि काम कर रहा था।



आविष्कार और आविष्कारक

आविष्कार/खोज	आविष्कारक/खोजकर्ता	देश	वर्ष
आर्कीमिडीज सिद्धान्त	आर्कीमिडीज	यूनान	287-212 ईसा पूर्व
बीजगणित	अल-ख्वारिज्मी	फारस	780-850
अर्गाण्ड लैम्प	अर्मी अर्गाण्ड	फ्रान्स	1750-1803
थर्मामीटर	गैलेलियो गैलिली	इटली	1593
खगोलीय दूरदर्शक	गैलेलियो गैलिली	इटली	1609
बैरोमीटर	इव्हंगेलिस्टा टोरिसेली	इटली	1643
पेण्डुलम घड़ी	क्रिश्चन हाइजेन्स	नीदरलैण्ड	1656
गुरुत्वाकर्षण का सिद्धान्त	सर आइजेक न्यूटन	इंग्लैण्ड	1665
प्रकाश का वेग	ओलाउस रोमर	डेनमार्क	1675
गति के नियम	सर आइजेक न्यूटन	इंग्लैण्ड	1687
मशीनगन	जेम्स पक्ले	इंग्लैण्ड	1718
एफ.एम. रेडियो	एड्विन एच आर्मस्ट्रांग	संयुक्त राज्य अमेरिका	
हाइड्रालिक ब्रेन	विलियम जार्ज आर्मस्ट्रांग	यू.के.	
पोर्टलैण्ड सिमेन्ट	जोसेफ आस्पदिन	इंग्लैण्ड	
विश्लेषी इंजन	चार्ल्स बाबेज	इंग्लैण्ड	
आवर्धक लेंस	रोजर बेकन	इंग्लैण्ड	
बैकेलाइट	लिओ बेकलैण्ड	संयुक्त राज्य अमेरिका	बेल्जियम
बाइफोकल लेंस	बेजाभिन फ्रैंकलिन	संयुक्त राज्य अमेरिका	1760
पैराशूट	लुइस एस. लेनोर्मांड	फ्रांस	1783
लोकोमोटिव	रिचार्ड ट्रेव्हिथिक	इंग्लैण्ड	1804
साइकल	कार्ल डी. वॉन सीरब्रोन	जर्मनी	1816
इलेक्ट्रिक मोटर	माइकल फैराडे	इंग्लैण्ड	1822
माइक्रोफोन	चार्ल्स व्हीटस्टोन	इंग्लैण्ड	1827
ओम का नियम	जॉर्ज एस. ओम	जर्मनी	1827
एसी डायनेमो	माइकल फैराडे	इंग्लैण्ड	1832
तार (टेलीग्राफ)	सेमुएल एफ.बी. मोर्स	संयुक्त राज्य अमेरिका	1837
सिलाई मशीन	एलियास होवे	संयुक्त राज्य अमेरिका	1846
सेफ्टी फिन	वाल्टर हण्ट	संयुक्त राज्य अमेरिका	1849
एलिबेटर	एलिशा जी. ओटिस	संयुक्त राज्य अमेरिका	1852

प्लास्टिक	अलैकजेण्डर पाक्स	इंग्लैण्ड	1855
बारूद (डाइनामाइट)	अल्फ्रेड नोबल	स्वीडन	1867
इलेक्ट्रिक लैम्प	ए.ई. बेक्वेरेल	फ्रांस	1867
टाइपराइटर	क्रिस्टोफर शोलेज और कार्लोस ग्लिडन	संयुक्त राज्य अमेरिका	1867
डीएनए	फ्रिडरिक मेशर	जर्मनी	1869
मोटरसाइकल	एडवर्ड बटलर	इंग्लैण्ड	1884
फाउण्टेन पेन	लेक्स ई. वाटरमैन	संयुक्त राज्य अमेरिका	1884
इलेक्ट्रिक ट्रांसफार्मर	विलियम स्टेनले	संयुक्त राज्य अमेरिका	1885
कोका-कोला	जॉन पेम्बर्टन	संयुक्त राज्य अमेरिका	1886
इलेक्ट्रोकार्डियोग्राफी	आगस्तुस वाल्टर	ब्रिटेन	1897
डायनेमो	निकोला टेस्ला	संयुक्त राज्य अमेरिका	1892
डीजल इंजन	रुडोल्फ डीजल	जर्मनी	1892
स्टोव	हडावे	संयुक्त राज्य अमेरिका	1896
इलेक्ट्रॉन	सर जोसेफ जे. थॉम्पसन	इंग्लैण्ड	1897
रेडियोधर्मिता (एक्स रे)	मैडम क्यूरी और पियरे क्यूरी	फ्रांस	1898
एस्पिरिन	डॉ. फेलिक्स होफमेन	जर्मनी	1899
टैप रिकॉर्डर	वालडेमर पौल्सेन	डेनमार्क	1899
क्वाण्टम सिद्धान्त	मैक्स प्लैंक	जर्मनी	1900
रेजर	किंग जिलेट	संयुक्त राज्य अमेरिका	1901
मनोविश्लेषण	सिगमण्ड फ्रायड	ऑस्ट्रिया	1904
धुलाई मशीन	एल्वा फिशर	संयुक्त राज्य अमेरिका	1906
$E=mc^2$	अल्बर्ट आइंस्टाइन	स्विट्जरलैण्ड	1907
एयरकण्डीशनिंग	विलिस कैरियर	संयुक्त राज्य अमेरिका	1911
अणु	अर्नेस्ट रदरफोर्ड	इंग्लैण्ड	1911
अभिकलित्र (कम्प्यूटर)	वानेवर बुश	संयुक्त राज्य अमेरिका	1928
कार रेडियो	विलियम लीर और एल्मर वैबरिंग	संयुक्त राज्य अमेरिका	1929
बॉल पाइण्ट पेन	लान्ग्लो ब्रिरो	अर्जेण्टीना	1944
माइक्रोवेव ओवन	पर्सि स्पेन्सर	संयुक्त राज्य अमेरिका	1947
एकीकृत सर्किट	जी. डब्ल्यू. ए. डमर	इंग्लैण्ड	1952
एलसीडी	होफमन-ला रोश	स्विट्जरलैण्ड	1970
कॉम्पैक्ट डिस्क (सीडी)	आरसीए	संयुक्त राज्य अमेरिका	1972
सापेक्षता का सिद्धान्त	अल्बर्ट आइंस्टाइन	स्विट्जरलैण्ड	1905-1953

संकलन : इन्टरनेट द्वारा

साइबर क्राइम से बचें

राजीव कपूर

इंटरनेट पर आपको अच्छा सा लोगो दिखाई दिया और आपने उसे तुरंत कॉपी कर उसका इस्तेमाल कर लिया या किसी डिजाइनर की सेवा ली जिसने झटपट इंटरनेट से किसी कंपनी का अच्छा-सा लोगो इस्तेमाल कर आपका विजिटिंग कार्ड, ब्रोशर और लेटरहेड तैयार कर दिया। ऐसा करके आपने न सिर्फ कॉपीराइट का उल्लंघन किया है बल्कि ऑनलाइन ट्रेडमार्क के उल्लंघन मामले में भी आपको दोषी ठहराया जा सकता है। ऐसे किसी भी लोगो या आइकन का प्रयोग अपने बिजनेस आदि के लिए न करें।

इंटरनेट का इस्तेमाल करने वाले करीब-करीब हर शख्स ने कोई न कोई साइबर क्राइम जरूर किया है। कानूनी नहीं तो नैतिक अपराध तो उसने किया ही है। इनमें से ज्यादातर को तो इसका अंदाजा तक नहीं होता। वे कहीं से भी कोई चित्र, लेख या विडियो कॉपी-पेस्ट करते समय जरा भी नहीं झिझकते। इंटरनेट पर ऐसे तमाम काम हैं, जो साइबर क्राइम के तहत आते हैं।

कॉपी-पेस्ट या सामग्री की चोरी

हर क्रिएटिव चीज बनाने वाले के पास एक खास अधिकार होता है जो उसे अपनी सामग्री को गैरकानूनी ढंग से नकल किए जाने के खिलाफ सुरक्षा देता है। इसे कॉपीराइट कहते हैं।

आपके लेख, कहानी, कविता, व्यंग्य, फोटो, संगीत की धुन, सॉफ्टवेयर, विडियो कार्टून, एनिमेशन, किताब, ई-बुक, वेबसाइट वगैरह पर आपको यह खास हक हासिल है। कोई भी शख्स आपकी इजाजत के बिना आपकी रचना की कॉपी नहीं कर सकता और न ही उसे दूसरों को दे सकता है। ऐसा करना कॉपीराइट कानून का उल्लंघन है और आप उसके खिलाफ अदालत जा सकते हैं।

कॉपीराइट लेने की एक कानूनी प्रक्रिया है, लेकिन अगर आप ऐसा नहीं भी करते, तो भी अपनी रचना पर आपका ही हक है।

इसी तरह अगर आप किसी का फोटो उसकी लिखित मंजूरी के बिना अपने फेसबुक प्रोफाइल पर पोस्ट करते हैं तो वह साइबर क्राइम है। गूगल इमेज या दूसरी इमेज होस्टिंग वेबसाइटों से अपनी पसंद का कोई फोटो लेकर उसे अपने ब्लॉग, सोशल नेटवर्किंग ठिकाने, वेबसाइट या पत्र-पत्रिका में इस्तेमाल करना भी उसी श्रेणी में आता है।

गूगल एक सर्च इंजन भर है, वह फ्री डाउनलोड साइट नहीं है। इसीलिए किसी भी पिकचर के साथ वह उस वेब पेज को भी दिखाता है, जहाँ से उसे ढूँढा गया है। ऐसा करके वह पिकचर चुराए जाने के मामले में किसी भी तरह की जिम्मेदारी से आजाद हो जाता है।

क्या करें

अगर आपको गूगल इमेज सर्च पर मौजूद कोई फोटो इस्तेमाल करनी है, तो उस वेब पेज के संचालक से इजाजत लेनी होगी।

कोई व्यक्ति अगर अपनी रचना को लेकर ज्यादा गंभीर है, तो आपको यह छोटी-सी चोरी भारी पड़ सकती है। जिस गूगल के जरिये आपने वह सामग्री ढूँढी है, उसी के जरिये आपकी चोरी भी पकड़ी जा सकती है।

दिलचस्प साभार

कुछ ब्लॉगों पर दिलचस्प बातें नजर आती हैं। ब्लॉगर्स द्वारा गूगल इमेजेज से फोटो का इस्तेमाल किया और बतौर कर्टसी नीचे साभार गूगल लिख दिया जाता है। जबकि गूगल पर दिखने वाले सर्च नतीजे, फोटो आदि पर गूगल का कोई मालिकाना हक नहीं है वे तो महज रेफॉर्स के तौर पर दिए गए हैं, जिससे आप सही ठिकाने तक पहुँच सकें।

अगर आपको आभार ही जताना है तो उस वेबसाइट का जताएँ, जहाँ से गूगल ने उसे ढूँढा है।

चाइल्ड पॉर्नोग्राफी

अगर आप जाने या अनजाने इंटरनेट के जरिए चाइल्ड पॉर्नोग्राफी (बच्चों के अश्लील चित्र, विडियो, लेख आदि) देखते हैं तो वह साइबर क्राइम है।

यदि आपने ऐसी कोई सामग्री को अपने दोस्त को फॉरवर्ड कर दी है तो आप साइबर क्राइम कर चुके हैं।

18 साल से कम उम्र वालों से संबंधित अश्लील सामग्री देखना, इंटरनेट से भेजना और सहेजना भी साइबर क्राइम है।

लोगो चोरी करना

इंटरनेट पर लोगो, आइकंस, प्रतीक चिन्हों, ट्रेडमार्क आदि की चोरी भी आम है। यहाँ पर हर तरह के लोगो मिल जाते हैं।

इंटरनेट पर आपको अच्छा सा लोगो दिखाई दिया और आपने उसे तुरंत कॉपी कर उसका इस्तेमाल कर लिया या किसी डिजाइनर की सेवा ली जिसने झटपट इंटरनेट से किसी कंपनी का अच्छा-सा लोगो इस्तेमाल कर आपका विजिटिंग कार्ड, ब्रोशर और लेटरहेड तैयार कर दिया। ऐसा करके आपने न सिर्फ कॉपीराइट का उल्लंघन किया है बल्कि ऑनलाइन ट्रेडमार्क के उल्लंघन मामले में भी आपको दोषी ठहराया जा सकता है।

ऐसे किसी भी लोगो या आइकन का प्रयोग अपने बिजनेस आदि के लिए न करें।

वाई-फाई का दुरुपयोग

आतंकी किसी बड़ी वारदात को अंजाम देने के लिए जो ईमेल भेजते हैं, वह आपके हमारे जैसे ही किसी आम इंटरनेट यूजर के वाई-फाई कनेक्शन का इस्तेमाल करके भेजते हैं। इस प्रकार की कई घटनाएँ घट चुकी हैं। अगर कोई अपराधी आपके इंटरनेट कनेक्शन का इस्तेमाल करते हुए साइबर क्राइम करता है तो पुलिस

उसे भले ही न ढूँढ़ पाए, लेकिन आप तक जरूर पहुँच जाएगी और नतीजे भी भुगतने होंगे आपको।

आप अगर वाई-फाई इंटरनेट कनेक्शन इस्तेमाल करते हैं तो उसे पासवर्ड प्रोटेक्ट करना और एनक्रिप्शन का इस्तेमाल करना न भूलें।

वायरस, स्पाईवेयर

यदि आपके कम्प्यूटर पर किसी वायरस या स्पाईवेयर का कब्जा हो गया है और वह ज़ोम्बी में तब्दील हो गया है तो समझिए, आप अपने कम्प्यूटर और डेटा की असुरक्षा के साथ-साथ साइबर क्राइम में भी फँस सकते हैं। मुमकिन है, आप किसी परोक्ष साइबर क्राइम में हिस्सेदार बन रहे हों।

कुछ वायरस और स्पाईवेयर न सिर्फ आपके कम्प्यूटर के डेटा और निजी सूचनाएँ चुराकर अपने संचालकों को भेजते हैं बल्कि आपके संपर्क में रहने वाले दूसरे लोगों तक अपनी प्रतियाँ पहुँचा देते हैं।

कभी इंटरनेट के जरिए तो कभी ईमेल के जरिए। जिन लोगों के कम्प्यूटर में आपके द्वारा वायरस या स्पाईवेयर पहुँचा और कोई बड़ा नुकसान हो गया, उनकी नज़र में दोषी कौन होगा? आप। ऐसे मामलों में आप अपनी कानूनी और नैतिक जिम्मेदारी से बच नहीं सकते।

कम्प्यूटर में अच्छा एंटीवायरस, एंटीस्पाईवेयर और फ़ायरवॉल जरूर लगवाएँ। ये सिर्फ आपकी साइबर सुरक्षा के लिहाज से ही जरूरी नहीं है बल्कि इसलिए भी है कि कहीं आप अनजाने में कोई साइबर अपराध न कर बैठें।

दूसरे का अकाउंट खोलना

कुछ लोग अपने दोस्तों और साथियों के ईमेल अकाउंट, फ़ेसबुक वगैरह का पासवर्ड ढूँढ़ने की कोशिश करते हैं और कभी-कभी सफल भी हो जाते हैं। हो सकता है, आप महज मौज-मस्ती या मज़ाक के लिए ऐसा कर रहे हों लेकिन अगर आप किसी का पासवर्ड हासिल करने के बाद उसके खाते में लॉग-इन करते हैं तो आप साइबर क्राइम कर रहे हैं।

ऐसा तब भी होता है, जब किसी ने भरोसा करके आपको अपना पासवर्ड बताया हो। यह खाता ईमेल, सोशल नेटवर्किंग, ब्लॉग, वेबसाइट, ऑनलाइन स्टोरेज सर्विस, ई-कॉमर्स साइट, इंटरनेट-बैंकिंग जैसा हो सकता है।

किसी की प्राइवैसी में संध लगाने पर आप डेटा प्रोटेक्शन कानून के साथ-साथ सूचना प्रौद्योगिकी कानून 2000 की धारा 72 के तहत दोषी करार दिए जा सकते हैं।

किसी का पासवर्ड चुराकर उसका अकाउंट खोलने की कोशिश न करें। अगर कोई साथी कहे कि मेरा ईमेल अकाउंट खोलकर देख लेना, मेरा पासवर्ड यह है, तो उससे माफ़ी माँग लेने में ही भलाई है।

सॉफ्टवेयर पायरेसी

देश में ज्यादातर कम्प्यूटर यूजर किसी न किसी सॉफ्टवेयर का पायरेटेड वर्जन इस्तेमाल कर रहे हैं। चाहे विंडोज ऑपरेटिंग सिस्टम

हो, ऑफिस सॉफ्टवेयर सूइट हो या फिर ग्राफिक्स, पेजमेकिंग के सॉफ्टवेयर।

अब सॉफ्टवेयरों के भीतर एडवॉंस किस्म के पायरेसी प्रोटेक्शन और मॉनिटरिंग सिस्टम आने लगे हैं और हो सकता है आपके बारे में भी कंपनियों को जानकारी हो।

ऐसे सॉफ्टवेयरों का इस्तेमाल करना साइबर क्राइम के तहत आता है। हमेशा ऑरिजनल सॉफ्टवेयर ही यूज करें।

गूगल पर फर्जी क्लिक

इंटरनेट पर विज्ञापनों के भुगतान की व्यवस्था भी कुछ अलग है। यह विज्ञापनों को क्लिक किए जाने की संख्या पर आधारित है। जैसे दस क्लिक यानी दो डॉलर या करीब 110 रुपए।

ऐसे में कुछ लोग अपने ब्लॉगों पर लगे विज्ञापनों को खुद ही क्लिक करते रहते हैं या फिर कुछ दूसरे लोगों के साथ गठजोड़ कर लेते हैं। उन्हें पता नहीं कि इंटरनेट पर ऐसे फर्जी क्लिक की निगरानी रखी जाती है।

इस तरह के क्लिक से बचें। यह एक बड़ा आर्थिक अपराध है और पता लगने पर आपके विज्ञापन तो बंद हो ही सकते हैं, भारी-भरकम जुर्माना या दूसरी सजा भी आपको हो सकती है।

बैंडविड की चोरी

कुछ शरारती तत्व अपनी वेबसाइट पर दूसरी जगह भारी-भरकम ग्राफिक फाइलें आदि डालने के लिए शॉर्टकट अपनाते हैं।

वे अपनी वेबसाइट पर फाइलों को सीधे नहीं डालते बल्कि ऑरिजनल वेबसाइट से ही उन्हें लिंक कर देते हैं। होता यह है कि विडियो या चित्र दिखता तो आपकी वेबसाइट पर है लेकिन असल में वह अपनी ऑरिजनल वेबसाइट पर ही लगा हुआ है, आपके वेब सर्वर पर नहीं है। ऐसे में आप दो तरह के साइबर क्राइम कर रहे हैं। पहला कॉपीराइट संबंधी और दूसरा बैंडविड की चोरी।

अन्य साइबर क्राइम

साइबर स्क्वैटिंग : किसी मशहूर ब्रैंड, कंपनी, संगठन, इंसान आदि के नाम से जुड़ा डोमेन नेम अनधिकृत रूप से अपने नाम से बुक करवा लेना।

ऑनलाइन मानहानि : अपने ब्लॉग, वेबसाइट, सोशल नेटवर्किंग ठिकाने पर किसी के बारे में अपमानजनक या अश्लील टिप्पणी करना।

कारोबारी डेटा : किसी ग्राहक द्वारा मुहैया कराए जाने वाले गोपनीय कारोबारी डेटा की कॉपी बनाकर अपने पास रखना।

वेबसाइट, डोमेन नेम पर कब्जा : भारत में कई वेब डिवेलपमेंट कंपनियाँ ऐसा करने की दोषी पाई गई हैं। अपने ग्राहकों के लिए डोमेन नेम बुक कराते, वेब होस्टिंग स्पेस लेते और इंटरनेट सेवा मुहैया कराते समय वे उनका सबसे खास यूजरनेम और पासवर्ड अपने कब्जे में रख लेते हैं और फिर उसी के दम पर ग्राहकों को तंग करते हैं।

डिजाइन की चोरी : किसी वेबसाइट, ब्लॉग, ई-बुक आदि की बिना अनुमति के कॉपी करना या किसी की टेम्पलेट को अनधिकृत रूप से इस्तेमाल कर लेना।



सावधान! बढ़ रही है हैकिंग

सुमित

पूरी दुनिया में हैकिंग बढ़ रही है। बड़ी कंपनियों से लेकर लोगों का व्यक्तिगत डाटा चुराया जा रहा है। आप चेक कर सकते हैं कि आपका डाटा सुरक्षित है या नहीं।

अगर आपका ईमेल एकाउंट है और आप सोशल मीडिया में सक्रिय हैं तो यह मानने की पर्याप्त वजह है कि किसी ने आपके बारे में सूचना चुराने की कोशिश की है। यह भी संभव है कि आपका यूजरनेम और पासवर्ड हैक्स को हासिल हो गया है और उन्होंने आपके डाटा बैंक में सेंध लगा ली है। दुनियाभर में लोगों के ईमेल एकाउंट हैक हो रहे हैं, सोशल मीडिया एकाउंट में सेंध लगाई जा रही है, जो लोग ऑनलाइन बैंकिंग करते हैं, उनके खातों में चोरी हो रही है और क्रेडिट कार्ड का फ्रॉड हो रहा है। आपने जैसा भी यूजरनेम और पासवर्ड रखा हो, आप खतरे की जद में हैं। लेकिन दूसरी ओर हैक्स का मुकाबला करने के लिए भी कंपनियों ने पूरा तंत्र खड़ा किया है, जो आपका बचाव कर रहे हैं। ऐसी साइट्स बन गई हैं, जिन पर हैक किए गए एकाउंट्स का डिटेल डाला गया है, जहाँ आप यह चेक कर सकते हैं कि हैक्स ने आपका डाटा चुराया है या आप अभी सुरक्षित हैं।

अगर आपको यकीन नहीं आ रहा है तो आप बड़ी कंपनियों से चुराए गए आँकड़ों पर नजर डालें, आपका भ्रम पूरी तरह दूर हो जाएगा। एडोब कंपनी के 3 करोड़ 80 लाख कस्टमर्स के एकाउंट के डिटेल चोरी हो गए। अगर आप एक्रोबेट रीडर या फोटोशॉप जैसे साफ्टवेयर इस्तेमाल करते हैं तो निश्चित रूप से आपके एकाउंट की डिटेल भी चोरी हुई है। इसी तरह एवरनोट के पाँच करोड़ एकाउंट होल्डर्स के डिटेल चोरी हुए हैं। एप्पल के 1 करोड़ 20 लाख और ट्विटर के ढाई लाख लोगों के एकाउंट की जानकारी चोरी हो गई। सबसे ज्यादा सोनी के करीब आठ करोड़ लोगों के एकाउंट की जानकारी चोरी हुई है। इस तरह की छोटी-बड़ी और सैकड़ों कंपनियाँ हैं, जिनके डाटा बेस में हैक्स ने सेंध लगाई और सारे एकाउंट्स के डिटेल चुरा लिए।

यूजरनेम, पासवर्ड, ईमेल एड्रेस, क्रेडिट कार्ड नंबर्स आदि सारे चोरी किए जा रहे हैं। ये चीजें हैक्स के ज्यादा निशाने पर हैं। अगर आप एक ही पासवर्ड कई एकाउंट्स के लिए इस्तेमाल करते हैं तो उसके सहारे आपके सारे एकाउंट्स की सुरक्षा एक बार में खतरे में आ गई। सुरक्षा के जानकारों का कहना है कि इन दिनों इस तरह की चोरियाँ बढ़ गई हैं। कंपनियाँ अपने उपभोक्ताओं का डाटा लेकर उन्हें ऑनलाइन स्टोर कर रही हैं। हर सेवा के लिए ईमेल एड्रेस जरूरी हो गया है। कोई भी उत्पाद खरीदते समय कंपनियाँ खरीदार से मोबाइल नंबर और ईमेल एड्रेस लेती हैं। उन्हें ऑनलाइन स्टोर किया जाता है। इसके अलावा सोशल मीडिया में इन दिनों सारे डिटेल शेयर करने का चलन है। ऑनलाइन बैंकिंग और लेन-देन आसान हो जाने के कारण ज्यादातर लोगों का वित्तीय डाटा भी ऑनलाइन उपलब्ध रहता है, जिससे आर्थिक फ्रॉड की गुंजाइश बढ़

गई है। हैक्स को इस तरह के डाटा चोरी से होने वाले फायदे का पता है। वे डाटा बेच कर भी फायदा कमा सकते हैं और अगर उन्होंने फ्रॉड करना चाहा तो वह भी आसानी से कर सकते हैं। सुरक्षा के लिहाज से जानकारों की राय है कि चूँकि इन दिनों हर आदमी एक साथ कई एकाउंट मैनेज करता है। इसलिए उसे यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हर एकाउंट के लिए एक ही यूजरनेम और पासवर्ड का इस्तेमाल न हो। दोनों अलग-अलग हों तो सबसे बेहतर है, नहीं तो कम से कम पासवर्ड अलग-अलग होना चाहिए। इसमें एक मुश्किल यह आती है कि ज्यादा पासवर्ड होने पर उन्हें याद रखना मुश्किल होता है। इसलिए जानकार पासवर्ड मैनेजर रखने की सलाह देते हैं। यह प्रोग्राम है, जिसकी मदद से आप अपने यूजरनेम और पासवर्ड को सुरक्षित रख सकते हैं।

बड़ी-बड़ी कंपनियों में हैक्स के सेंध लगाने के बाद कई सुरक्षा विशेषज्ञों ने वेबसाइट्स बनाए हैं, जिन पर उन साइट्स और ईमेल एड्रेसों की पूरी सूची डाली गई है, जिनसे आपको पता चल सकता है कि आपका मेल हैक हुआ था या नहीं या आपका डाटा सुरक्षित है या नहीं। एक तरफ हैक्स कंपनियों को शर्मिंदा करने के लिए चुराए गए आँकड़े ऑनलाइन पोस्ट करने लगे हैं तो दूसरी ओर कंपनियों ने उनके चुराए गए डाटा की जानकारी देकर लोगों को आगाह करने का अभियान शुरू किया है। मिसाल के तौर पर पेस्टबिन का ट्रेंडिंग सेक्शन है <http://pastebin.com/trends> इस पर हैक्स चुराए गए डाटा को पेस्ट कर देते हैं। अगर उनको कंपनियों को शर्मिंदा करना होता है तो वे उसे बताने के लिए चोरी किए गए आँकड़े एक निश्चित समय के लिए इस साइट पर डाल देते हैं। आपका डाटा चोरी हुआ है या नहीं यह देखने के लिए आप पेस्टबिन की साइट्स पर भी देख सकते हैं। हालाँकि जरूरी नहीं है कि वहाँ से आपको पक्की जानकारी मिले। पक्की जानकारी के लिए आपको दूसरी वेबसाइट्स की मदद लेनी होगी, जो कंपनियों ने तैयार की है। पिछले साल जब सोनी, एडोब, टेस्को जैसी बड़ी कंपनियों से डाटा चोरी हुई तो दुनिया की मशहूर सुरक्षा एजेंसी ट्रॉय हंट ने एक वेबसाइट डिजाइन की है। इस पर चोरी किया हुआ सारा डाटा डाला गया है। आप <https://haveibeenpwned.com> पर जाकर वहाँ बने एक सेक्शन में अपना ईमेल एड्रेस या अपने किसी भी एकाउंट का यूजरनेम डालेंगे तो आपको पता चल जाएगा कि आपका डाटा चोरी हुआ था या नहीं।

असल में जब कंपनियों के ऊपर साइबर हमले बढ़े तो उन्होंने अपनी ओर से उन कस्टमर्स की लिस्ट और उनकी डिटेल जारी कर दिए जो चोरी हुई हैं। ऐसा दर्जनों कंपनियों ने किया। ट्राय हंट ने इन सारी कंपनियों की ओर से जारी किए गए डाटा को इकट्ठा करके अपनी वेबसाइट पर डाला है। इसलिए अगर आपका एकाउंट हैक हुआ या आपका डाटा किसी जगह से चोरी होकर हैक्स के पास पहुँचा है तो आप इस वेबसाइट से इसकी पुष्टि कर सकते हैं।

जानें इंटरनेट के बारे में

राजेश टाँक

इंटरनेट से तात्पर्य एक ऐसे नेटवर्क से है जो दुनियाभर के लाखों-करोड़ों कम्प्यूटरों से जुड़ा है। कहने का मतलब यह है कि किसी नेटवर्क का कोई सिस्टम किसी अन्य नेटवर्क के सिस्टम से जुड़कर कम्युनिकेट कर सकता है। अर्थात् सूचनाओं का आदान-प्रदान कर सकता है। सूचनाओं के आदान-प्रदान के लिए जिस नियम का प्रयोग किया जाता है उसे ट्रांसमिशन कंट्रोल प्रोटोकॉल या इंटरनेट प्रोटोकॉल (टीसीपी/आईपी) कहा जाता है। इसकी सेवाओं में कुछ इस प्रकार हैं—

फाइल ट्रांसफर प्रोटोकॉल (एफटीपी)

फाइल ट्रांसफर प्रोटोकॉल का उपयोग एक कम्प्यूटर नेटवर्क से किसी भी दूसरे कम्प्यूटर नेटवर्क में फाइलों को ट्रांसफर करने के लिए किया जाता है।

इलेक्ट्रॉनिक मेल (ई-मेल)

इसको संक्षिप्त रूप से ईमेल कहा जाता है। इस माध्यम के द्वारा बड़ी से बड़ी सूचनाओं व संदेशों को इलेक्ट्रॉनिक प्रणाली द्वारा प्रकाश की गति से भेजा या प्राप्त किया जा सकता है। इसके द्वारा पत्र, प्रीटिंग या सिस्टम प्रोग्राम को दुनिया के किसी भी हिस्से में भेज सकते हैं।

गोफर

यह एक यूजर फ्रेंडली इंटरफेज है। जिसके जरिए यूजर, इंटरनेट पर प्रोग्राम व सूचनाओं का आदान-प्रदान किया जा सकता है। गोफर के द्वारा इंटरनेट की कई सेवाएँ आपस में जुड़ी होती हैं।

वर्ल्ड वाइड वेब (www)

इसके द्वारा यूजर अपने या अपनी संस्था आदि से संबंधित सूचनाएँ दुनिया में कभी भी भेज सकता है और अन्य यूजर उससे संबंधित जानकारियाँ भी प्राप्त कर सकता है।

टेलनेट

डाटा के हस्तांतरण के लिए टेलनेट का प्रयोग किया जाता है। इसके द्वारा यूजर को रिमोट कम्प्यूटर से जोड़ा जाता है। इसके बाद यूजर अपने डाटा का हस्तांतरण कर सकता है। टेलनेट पर कार्य करने के लिए यूजर नेम व पासवर्ड की जरूरत होती है।

यूजनेट

अनेक प्रकार की सूचनाओं को एकत्र करने के लिए इंटरनेट के नेटवर्क, यूजनेट का प्रयोग किया जाता है। इसके माध्यम से कोई भी यूजर विभिन्न समूहों से अपने लिए जरूरी सूचनाएँ एकत्र कर सकता है।

वेरोनिका

वेरोनिका प्रोटोकॉल गोफर के माध्यम से काम करता है। यूजर, गोफर व वेरोनिका का प्रयोग एक साथ करके किसी भी डाटा बेस पर आसानी से पहुँच सकता है। इनके प्रयोग से जरूरी सूचनाएँ तेजी से प्राप्त की जा सकती हैं।

आर्ची

फाइल ट्रांसफर प्रोटोकॉल में स्टोर फाइलों को खोजने के लिए आर्ची का प्रयोग किया जाता है।

प्रोटोकॉल

यह एक ऐसी मानक औपचारिक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से

कम्प्यूटर नेटवर्क में अंकीय संचार किया जाता है।

ब्राउजर

यह एक ऐसा सॉफ्टवेयर है जिसकी मदद से यूजर सूचनाओं को प्राप्त करने के लिए इंटरनेट में प्रवेश करता है।

वेब सर्वर

यह प्रोग्राम वेब ब्राउजर के द्वारा संसाधनों को प्राप्त करने के लिए यूजर द्वारा किए गए अनुरोध को पूरा करता है।

नेटवर्क

कई सिस्टमों को एक साथ जोड़कर बनाए गए संजाल को नेटवर्क कहते हैं। इसके द्वारा एक साथ कई जगहों पर सूचनाओं का आदान-प्रदान करना संभव है।

ऑन-लाइन

जब यूजर इंटरनेट पर जानकारियों व सेवाओं का अध्ययन करता है तब कहा जाता है यूजर ऑनलाइन है।

होमपेज

यह किसी भी साइट का शुरुआती प्रदर्शित पेज है जिसमें सूचनाएँ हाइपरलिंक द्वारा जोड़ी जाती हैं।

ऑफ लाइन

इसमें यूजर इंटरनेट में मौजूद सूचनाओं को अपने-अपने सिस्टम में संग्रहीत कर इंटरनेट संपर्क काट देता है।

हाइपर टेक्स्ट मार्कअप लैंग्वेज (एचटीएमएल)

इसका प्रयोग वेब पेज बनाने में किया जाता है। शुरुआत में इसका प्रयोग वेब पेज डिजाइन करने में किया जाता था।

टीसीपी/आईपी

इसका प्रयोग सूचनाओं के आदान-प्रदान में किया जाता है।

यूनिफार्म रिसोर्स लोकेटर (यूआरएल)

इसका प्रयोग वेब पर किसी विशेष सूचना को संचालित करने में किया जाता है।

वेब पेज

होम पेज पर बने हाइपर लिंक पर क्लिक करने पर जो पेज हमारे सामने प्रस्तुत होता है उसे वेब पेज कहते हैं।

वेबसाइट

वेब पेजों के समूहों को वेबसाइट कहते हैं। जिसमें ऑडियो, वीडियो, इमेजेस का समावेश होता है।

हाइपर लिंक

वेब पेज में मौजूद वे विशेष शब्द या चित्र जिस पर क्लिक करने पर उस शब्द या चित्र से संबंधित एक अलग वेब पेज पर आ जाती है। उसे वेब पेज का हाइपर लिंक कहते हैं।

डाउनलोड

इंटरनेट या किसी अन्य कम्प्यूटर से प्राप्त सूचनाओं को अपने कम्प्यूटर में एकत्रित करना डाउनलोड कहलाता है।

अपलोड

अपने कम्प्यूटर से किसी अन्य कम्प्यूटर में सूचनाएँ भेजना अपलोड कहलाता है।



टेक्नोलॉजी के अद्भुत करिश्मे

आसान कर देंगे रोज के काम

मल्टीटास्किंग होने का हुनर काफी कम लोगों में होता है, लेकिन जिनमें ये हुनर होता है वो अपने काम से पूरी दुनिया में जाने जाते हैं। जरूरी नहीं इसके लिए आपको वैज्ञानिक बनना पड़े, हो सकता है आपके अंदर भी एक साथ कई सारे काम करने का हुनर हो। ऐसे ही लोगों द्वारा किए गए कुछ छोटे-छोटे आविष्कार आज हमारी जिंदगी को आसान बना रहे हैं। अब इन आविष्कारों को ही देख लीजिए।

आपने किसी ऐसे जूते की कल्पना की है जिसे जब मनचाहा घप्पल भी बना लिया और जब चाहा जूते की तरह प्रयोग कर लिया या फिर कोल्डड्रिंक्स की बोतल को पानी जग की तरह कैसे प्रयोग कर सकते हैं। अगर नहीं तो दिए गए फोटो में कुछ ऐसे ही आविष्कारों पर डालिए एक नजर।



अल्टीमेट बॉटल कवर

यह बॉटल कवर बेकार हो चुकी बोतलों को फिर से प्रयोग करने का आसान तरीका है। इसकी मदद से आप किसी भी बोतल को जग की तरह प्रयोग कर सकते हैं।

बेल्ट

यह कोई साधारण बेल्ट नहीं है जो सिर्फ आपकी कमर कसने के काम आती है, बल्कि इससे आप अपनी बढ़ती कमर पर नजर बनाए रख सकते हैं।



मल्टी प्रोटेक्टर

मल्टी प्रोटेक्टर कवर आपको बाइक या फिर कोई भी टू-व्हीलर चलाने में न सिर्फ बरसात से बचाएगा बल्कि बर्फ और ओलों से भी आपके सर की सुरक्षा करेगा।



कीपर

कीपर की मदद से आपका पालतू कुत्ता बड़े आराम से गेट के बाहर आने-जाने वालों पर नजर रख सकता है। साथ ही बाहर से उसे कोई उलटी-सीधी चीज भी नहीं खिला सकता।



लैंडर

लैंडर या सीढ़ी हमारे घरेलू कामों के बाहर काफी प्रयोग की जाती है, लेकिन इस लेड की डिजाइन थोड़ी अलग है। इसमें एक्स्ट्रा मेटल का प्रयोग नहीं किया गया है जिससे ये भार में भी कम है।

टेनिस डोर

यह सिर्फ दरवाजा ही नहीं बल्कि एक टेबिल टेनिस टेबल भी है। बस इसे आपको थोड़ा फलटना होगा। यानी इसे आप इनडोर गेम की तरह प्रयोग कर सकते हैं।



वायरलेस माउस

देखने में यह आपको एक खिलौने की तरह लग रहा है लेकिन दरअसल यह एक वायरलेस माउस है। जिसे आप सफर के दौरान अपने लैपटॉप में आराम से कनेक्ट कर सकते हैं।

एयर कंडीशनिंग कैप

यह कोई आम टोपी नहीं बल्कि इसे आप एयर कंडीशनिंग कैप भी बोल सकते हैं। क्योंकि इसमें ऊपर की ओर सोलर पैनल और नीचे एक छोटा-सा पंखा लगा हुआ है तो धूप में आपके चेहरे में पसीना नहीं आने देगा।



प्रस्तुति : युवा नेटवर्क

आजादी के बाद विज्ञान

गरिमा माहेश्वरी

विज्ञान का हमारे देश से बहुत पुराना संबंध रहा है और इसकी पुष्टि हमारा इतिहास भी करता है। लेकिन इस तथ्य को भुलाकर हम सिर्फ यह कहते दिखाई देते हैं कि देश में विज्ञान का विकास अब होना शुरू हुआ है। वैदिक काल से ही भारत में विज्ञान ने अपना अस्तित्व बना लिया था। हालाँकि यह विकास उतनी तेजी से नहीं हुआ था, जितनी तेजी से आज हो रहा है।

भारत के तत्वज्ञानियों ने कई साल पहले ही परमाणुवाद (एटोमिक थ्योरी) को विकसित कर लिया था। इस थ्योरी में 'थ्योरी ऑफ रिलेटिविटी' भी शामिल थी। इस 'थ्योरी ऑफ रिलेटिविटी' को तब 'सपेक शवाद' के नाम से जाना जाता था। आपको यह जानकर भी आश्चर्य होगा कि स्टेनलेस स्टील का निर्माण भी भारत में हुआ था, यहाँ से इस स्टील का निर्यात भी किया जाता था, जिसके परिणामस्वरूप 'डोमेस्कस स्टील' का निर्माण हुआ। 'डोमेस्कस स्टील' को 1100 AD से लेकर 1700 AD तक तलवार बनाने के लिए उपयोग किया जाता था। भारत और विज्ञान का संबंध यहाँ समाप्त नहीं होता। देश के महान गणितज्ञ आर्य भट्ट ने 'आर्य भट्ट सिद्धांतों' को विकसित किया जिसमें गुरुत्वाकर्षण, ग्रहपथ के बारे में जानकारी दी गई है और पृथ्वी के आकार के बारे में बताया गया है। 7वीं सदी में ब्रह्मगुप्त ने गुरुत्वाकर्षण को आकर्षण की शक्ति के रूप में पहचानकर दुनिया को इससे अवगत कराया। इसके साथ ही डेसिमल अंक 'जीरो' के उपयोग के बारे में भी ब्रह्मगुप्त ने इसी सदी में बता दिया था।

फिर 12वीं सदी ने भी भारत में विज्ञान के विकास में योगदान दिया। इस सदी में 'भास्कर' ने अपने 'सिद्धांत शिरोमणि' के माध्यम से ग्रहों के लॉगिट्यूड, मून के क्रेसेंट आदि के बारे में कई रोचक तथ्य लोगों के सामने लाकर रख दिए। इसके बाद 13वीं और 14वीं सदी में भी 'केरल स्कूल ऑफ एस्ट्रोनॉमी एंड मैथेमेटिक्स' ने गणित और एस्ट्रोनॉमी के क्षेत्र में महत्वपूर्ण विकास किए। इन सबके अलावा भी भारत में विज्ञान के लंबे समय से होने के बारे में कई रोचक तथ्य हैं, जैसे—

- **एस्ट्रोनॉमी** : 2000 BC में ऋग्वेद में एस्ट्रोनॉमी के बारे में जिक्र है।
- **चिकित्सा** : 800 BC के आसपास सर्जरी के बारे में पहला सारांश पेश किया गया।
- **गणित** : लेब्निज और न्यूटन से करीब 300 साल पहले कैल्क्यूलस का विकास भारत में हो चुका था।

अगर भारत में विज्ञान के विकास के आज पर नजर डाली जाए तो हमें यह देखने को मिलेगा कि देश ने विज्ञान के बलबूते पर विश्व के मानचित्र पर अपनी पहचान बना ली है।

देश में विज्ञान के विकास को ध्यान में रखते हुए कई अनुसंधान केंद्र खोल दिए गए हैं जो अपने कार्यों को बखूबी निभा रहे हैं। ऐसे ही संस्थानों में से कुछ हैं—काउन्सिल ऑफ साइंटिफिक एंड इंडस्ट्रियल रिसर्च, इंडियन काउन्सिल ऑफ एग्रिकल्चर रिसर्च और इंडियन काउन्सिल ऑफ मेडिकल रिसर्च आदि। 1983 में भारत सरकार द्वारा तकनीकी विकास को प्रोत्साहन देने के लिए एक नीति बनाई गई जिसका मकसद तकनीकी विकास को बढ़ावा देना और उस तकनीक को सही तरीके से उपयोग में लाना था। इसके लिए भारत के विज्ञान एवं तकनीकी विभाग ने एक योजनापूर्ण कार्यक्रम बनाया।

यह योजना मई 1971 से लागू की गई, जिसका मुख्य मकसद तकनीक से संबंधित नए विचारों और विचारधारा वाले लोगों को बढ़ावा देना था। यह योजना नए तकनीकी प्रोग्रामों को आर्थिक सहायता प्रदान करने के लिए बनाई गई थी। वर्ष 1998 से लेकर 1999 के बीच इस योजना के माध्यम से 23 शोध कार्यक्रमों को आर्थिक सहायता के लिए मंजूरी दी गई।

आजादी के बाद भारत ने विज्ञान के क्षेत्र में जो उपलब्धियाँ हासिल कीं वे बेमिसाल हैं। विशेषकर तब जबकि अनगिनत समस्याएँ सामने खड़ी थीं। आगामी वर्षों में भारत प्रगति की नई इबारत लिखेगा इसमें कोई संदेह नहीं है। देश की आजादी के 50 साल पूरे होने पर सरकार ने एक 'स्वर्ण जयंती प्रोग्राम' शुरू किया, जिसके जरिए विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में अग्रसर वैज्ञानिकों को विज्ञान संबंधी शोध के लिए बेहतर सुविधा प्राप्त कराई जा सके। वर्ष 1998 से लेकर 1999 तक 11 लोगों को यह सुनहरा अवसर प्राप्त हुआ। इस विकास को गतिशील करने के लिए विकास मंडल की सितंबर 1996 में स्थापना की गई। यह बोर्ड तकनीकी प्रोजेक्ट्स को आर्थिक सहयोग प्रदान करने के लिए बनाया गया है।

देश में विज्ञान का विकास इसी तरह होता रहे और देश के नौजवान इस विकास में इसी तेजी से हिस्सा लेते रहें इसके लिए अनेक तकनीकी संस्थानों में एंटरप्रेन्योरशिप पार्क बनाए जा रहे हैं। देश के 13 विभिन्न संस्थानों में ऐसे पार्क बनाए गए हैं जो नए व्यावसायिक उद्यमियों के लिए सुविधाएँ उपलब्ध कराते हैं।

विज्ञान शब्दावली

शुभम जैन

हिन्दी	अंग्रेजी	परिभाषा
अणु	Molecule	यह द्रव्य का वह सबसे छोटा कण है जिसमें किसी द्रव्य को विभाजित करने के बावजूद भी उस द्रव्य की रासायनिक पहचान अपरिवर्तित रहती है। अर्थात् द्रव्य का सबसे छोटा कण जो रासायनिक अभिक्रिया में भाग लेता है।
अनुनाद	Resonance	जब किसी कम्पन्न करने वाले तार, लकड़ी या किसी अन्य युक्ति की स्वाभाविक आवृत्ति उससे लगे हुए वातावरण की आवृत्ति के बराबर हो जाती है, उस अवस्था को अनुनाद कहते हैं।
अभिक्रिया	Reaction	दो या अधिक रसायन मिलकर जब एक या अधिक भिन्न रसायन बनायें तो उसे रासायनिक अभिक्रिया कहते हैं।
अमिश्र	Immiscible	जो आपस में मिलकर एकसमान नहीं हो सकते।
अल्कली	Alkali	क्षारीय गुणों वाला पदार्थ
ऑक्सीकरण	Oxidize	मोटे तौर पर ऑक्सीजन के साथ किसी तत्व या यौगिक की अभिक्रिया को ऑक्सीकरण कहते हैं।
आयन	Ions	Atoms that carry an electric charge, either positive or negative. If an atom gains an electron it takes on a negative charge. If the atom loses an electron it takes on a positive charge.
आर्द्रता	Humidity	The amount of water vapor in the air.
आवेश	Charge	The state of an atom that has lost or gained an electron.
आसवन	Condensation	When a substance changes state from a gas to a liquid.
इमल्सन	Emulsion	Tiny droplets of one liquid floating in another liquid, such as oil droplets floating in water.
उत्प्लावन बल	Buoyancy	The ability to float, or in more technical terms.
ऊर्जा	Energy	The name given to the ability to do work.
इलेक्ट्रॉन	Electrons	A negatively charged subatomic particle. Electrons are found at varying distances from a atom's nucleus. They make up almost the entire volume of a atom but only account for a small part of the atom's mass. Compare to protons.
कार्बन-डाई-ऑक्साइड	Carbon Dioxide	A heavy colorless gas that does not support combustion, dissolves in water to form carbonic acid, is formed in animal respiration and in the decay or combustion of animal and vegetable matter, and is absorbed from the air by plants in photosynthesis.
कोण्डा प्रभाव	Coanda Effect	Described by Henri Coanda, a Romanian Scientist, in the 1930's. This effect describes the tendency of moving air or fluids to follow the nearby curved or inclined surface.
अम्ल	Acid	खट्टा स्वाद वाला, धातुओं तथा अन्य को गलाने में सक्षम, लाल लिटमस कागज को नीला कर देता है, क्षार का विलोम
क्षार	Base	A bitter tasting substance (And Often Slimy)
गुरुत्व	Gravity	The attractive central gravitational force exerted by a celestial body such as earth.

घनत्व	Density	The ratio of the mass of a body to its volume, usually expressed as its specific gravity.
घर्षण	Friction	The resistance that occurs when two objects rub together.
चालक	Conductor	A thing that transmits heat, electricity, light, sound or other form of energy.
चुम्बकत्व	Magnetism	The force that electric currents exert on other electric currents.
जड़त्व	Inertia	The tendency of a body to remain at rest or stay in motion unless acted upon by an external force.
टर्बाइन	Turbine	Pronounced TUR bihn or pronounced TUR byn, is a device with a rotor turned by a moving fluid, such as water, steam, gas, or wind. A turbine changes kinetic energy (Energy of movement) into mechanical energy (energy in the form of mechanical power).
ट्रान्सफार्मर	Transformer	A device that changes the voltage of electricity.
डेसीबेल	Decibel	A unit of measurement for sound, it measures the loudness or volume of the sound waves.
तड़ित	Lightening	A powerful flash of electricity between the negative electrical charges in clouds or between a cloud and the ground.
तत्व	Element	A basic chemical substance in which all the atoms are the same, and different from the atoms of any other substance.
दाब	Pressure	The application of a steady force upon another object.
दाबमापी	Barometer	A device used to measure the pressure of the atmosphere. The barometer unit of measure is called millibars.
द्रव्यमान/संहति	Mass	Often defined as the amount of matter in an object. Note that mass and weight are not the same thing. Weight is the force on an object due to the gravitational pull of a planet or other heavenly body. Mass on the other hand, remains constant, no matter where it is.
द्वितीयक बैटरी	Secondary Battery	A battery that can be recharged.
परमाणु	Atoms	किसी पदार्थ का सबसे छोटा कण जो बिना परिवर्तित हुए किसी रासायनिक क्रिया में भाग ले सकता है। परमाणु के केन्द्र में नाभिक होता है जिसमें प्रोटोन और न्यूट्रोन होते हैं, तथा इलेक्ट्रोन इस नाभिक के चारों ओर चक्कर लगाते हैं।
परावर्तन	Refraction	The bending of a wave path, as of light or sound, at the boundary between two different mediums.
परिपथ	Circuit	The path followed by an electric current. Electricity must flow in a circuit to do useful work.
प्राणवायु/ ऑक्सीजन	Oxygen	A colorless, odorless, tasteless gas that is the most plentiful element in the Earth's crust. It was discovered in 1772 by Swidish chemist Carl Wilhelm Scheele.
प्रेरण	Induction	The process by which an object having electrical or magnetic properties produces similar properties in a nearby object, usually without direct contact.
प्रोटोन	Protons	A positively charged subatomic particle. Protons, along with other subatomic particles called neutrons, make up the nucleus of a atom. The number of protons in an atom is called the atomic number of the element. Compare to electrons.

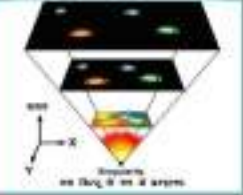






बर्नोली प्रभाव	Bernoulli Effect	Described by Swiss mathematician Daniel Bernoulli in 1738. Bernoulli's theorem (Sometimes called the Venturi effect) implies that a decrease in fluid pressure is associated with an increase in the fluid's velocity (Speed). It's the basics for aircraft wing design explaining that air flowing over the upper, curved part of the wing moves faster than the air on the underside of the wing so that the pressure underneath is greater and hence causes lift.
बैटरी	Battery	A device that produces electricity by means of chemical reaction. A battery consists of one or more units called electric cells. Each cell has all the chemicals and parts needed to produce an electric current.
भार	Weight	The force on an object due to the gravitational pull of a planet or other heavenly body.
रासायनिक		
अभिक्रिया	Chemical Reaction	A process by which one substance is chemically converted to another. Chemical reactions involve the formation or destruction of bonds between atoms.
वायुमण्डल	Atmosphere	पृथ्वी के चारों ओर हवा का घेरा; पृथ्वी के निकट यह घना है और ज्यों-ज्यों ऊपर चलते जाते हैं यह विरल होते-होते बाहरी अन्तरिक्ष में निर्वात (वायु-विहीन) हो जाता है।
वायुवेगमापी	Anemometer	एक युक्ति जो हवा की चाल मापने के काम आती है।
विद्युत अपघटन	Electrolysis	Splitting a substance into the separate chemicals that make it up, by passing an electric current through it.
विद्युत जनित्र	Dynamo	A device that creates electricity by turning around a magnet near a coil of wire.
विद्युत धारा	Current	The movement or flow of electric charges.
विद्युत धारा	Electric Current	See current
विभव	Potential	The amount of electrification of a point with reference to some standard.
विशिष्ट घनत्व	Specific Gravity	The ratio of the density of a body to the density of water, the latter being taken as unity.
विसरण	Osmosis	The natural passage or diffusion of water (or other liquids) through a semi permeable membrane.
वोल्टता	Voltage	Difference in potential (or electric state) related to the electrical forces that 'Push' charges through a conductor. Can be thought of as the pressure which pushes electricity through a wire.
संधारित्र	Capacitor	A device that stores electric energy in the form of an electric charges.
संवेग	Momentum	The speed or force of something that is moving.
सूक्ष्म		
नलिका प्रभाव	Capillary Action	The tendency of liquids to move into or out of tiny, hairlike passages.
सेल्सियस	Celsius	A unit of measurement for temperature. Water freezes at 0°C (Zero degrees Celsius) and boils at 100°C degrees Celsius).
स्थिर विद्युत	Static Electricity	Describes the situation where objects carry a charges.
हिमांक	Freezing Point	The temperature at which a liquid becomes a solid. Increased pressure usually raises the freezing point.

तापमान












उष्णतम से लेकर शीतलतम तक

आशीष श्रीवास्तव

उष्ण होने पर परमाणु और परमाण्विक कण तरंगित तथा गतिमान होते हैं। वे जितने ज्यादा उष्ण रहेंगे उतनी ज्यादा गति से गतिमान रहेंगे। वे जितने शीतल रहेंगे उनकी गति उतनी कम होगी। परम शून्य तापमान पर उनकी गति शून्य हो जाती है। इस तापमान से कम तापमान संभव नहीं है। यह कुछ ऐसा है कि आप दक्षिणी ध्रुव से ज्यादा दक्षिण में नहीं जा सकते या उत्तरी ध्रुव से उत्तर में नहीं जा सकते हैं। ऐसा कभी नहीं होगा क्योंकि वह संभव ही नहीं है। नीचे दी गयी सारणी में ज्ञात ब्रह्माण्ड की उष्णतम चीजों या घटनाओं में से कुछ का विवरण दिया है। ज्ञात शब्द पर ध्यान दें क्योंकि ब्रह्माण्ड संबंधित हमारा ज्ञान संपूर्ण नहीं है। नीचे दी गयी सारणी में वही सूचना है जो हमें ज्ञात है, भविष्य में इसमें परिवर्तन संभव है।

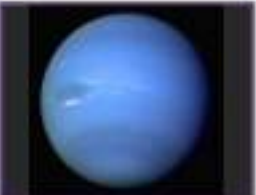



141,679,000,000,000,000,000,000,000 ⁰⁰ K	प्लैंक तापमान, ब्रह्माण्ड का महाविस्फोट के 10 ⁻⁴² सेकण्ड पश्चात् का तापमान या किसी श्याम विवर की अंतिम अवस्था का तापमान	
13,000,000,000,000,000,000 ⁰⁰ K	लार्ज हेड्रॉन कोलाइडर में नाभिकीय प्रतिक्रियाओं का तापमान	
10,000,000,000,000 ⁰⁰ K	महाविस्फोट के 100 माइक्रोसेकंड पश्चात् का तापमान	
4,000,000,000,000 ⁰⁰ K	प्रोटॉन-प्रतिप्रोटॉन प्रतिक्रिया का तापमान	
100,000,000,000 ⁰⁰ K	वर्ग II सुपरनोवा विस्फोट का तापमान	
10,000,000,000 ⁰⁰ K	महाविस्फोट के एक सेकण्ड पश्चात् का तापमान	
1,000,000,000 ⁰⁰ K	महाविस्फोट के 100 सेकण्ड पश्चात्	

510,000,000°K	टोकामक नाभिकीय संलयन रिएक्टर में प्लाज्मा का तापमान	
100,000,000°K	नियंत्रित नाभिकीय संलयन प्रक्रिया का तापमान	
13,600,000°K	सूर्य केंद्र का तापमान	
30,000°K, 29,727°C, 53,540°F	परमाणु बम के विस्फोट के 0.1 सेकण्ड पश्चात् का तापमान	
28,000°K, 27,727°C, 49,940°F	विद्युत तड़ित का तापमान	
15,000°K, 14,727°C, 26,540°F	टंगस्टन का क्रान्तिक तापमान	
9,940°K, 9,667°C, 17,432°F	सिरिअस A तारे की सतह का तापमान	
5,778°K, 5,505°C, 9,941°F	सूर्य की सतह का तापमान	
5,650°K, 5,377°C, 9,710°F	पृथ्वी के आंतरिक केंद्रक का तापमान	

3,823°K, 3,550°C, 6,422°F	हीरे का गलनांक	
3,683°K, 3,410°C, 6,170°F	टंगस्टन का गलनांक	
2,022°K, 1,749°C, 3,180°F	सीसे का वाष्पीकरण बिंदु	
1,923°K, 1,650°C, 3,202°F	अंतरिक्ष यान के पृथ्वी वातावरण में प्रवेश का तापमान	
1,830°K, 1,557°C, 2,834°F	बुन्सेन (Bunsen) बर्नर की ज्वाला का तापमान	
1,811°K, 1,538°C, 2,800°F	लोहे का गलनांक	
1,670°K, 1,397°C, 2,546°F	नीली ज्वाला का तापमान	
1,337°K, 1,064°C, 1,947°F	स्वर्ण का गलनांक	
1,300°K, 1,027°C, 1,880°F	ज्वालामुखी लावा का तापमान	
933°K, 660°C, 1,220°F	एल्युमिनियम का गलनांक	
755°K, 482°C, 900°F	स्वचालित सफाई अवस्था में विद्युत ओवन का तापमान	

737°K, 464°C, 876°F	शुक्र की सतह का औसत तापमान	
601°K, 326°C, 622°F	सीसे का गलनांक	
506°K, 233°C, 451°F	कागज का ज्वलन बिंदु	
436°K, 163°C, 325°F	दियासलाई का ज्वलन बिंदु	
373°K, 100°C, 212°F	जल का वाष्पीकरण बिंदु	
353°K, 80°C, 176°F	पॉम्पेई (Pompeii) कृमी के निवास वाली गर्म जल वाले झरनों का तापमान। किसी प्राणी द्वारा सहन की जा सकने वाली उष्णता की अधिकतम सीमा।	
331°K, 58°C, 136°F	पृथ्वी पर अब तक का रिकार्ड किया गया अधिकतम तापमान 13 सितंबर 1922 एल अज़िज़िआ, लिबीया	
321°K, 48°C, 118°F	यूरोप में रिकार्ड किया गया अधिकतम तापमान 10 जुलाई 1977 एथेंस ग्रीस	
315°K, 42°C, 107.6°F	घातक मानव बुखार का तापमान	
310°K, 37°C, 98.6°F	सामान्य मानव शरीर तापमान	
308°K, 35°C, 95°F	सागर का उष्णतम तापमान (लाल सागर)	
306°K, 33°C, 91°F	मक्खन का गलनांक	

288°K, 15°C, 58°F	अंटार्कटिका में रिकार्ड किया गया अधिकतम तापमान 05 जनवरी 1974 वांडा केन्द्र	
275°K, 2°C, 36°F	घरेलू फ्रिज का तापमान	
273°K, 0°C, 32°F	जल का हिमांक बिंदु	
258°K, -15°C, 5°F	आइसक्रीम का गलनांक	
255°K, -18°C, 0°F	घरेलू फ्रीजर का तापमान	
234°K, -39°C, -38°F	पारे का हिमांक बिंदु	
202°K, -71°C, -96.2°F	किसी मानव निवास-स्थल का रिकार्ड किया गया न्यूनतम तापमान, ओइमयाकान रूस 26 जनवरी 1926	
184°K, -89°C, -128.2°F	पृथ्वी पर रिकार्ड किया गया न्यूनतम तापमान, वोस्टोक केंद्र अंटार्कटिका 21 जुलाई 1983	
77°K, -196°C, -320.8°F	नाइट्रोजन का वाष्पीकरण बिंदु, क्रायोनिक्स में प्रयुक्त तापमान	
68°K, -205°C, -337°F	युरेनस का औसत तापमान	
63°K, -210°C, -346°F	नाइट्रोजन का हिमांक बिंदु	

53°K, -220°C, -364°F	नेपच्युन का औसत तापमान	
44°K, -229°C, -380.2°F	प्लूटो का औसत तापमान	
20.3°K, -253°C, -422.9°F	हाइड्रोजन का वाष्पीकरण बिंदु	
14.01°K, -259°C, -434.18°F	हाइड्रोजन का गलनांक	
4.22°K, -269°C, -451.8°F	हीलियम का वाष्पीकरण बिंदु	
2.73°K, -270°C, -454.49°F	ब्रह्मांड का औसत तापमान	
1°K, -272°C, -457.6°F	बूमरिंग निहारिका का तापमान, अब तक का ज्ञात ब्रह्माण्ड का न्यूनतम तापमान वाला भाग	
0.95°K, -272°C, -457.69°F	हीलियम का गलनांक	
0.0000000001°K, -273.1499999999°C, 459.669999999982°F	मानव द्वारा निर्मित न्यूनतम तापमान प्रयोगशाला हेल्सिंकी, 1999	
0°K, -273.15°C, -459.67°F	परम शून्य, केवल सैद्धांतिक रूप से संभव न्यूनतम तापमान, इस बिंदु पर एन्ट्रॉपी अपने न्यूनतम मान पर होगी।	



मर्यादा की आध्यात्मिक पृष्ठभूमि

मुनि राकेश कुमार

मर्यादा और कानून दोनों का लक्ष्य अनुशासन की प्रतिष्ठा है, पर दोनों की पृष्ठभूमि में बहुत अन्तर है। मर्यादा का जन्म श्रद्धा और भावना की ऊर्वर भूमि में होता है, उसे स्वेच्छा से स्वीकार किया जाता है। कानून बाहर से थोपा जाता है। उसमें भय और दबाव का भाव रहता है। सामान्य लोगों की दृष्टि में मर्यादा और कानून का रूप समान होता है, पर दोनों के आधार बिल्कुल भिन्न होते हैं।

मर्यादा का प्रासाद आध्यात्मिक भूमिका पर स्थित होता है। उसका लक्ष्य स्व-पर कल्याण होता है। उसमें किसी प्रकार के छद्म का अवकाश नहीं होता। अध्यात्म के अभाव में मर्यादा भी कानून का रूप ले लेती है, उसका अभीप्सित परिणाम उपलब्ध नहीं हो सकता।

तेरापंथ के प्रवर्तक आचार्य श्री भिक्षु सिद्धांतवादी आदर्श परायण महापुरुष थे। किसी पंथ और सम्प्रदाय के प्रवर्तन की उनकी कल्पना नहीं थी। उनके तपःपूत चरणों के प्रभाव से मार्गवर्ती अवरोध दूर हो गये और एक अनुपम पथ का निर्माण हो गया। महात्रुतों की साधना साधुत्व का प्राणतत्व है। फिर भी संघीय जीवन को व्यवस्थित और अनुशासित रूप देने तथा छद्मस्थता के कारण होने वाली भूस्खलनाओं और त्रुटियों का निरोध करने हेतु विविध प्रकार की मर्यादाओं की अपेक्षा रहती है। इसलिए आचार्य भिक्षु ने अपने आध्यात्मिक संगठन का प्रारम्भ अनुशासन से किया और साधु-साध्वी व श्रावक-श्राविकाओं की जीवन धारा को मर्यादा के तटों से आबद्ध किया।

किसी धर्मसंघ के लिए मर्यादाओं और व्यवस्थाओं की क्या जरूरत है? यदा-कदा इस तरह का प्रश्न उत्पन्न होता रहता है। आचार्य भिक्षु ने स्वयं इसका उत्तर प्रदान किया है। उन्होंने लिखा है—“मैंने न्याय, समभाव और समविभाग की स्थापना के लिए

मर्यादाओं का निर्माण किया है।” धर्मसंघ के हर सदस्य को न्याय और समविभाग मिले, यह साधना की दृष्टि से भी जरूरी है। धर्मसंघ का हर घटक त्याग और संयम के संस्कारों से ओत-प्रोत हो, उसकी पवित्र प्रतिमा पर मैं और मेरेपन की काली छाया अंकित न हो, इस तथ्य पर तेरापंथ के संविधान में उन्होंने विशेष ध्यान दिया।

आचार्य भिक्षु का जीवन श्रद्धा और संकल्प तथा शक्ति और भक्ति का अद्भुत संगम स्थल था। संकल्प और पुरुषार्थ प्रधान मानव प्रकृति में अहं की ग्रन्थि प्रबल हो जाती है, यह बहुधा दृष्टिगोचर होता है, पर आचार्य भिक्षु का मानस वीतराग और तीर्थकर के प्रति श्रद्धास से ओत-प्रोत था। तेरह की संख्या के आधार पर जोधपुर में एक भोजक कवि ने उनकी धार्मिक परम्परा का नामकरण तेरापंथ कर दिया। उस समय वे वहाँ नहीं थे। जब उन्हें इस प्रसंग की सूचना मिली तो उन्होंने तेरापंथ का अर्थ संख्यापरक नहीं कर, श्रद्धापरक कर दिया। उन्होंने कहा—“हे प्रभो! यह तेरा पंथ है, हम आपके पदचिन्हों के अनुयायी हैं।” उन्होंने अपने धर्मसंघ को अधिकारवाद की मनोवृत्ति से दूर रहने की सबल प्रेरणा प्रदान की।

यदि इन मर्यादाओं का पारिवारिक और सामाजिक जीवन में अनुसरण किया जाए तो वर्तमान की अनेक समस्याओं का समाधान हो सकता है, आज जो चारों ओर बिखराव, टकराव और तनाव के स्वर प्रतिध्वनित हो रहे हैं, वे स्वतः शांत हो जाएंगे। इसलिए इन मर्यादाओं का जितना आध्यात्मिक जीवन के लिए महत्व है, उतना ही व्यावहारिक जीवन के लिए है।

तेरापंथ धर्मसंघ के इतिहास में अनेक त्यागी और निःस्पृह व्यक्तित्व हो गए हैं, जिन्होंने उपरोक्त मर्यादाओं के आधार पर अनुपम और उज्ज्वल आदर्श प्रस्तुत किए हैं। उनमें मुनिश्री खेतसी

जी का नाम प्रमुख है। तेरापंथ के द्वितीय आचार्य श्री भारीमलजी ने अपने उत्तराधिकारी के रूप में मुनिश्री खेतसीजी और मुनिश्री रायचंदजी के दो नाम लिखे, बाद में मुनिश्री खेतसीजी का नाम नहीं रहा। मुनिश्री रायचंदजी को भावी आचार्य के रूप में घोषित किया गया। मुनिश्री खेतसीजी का मानस दोनों ही स्थितियों में समान और सन्तुलित था। युवाचार्य पद के पत्र में नाम लिखने पर उनके मानस में उत्कर्ष का भाव नहीं था और नाम नहीं रहने पर अपकर्ष का भाव नहीं था। समता योग की शाब्दिक परिभाषा और व्याख्या करने वाले बहुत व्यक्ति मिल जाते हैं पर अपने जीवन व्यवहार से उसकी व्याख्या लिखने वाले मुनिश्री खेतसी जी की तरह विरले होते हैं।

साधु के लिए साधुत्व का पद ही महत्वपूर्ण होता है। किसी भी पद प्रतिष्ठा की कामना साधना में बाधा और विक्षेप उत्पन्न करती है। आचार्य भिक्षु ने इस दृष्टि से मर्यादाओं का निर्माण किया था।

साधना के लिए अप्रतिबद्धता का अभ्यास आवश्यक है, तेरापंथ के संविधान में अप्रतिबद्धता के संस्कार और व्यवहार पर विशेष बल दिया गया है। कोई भी साधु-साध्वी स्वेच्छा से कहीं पर चातुर्मास नहीं कर सकते, इसी प्रकार श्रावक संघ भी किसी साधु-साध्वी का नाम लेकर निवेदन नहीं कर सकता।

आचार्य भिक्षु ने लिखा—साधु-साध्वियाँ किसी गाँव और नगर में रहें तो समग्रता से रहें और विहार करें तो समग्रता से करें। किसी प्रकार की व्यग्रता उचित नहीं है। प्रतिबद्धता से व्यग्रता उत्पन्न होती है।

आग्रह और अधिकार की भावना मुक्ति और स्वतंत्रता के विकास में बाधक है। जैन साधुओं के जीवन में धन-वैभव व भूमि आदि परिग्रह के अधिकार का प्रश्न नहीं होता, पर शिष्य प्रथा के रूप में परिग्रह की भावना हो सकती है। आचार्य भिक्षु ने कुछ

परम्पराओं में इसके कटु और निराशाजनक परिणाम देखे थे। इसलिए उन्होंने मर्यादा का निर्माण कर शिष्ट प्रथा का उन्मूलन किया। उन्होंने कहा—व्यक्तिवाद, स्वार्थवाद और अधिकारवाद की वृत्तियाँ धर्मसंघ में उचित नहीं हैं। आचार्य भिक्षु का चिंतन कितना सूक्ष्म और निर्मल था, इससे यह बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है।

किसी वस्तु को अधिकार में रखने वाला व उसे ममत्व के धागे से बाँधने वाला स्वयं बाँध जाता है। एक महात्मा जंगल में जा रहे थे। मार्ग में गाय की रस्सी पकड़े एक ग्वाला मिल गया। महात्मा ने पूछा—गाय तुम्हारे से बाँधी हुई है या तुम गाय से बाँधे हो। ग्वाले ने कहा—गाय मेरे से बाँधी हुई है, इसकी रस्सी मेरे हाथ में है। महात्मा ने कहा—एक बार रस्सी छोड़ो। यदि गाय तुम्हारे से बाँधी है तो वह तुम्हारी ओर दौड़ेगी, यदि तुम उससे बाँधे हो तो तुम उसकी ओर दौड़ोगे। अनपढ़ ग्वाला महात्मा के कहने का मर्म भले न समझ सका हो, पर यह निर्विवाद तथ्य है कि परिग्रही व्यक्ति दूसरे को बाँधने के भ्रम में होता है, वस्तुतः वह अपने लिए बाँधन का जाल बुनता है।

आचार्य भिक्षु से किसी ने पूछा—आपका पंथ कितने समय तक चलेगा? उन्होंने कहा—जब तक पंथ पर चलने वाले मर्यादा के पालन में जागरूक रहेंगे, तब तक धर्मसंघ की भागीरथी का पवित्र स्रोत अजस्र गति से बहता रहेगा। तेरापंथ की वर्णमाला का हर शब्द अध्यात्म की पवित्र भावनाओं से उद्भूत हुआ है। इसकी मर्यादाओं का महत्व भूतकाल में भी था, वर्तमान में भी है और भविष्य में भी रहेगा। अढ़ाई शताब्दी से चिंतन की धारा में अद्भुत और अप्रत्याशित परिवर्तन विश्वक्षितिज पर दृष्टिगोचर हो रहे हैं, पर मर्यादाओं की महत्ता और प्रासंगिकता के स्वर लाखों कंटों से प्रतिध्वनित हो रहे हैं। जैन-अजैन सभी सम्प्रदायों के मनीषीजन इन मर्यादाओं और इनके निर्माता के प्रति नतमस्तक हैं।

बच्चों के साथ बर्ताव में ट्रैफिक लाइट जैसा रुख रखने से फायदा

डॉ. शैलजा सेन

ऐसे घरों में जहाँ स्पष्ट और बगैर नुकसान पहुँचाने वाले नियम हों, वहाँ बच्चे अनुशासन, जिम्मेदारी का भाव और आत्म-नियंत्रण जल्दी सीखते हैं। यह होमवर्क करने से लेकर सोने और टीवी देखने का समय निश्चित करने, गंदी भाषा का इस्तेमाल नहीं करने, आक्रामक बर्ताव नहीं करने और नशे न करने तो हो सकता है। शोध बताते हैं कि माता-पिता को ठोस नियम बनाने और उनका पालन कराने पर अधिक ध्यान देना चाहिए। कुछ ऐसे ही टिप्स यहाँ दिए जा रहे हैं—

- स्पष्ट नियम तभी काम करते हैं, जब वे बहुत ज्यादा नहीं हों। एक ही वक्त में तीन से ज्यादा नियम नहीं होने चाहिए। ज्यादा नियमों से बच्चे भ्रमित होंगे और वे चिड़चिड़े हो जाएँगे। जहाँ तक व्यवहार की बात है, नियमों में लचीलापन हो सकता है। इस मामले में 'ट्रैफिक लाइट' जैसा रुख अपना सकते हैं। रेड लाइट का मतलब है हिंसा, गंदी भाषा बिल्कुल सहन नहीं की जाएगी। यलो लाइट में बच्चों को सिखाना होता है जैसे—होमवर्क के लिए बैठना, रात में स्कूल बैग को पैक करना आदि। ग्रीन लाइट में सब कुछ ठीक है। नियम बनाने से पहले जरूरी है कि आप पहले उनसे संतुष्ट हों।
- नियमों के बारे में बच्चों से तर्क-कुतर्क या लंबी बहस बिल्कुल नहीं करनी चाहिए। जरूरी है कि आप जो कहें, उसे बच्चे सकारात्मक तरीके से सुनें। अगर आपने कोई नियम बना दिया है तो बेहद जरूर है कि वह लंबे समय तक बना रहे। अगर ये बार-बार टूटते हैं तो इससे भ्रम पैदा होगा। किसी भी नियम के बारे में माता-पिता को एकसमान रुख ही रखना चाहिए। अगर माँ कहती है कि वीकडेज में टीवी नहीं देखना और पिता कहते हैं कि यह बच्चों पर ज्यादाती है तो नियम सख्ती से लागू नहीं हो पाएगा।
- खुली चर्चा करें विशेष रूप से बड़े बच्चों के साथ। इससे चीजों के बारे में बेहतर तरीके से पता चलेगा।
- कोई भी नियम बनाएँ, लेकिन बच्चों के इमोशनल बैंक अकाउंट में आपका प्यार डिपॉजिट होते रहना चाहिए।



इंटरनेट का बढ़ता रोग

इंटरनेट आधुनिक विज्ञान का एक ऐसा आविष्कार है, जिसने पूरी दुनिया को समेट दिया है, इसके माध्यम से हम घर बैठे विश्व के किसी भी कोने में रहने वाले व्यक्ति को संदेश भेज सकते हैं, उससे बातें कर सकते हैं, उसे देख सकते हैं, विभिन्न विषयों की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं और वो सब कुछ जान सकते हैं, जो इंटरनेट पर उपलब्ध है। अपनी इसी ज्ञान-पिपासा को शांत करने के लिए लोग इंटरनेट का इस्तेमाल करते हैं, दूसरों से संपर्क बनाए रखने के लिए ऑनलाइन रहते हैं और अपडेट रहने की कोशिश करते हैं। आज इंटरनेट से हमारे देश व समाज को बहुत लाभ मिल रहा है, विकास की दर इसके द्वारा बहुत तेजी से बढ़ी है, लेकिन इसका एक साइड इफेक्ट भी समाज के सामने आ रहा है, जिसे विशेषज्ञों द्वारा आईएडी (इंटरनेट एडिक्शन डिसऑर्डर) नाम दिया गया है।

आईएडी का मतलब है—इंटरनेट का हद से ज्यादा और समय काटने के लिए उपयोग करना। हमारे देश में इंटरनेट का इस्तेमाल करने वाले लोगों की उम्र लगभग 18 से 40 वर्ष के बीच में है और इस उम्र में बच्चे, किशोर व युवा लोग इंटरनेट का इस तरह इस्तेमाल करने लगे हैं, जैसे उन्हें इसकी लत लग गई हो। हमारे देश में नशे की आदत सबसे अधिक युवाओं को ही है और कभी किसी ने सोचा भी नहीं होगा कि इंटरनेट हमारे समाज व देश के लिए इतना घातक बन जाएगा कि हमारे देश की युवापीढ़ी नशे की तरह इसकी गिरफ्त में होगी और आज ऐसा ही हो रहा है। आज देश की नई पीढ़ी व युवापीढ़ी, दोनों 'इंटरनेट एडिक्शन डिसऑर्डर' नामक बीमारी की चपेट में आ रही हैं और यह तेजी से अपनी पहुँच बढ़ाता जा रहा है। विशेषज्ञों का मानना है कि इस मामले को यदि गंभीरता से न लिया गया तो बहुत जल्द इसके गंभीर परिणाम देखने को मिल सकते हैं। देश की राजधानी मुंबई और उससे सटे शहर पुणे में तो इंटरनेट एडिक्टेड क्लिनिक की शुरुआत भी हो चुकी है। यहाँ कई माता-पिता अपने बच्चों को इंटरनेट की लत छुड़ाने के लिए एडमिट करा

रहे हैं। हमारे देश में लगभग 40 प्रतिशत युवा इंटरनेट एडिक्ट होने के कारण दोस्तों से मिलना पसंद नहीं करते। ये परिवार की गतिविधियों में भी कम भागीदारी करते हैं। आज हमारे देश के लगभग 50 प्रतिशत युवाओं के पास स्मार्टफोन हैं। वे इसका सबसे ज्यादा प्रयोग नेट के लिए कर रहे हैं। यही कारण है कि वे आठ घंटे से ज्यादा समय तक ऑनलाइन रहते हैं। यह एडिक्शन उस समय और बढ़ जाता है, जब ये गेमिंग, पोर्नोग्राफी, ऑनलाइन शॉपिंग और सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर अपना समय बिताते हैं। अपने इसी एडिक्शन के कारण कई युवा इस समय कंपलिसिव इंटरनेट हैबिट (इंटरनेट से जुड़ी बाध्यकारी आदत) के शिकार हैं। यह स्थिति इंटरनेट एडिक्शन डिसऑर्डर की पहली स्टेज मानी गई है और इस तरह यहाँ से इस एडिक्शन की शुरुआत हो जाती है।

आईएडी के जो लक्षण इंटरनेट एडिक्ट युवाओं में देखने को मिल रहे हैं वे हैं—हर दिन पाँच से दस घंटे ऑनलाइन होना, घर से बाहर निकलने का वक्त कम होते जाना, भोजन व काम करने में कम समय बिताना, भोजन मॉनीटर के सामने ही करना, दोस्तों व परिवार वालों से मिलने में कतराना, अपना ईमेल-बॉक्स दिन में कई बार चेक करना, खुद को बहुत अच्छा नेट यूजर समझने लगना, पढ़ाई करते हुए भी ऑनलाइन रहना और अपने कमरे में अकेले रहते हुए इंटरनेट यूज करते हुए राहत महसूस करना आदि। इस समय देश के कई इलाकों में नेट सर्फिंग की लत को फिलहाल 'एडिक्शन या लत' के अंतर्गत नहीं रखा जा रहा है, लेकिन इसके लक्षण युवाओं में उभरने लगे हैं। कई युवाओं की हालत ऐसी हो चुकी है कि किसी दिन यदि वे नेट का उपयोग न करें तो उन्हें अजीब-सा महसूस होने लगता है। यदि ये लोग दोस्तों व परिवार वालों से मिलने-जुलने के बजाय अपना ज्यादा समय नेट पर गुजार रहे हैं जो यह 'आईएडी' का पहला लक्षण है, लेकिन जिस तरह से युवा वर्ग इंटरनेट का आदी हो रहा है, उसे देखते हुए लगता है कि बहुत जल्द ही देश के हर

छोटे-बड़े शहरों में इसके रोगी देखने को मिल सकते हैं। मनोचिकित्सकों का कहना है कि वर्तमान समय में अधिक लोग इस बीमारी के चंगुल में नहीं आए हैं, लेकिन यह सुखद स्थिति ज्यादा दिनों तक नहीं बनी रह पाएगी; क्योंकि अब मोबाइल पर भी नेट चलाया जा रहा है और लोग इसका इस्तेमाल बहुतायत से कर रहे हैं। यदि कोई व्यक्ति इंटरनेट का बहुत अधिक इस्तेमाल करता है और फिर उसे इस सुविधा से वंचित रखा जाए तो उसके अंदर शीघ्र ही इससे संबंधित शारीरिक व मानसिक विकार उभरने शुरू हो जाएंगे। यदि इस लत से युवापीढ़ी को समय रहते नहीं निकाला गया तो समाज व परिवार के लिए इसके कारण बड़ी परेशानियाँ खड़ी हो सकती हैं। वर्तमान में इंटरनेट का प्रयोग करने में भारत का स्थान एशिया में तीसरा और विश्व में चौथा है। आज भारत के लगभग 60 प्रतिशत युवा सोशल नेटवर्किंग और ऑनलाइन गेम्स पर दिन के पाँच घंटे से ज्यादा समय बिता रहे हैं। वहीं लगभग 25 प्रतिशत युवा दिन में आठ घंटे ऑनलाइन रहते हैं। ये फेसबुक, ऑरकुट, ट्विटर सहित कई गेमिंग साइट्स का अधिक उपयोग करते हैं। चाईनीज एकेडमी ऑफ साइंसेस के शोधकर्ताओं ने एक प्रयोग के अंतर्गत 14 से 21 साल के युवाओं की ब्रेन मैपिंग से यह पता लगाया है कि प्रयोग में सम्मिलित इस उम्र के आधे से अधिक लोग इंटरनेट एडिक्शन डिसऑर्डर के शिकार हो चुके थे। इनके दिमाग में वही लक्षण पाए गए, जो एक शराब और जुआ खेलने के आदी व्यक्ति में पाए जाते हैं। महानगरों व बड़े शहरों में यह मानसिक बीमारी इस कदर बढ़ चुकी है कि कई युवाओं को स्वास्थ्य सुधार केन्द्र में भरती

कराना पड़ रहा है। देश के युवाओं में अब इस बीमारी के लक्षण उभरने शुरू हो चुके हैं। एक सर्वे से मिली जानकारी के अनुसार, यदि जल्दी ही इस पर नियंत्रण नहीं पाया गया तो समाज में एक नई विकृति पैदा हो सकती है। निश्चय ही 'आईएडी' हमारे समाज व देश के लिए एक गंभीर संकट बन सकती है।

यदि समय रहते हम सभी इस ओर जागरूक नहीं हुए। व्यक्ति नशा तभी करता है, जब वह सुख चाहता है, अपने दुःख को दूर करना चाहता है, सब कुछ भुलाना चाहता है और साथ ही अपना अकेलापन भी दूर करना चाहता है। इंटरनेट उसे सब कुछ देता है और इसी कारण आज की युवापीढ़ी इंटरनेट के नशे की ओर बढ़ रही है। इसे यदि रोकना है तो सबसे पहला कदम—इससे सतर्क व सावधान रहना ही है, ताकि युवा पीढ़ी इंटरनेट से होने वाले इस नशे के प्रति जागरूक रहे। दूसरा कदम यह है कि आवश्यकता से अधिक इंटरनेट प्रयोग से बचें, जितना जरूरी है, उतना ही प्रयोग करें, अन्यथा अति करने से नुकसान तो उठाना पड़ सकता है। तीसरा कदम यह है कि घर-परिवार के परिजन व शिक्षकगण 'आईएडी' के बारे में जानकारी रखें और इसे अन्य लोगों को भी बताएँ, यदि परिवार के बच्चों व युवाओं में इसके लक्षण दीख रहे हैं तो अविलंब स्वास्थ्य केंद्रों से मदद लें और उन्हें अपना स्नेह-अपनत्व भरा सहयोग दें। इसके अतिरिक्त और जो भी संभव उपाय किए जा सकते हैं, वे करें, तभी हम आधुनिक टेक्नोलॉजी की इन नई उभरती हुई विकृतियों से उबर सकेंगे और इनका उपयोग करने के साथ-साथ स्वस्थ रह सकेंगे। **साभार-अखण्ड ज्योति** 

तो क्या दुर्लभ हो जाएगी हरियाली!

दिलीप यादव

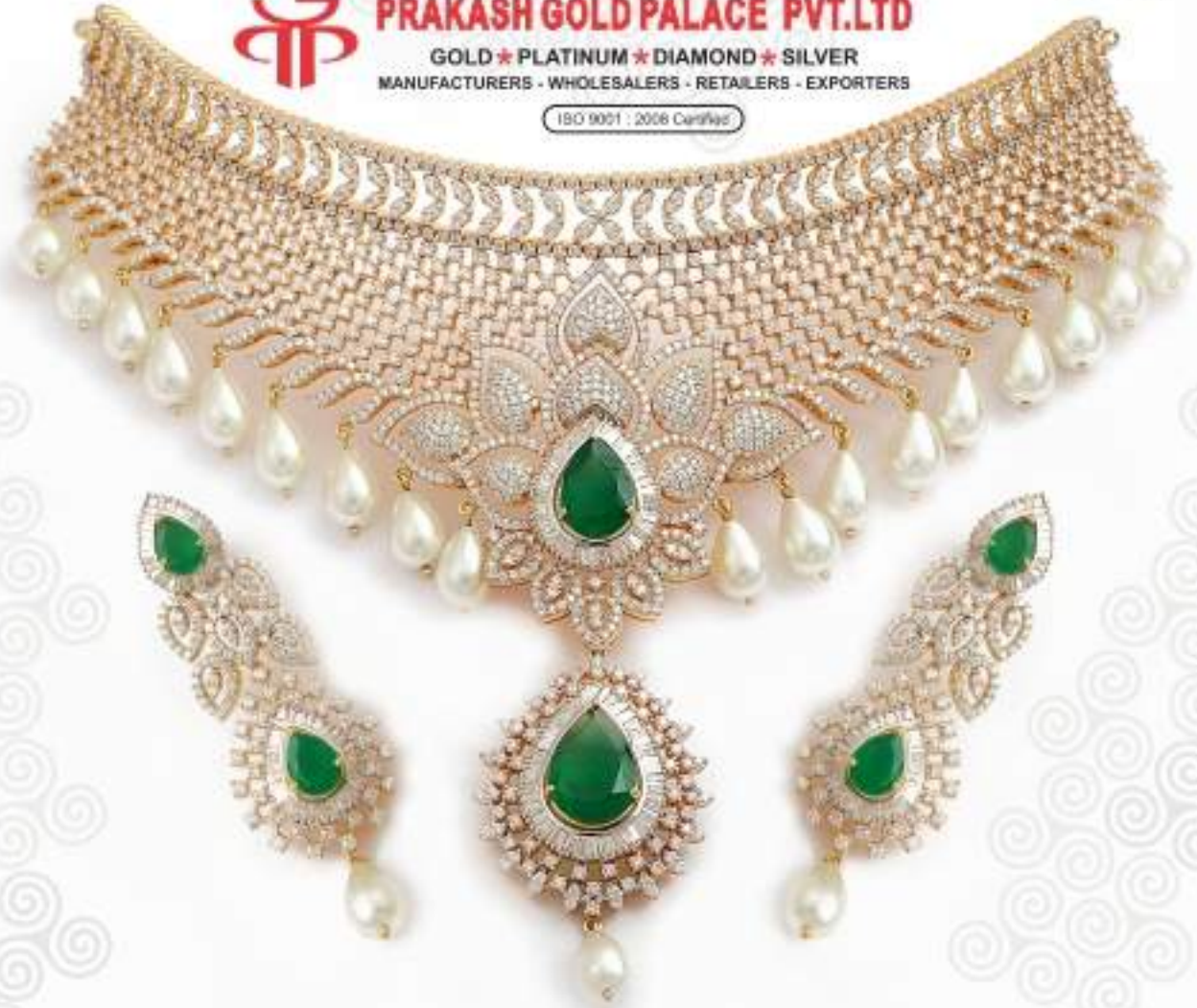
कृषि को 'भारत की रीढ़' कहने में अब थोड़ी हिचकिचाहट भले होती हो लेकिन यह सच है कि यहाँ की 60 प्रतिशत जनता अब भी कृषि पर निर्भर है। पारिस्थितिकी में हो रहे आमूलचूल परिवर्तनों के चलते खेती संकट में घिरी हुई है। कृषि वैज्ञानिकों का कहना है कि कोयला, पेट्रोलियम पदार्थ और प्राकृतिक गैसों से दुनिया में रोजाना दो करोड़ टन कार्बन-डाई-ऑक्साइड गैस का उत्सर्जन हो रहा है, जिससे धरती का तापमान बढ़ रहा है। इतना ही नहीं आने वाले समय में धरती का तापमान 1.8 से लेकर 4.0 डिग्री सेंटीग्रेड तक गर्म होने की भविष्यवाणियाँ की जा रही हैं। अब जब सारी दुनिया ही राख होने की स्थिति में है, खेती-हरियाली की तस्वीर तो बदलेगी ही। भारत में अभी से फसल उगने और फलने का समय बदलने लगा है, जिससे उत्पादन और गुणवत्ता बहुत ज्यादा प्रभावित हुई है। फूलों की खेती पर भी ग्लोबल वार्मिंग का खतरा साफ नजर आ रहा है। राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी के एक अध्ययन में बताया गया है कि यदि अनुमान के अनुसार वातावरण में कार्बन-डाई-ऑक्साइड की मात्रा दोगुनी हो जाती है तो जंगली पुष्प की प्रत्येक पाँच किस्में अगली सदी तक लुप्त हो सकती हैं। यह सही है कि पौधे कार्बन-डाई-ऑक्साइड लेते हैं, लेकिन इसके बढ़ते हुए स्तर से जंगली फूलों की संख्या में 20 प्रतिशत एवं कुल पादप विविधता में 8 प्रतिशत की कमी हुई है। पिछले वर्ष कृषि वैज्ञानिक यह देखकर हैरान थे कि हिमालय क्षेत्र में खिलने वाले रोडोडेन्ड्रॉन आदि पुष्प जो मार्च में खिलते थे, वे इस साल 45 दिन पहले ही खिल गए। जलवायु परिवर्तन न केवल पुष्पों को खत्म कर रहा है, बल्कि उनकी सुगंध को भी कम कर रहा है। बदलती पारिस्थितिकी का सबसे ज्यादा असर गेहूँ की फसल पर पड़ रहा है। हाल ही में फिलीपींस के अंतरराष्ट्रीय धान अनुसंधान के वैज्ञानिकों ने धान को पोषणयुक्त बनाने के लिए उसमें दो जीन डाले हैं, जिनसे दानों में बीटा-कैरोटीन बनता है। शुगर-फ्री चावल और रोगियों के लिए कम जीआई वाला चावल भी तैयार किया जा रहा है। छतों पर हाइड्रोपोनिकस खेती के माध्यम से पौध तैयार करने जैसी कोशिशें भी जारी हैं। फॉरेस्ट रिसर्च इंस्टीट्यूट कानपुर के निदेशक डॉ. आर.पी. भारती की मानें तो देश में टिश्यू कल्चर में काम थोड़ा तेज अवश्य हुआ है, लेकिन खत्म हो रहे पौधों के क्लोन तैयार करने में हम बहुत पीछे हैं। अभी इस दिशा में और तेजी से काम करने की आवश्यकता है, क्योंकि कई पौधे तेजी से खत्म हो रहे हैं। वी डी सीड, पेस्टीसाइड व उर्वरकों के अंधाधुंध प्रयोग से हरियाली नहीं बचेगी। सुगंध और शस्वश्यामला प्रकृति चाहते हैं तो कुल भूमि के कम से कम 15 प्रतिशत हिस्से पर नए पौधे लगा दिए जाएँ, तभी परिवर्तन होगा।



PRAKASH GOLD PALACE PVT.LTD

GOLD * PLATINUM * DIAMOND * SILVER
MANUFACTURERS - WHOLESALERS - RETAILERS - EXPORTERS

ISO 9001 : 2008 Certified




www.pgp016.net
pgpmukesh@yahoo.com


www.prakashdiamond.com
pdp_india@gmail.com


pgpsilver@yahoo.com


abhilasha
jewellers pvt ltd
ajplcbe@gmail.com

GOLD: #134, N.S.C.Bose Road, Sowcarpet, Chennai-600079, Phone: 044 25392854, 25382415. # 144, Purasaiwakkam High Road Kellys Chennai - 600010, Phone: 044-26430168. **DIAMOND & PLATINUM:** #144, Purasaiwakkam High Road Kellys Chennai -600010, Phone: 044 -26430168. #334, Sadhasivam Complex Mint Street, Sowcarpet Chennai-79, Ph :044 42730063. **SILVER:** #144, Purasaiwakkam High Road Kellys Chennai-10, Phone : 044 26430168. #169, Diamond Star, Mint street, Chennai-600079, Ph:044 43186143 (Centrex No:8143).

COMING SOON... # 122, Cathedral Road Chennai - 86, (Opp Stella maris College)

Mumbai Bangalore Chennai Cochin Coimbatore Hyderabad Kolkatta Surat Singapore
e-mail: pgpmukesh@yahoo.com, web: www.prakashdiamond.com

सत्यनिष्ठ बनें

प्रमोद बत्रा

एक व्यक्ति सत्यनिष्ठ तभी हो सकता है जब वह ईमानदार और विश्वास योग्य हो। ये वो व्यक्ति होते हैं जो अपने वचन को पूरा कर अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा करते हैं। सत्यनिष्ठ कहलाना किसी भी व्यक्ति के लिए सम्मान की बात है। वह जानता है कि क्या सही है और क्या गलत तथा सही चीजों को करना उसका जुनून होता है, चाहे इस राह में कोई भी रोड़ा आए या कितनी भी कीमत चुकानी पड़े। अपने विचारों के हिसाब से जीवन जीने वाले व्यक्ति के लिए मन में हमेशा यही इच्छा होती है कि उसकी समाधि शिला पर लिखा जाए 'एक निर्विवाद सत्यनिष्ठ व्यक्ति'।

यह एक विचार है, एक लक्ष्य है जो हमारे मानसिक पटल पर 'करो या ना करो' के मानदंड के रूप में हमेशा रहना चाहिए, जिससे हम अपने रोजमर्रा के कार्यों और लम्बी अवधि की गतिविधियों को छानकर अलग कर सकें। सत्यनिष्ठा हमारे भीतर के उस व्यक्ति को प्रदर्शित करती है, जो कार्यों को करने की प्रेरणा देता है और इसमें हमारी वाणी, उद्देश्य और हमारे द्वारा किए गए कार्य समाहित होते हैं। एक परिपक्व व्यक्ति सत्यनिष्ठा का सदा पालन करता है, आंतरिक और बाहरी तौर पर। सत्यनिष्ठा और कर्तव्य साथ-साथ चलते हैं। सत्यनिष्ठ व्यक्ति कर्तव्य का निर्वाह करने को तत्पर रहता है। मैं गलत था या मुझे मदद चाहिए—ऐसे शब्द उसके लिए कमजोर होने के संकेत नहीं हैं। ये तो मजबूत व्यक्ति बनने की ओर बढ़ाए गए कदम हैं। हम पूरी जिंदगी स्वयं के साथ गुजारते हैं और जब हम सत्यनिष्ठा, प्रतिबद्धता और कर्म जैसे जीवन के तीन समझौता नहीं करने योग्य मूल्यों के प्रति अपने आपको समर्पित कर देते हैं, तभी हम वास्तव में मानवता प्राप्त कर पाते हैं।

सत्यनिष्ठ व्यक्ति अपनी ही नजरों में ऊँचा उठ जाता है वह जिंदगी के प्रति वैसी प्रतिक्रिया नहीं देता जैसी बचपन में दिया करता था। यह परिणाम है जीवनपर्यंत धैर्य का जो कि एक और मूल्य है। इस प्रकार के व्यक्ति का अहम् माउंट एवरेस्ट के आकार के बराबर नहीं होगा। कोई नहीं कहता कि सत्यनिष्ठ बनना आसान है। अक्सर यह कड़ी मेहनत का काम है, लेकिन अंत में मेहनत रंग लाती है। सत्यनिष्ठा की परीक्षा इस बात से हो जाती है कि दबाव में आप कैसा काम करते हैं। क्या आप गलत कार्यों के लिए बहाना बनाकर सत्यनिष्ठा के साथ समझौता करते हैं या फिर आप में सही काम करने का जल्बा है, फिर चाहे आपकी राह में कुछ भी आए? ऐसे व्यक्ति यदि अपने मित्रों को चुनने में विवेक का सहारा नहीं लेते या उदासीन रहते हैं, तो बुरी संगत उनकी सत्यनिष्ठा को कलंकित कर सकती है।

सत्यनिष्ठ व्यक्ति अपने दादों को हर हाल में पूरा करता है; इस व्यक्ति की बात पर सभी विश्वास रखते हैं। मेरे दिमाग में दिल्ली मेट्रो के ऐसे ही व्यक्ति का नाम उभरता है ई-श्री धरन। आप दिल्ली मेट्रो का एक चक्कर लगाइए और आप समझ जाएंगे कि मूल्य क्या है। 75 की उम्र में भी वे मजबूत होते जा रहे हैं और एक सत्यनिष्ठ व्यक्ति की छवि रखते हैं, लेकिन हमारे देश में कई सत्यनिष्ठ व्यक्ति मिल जाएंगे। धैर्य एक ऐसा मूल्य है जो काफी हद तक बुद्धिमानी और सत्यनिष्ठा के मूल्यों पर निर्भर करता है। हममें से

काफी लोगों के लिए धैर्य को अपनाना और व्यवहार में लाना काफी मुश्किल होता है। धैर्य को आत्मसात कर व्यवहार में लाने के लिए हमें अपने मानसिक बंधनों को खोलना होगा। इसकी बेहतरीन प्रेरणा हमें प्रकृति के मौसमी कार्यक्रम से मिलती है। हम जब गेहूँ का बीज बोते हैं तो हमें तीन माह में ही फल प्राप्त हो जाता है, लेकिन हम आम का बीज बोते हैं तो हमें आम पाँच वर्ष बाद फल मिलने शुरू होते हैं। लेकिन गौर करने योग्य बात यह है कि आम का पेड़ हमें अगले 100 वर्षों तक फल देता रहेगा, जबकि गेहूँ की फसल एक ही बार मिलेगी। कृषि से धैर्य की अच्छी शिक्षा ली जा सकती है। एक किसान धरती से अपनी मूल्यवान फसल प्राप्त करने के लिए इंतजार करता है और बारिश की भी कितने धैर्य से राह देखता है।

हर नए दिन का सामना धैर्य शांति और विश्वास के साथ करना ही परिपक्वता है और यह भी मैं स्वयं के नियंत्रण में हूँ। धैर्य के संदर्भ में जॉन मिल्टन मुझे हमेशा ही प्रेरित करते रहे हैं, अंधे होने के बाद उन्होंने कहा, 'जो लोग खड़े रहकर इंतजार करते हैं वे भी सेवा करते हैं' धैर्य रखना सीखिए। इंतजार कीजिए। ईमानदारी जैसा समृद्ध मूल्य और कोई नहीं। बेईमानी दो व्यक्तियों के बीच दीवार खड़ी कर देती है। केवल सत्य का हथौड़ा ही इस दीवार को ध्वस्त कर सकता है। उपर्युक्त पंक्तियाँ पुनः पढ़ें। महाभारत की याद ताजा करें, जिसमें दुर्योधन कृष्ण की सेना की माँग करता है, जबकि अर्जुन कृष्ण की सलाह की। वे विश्वास जगाते हैं, जो विद्यमान रहता है; दोनों ही अपने विभिन्न मूल्यों के प्रति ईमानदार हैं। जहाँ एक ओर अर्जुन ईमानदार व्यक्ति के साथ कार्य कर रहा है, वहीं दूसरी ओर दुर्योधन, शकुनि के साथ कार्य कर रहा है, जिनका कार्य करने का अपना तरीका है। धन न चुराने या झूठ न बोलने से कहीं अधिक जटिल है ईमानदारी। यह इनसे कहीं अधिक है। लोगों के साथ लेन-देन करने में सत्यनिष्ठा रखना और हर तरह से सत्य का साथ देना इसमें शामिल है। ईमानदार व्यक्ति वह नहीं जो कभी झूठ नहीं बोलता क्योंकि ऐसा तो कोई व्यक्ति हो ही नहीं सकता। जब एक ईमानदार व्यक्ति झूठ बोलते हुए पकड़ा जाए तो वह बिना समय गँवाए अपनी गलती मान लेता है और सच बोल देता है। अपनी गलती मानने में उसे कोई भय नहीं होता और वह क्षमा-याचना करता है। मनुष्य के यही अच्छे मूल्य होते हैं। मेरी समझ में ईमानदारी गर्भवस्था के समान है; या तो आप गर्भवती हैं या नहीं हैं—आप थोड़े गर्भवती नहीं हो सकते। अपनी नजरों में मेरी क्या छवि है इसके आधार पर अपनी ईमानदारी का निर्णय किया जा सकता है। हालाँकि मैं दूसरों की नजरों में भी नायक बनने की कोशिश करता हूँ। झूठ की अनुपस्थिति, व्यवहार कुशलता का होना और क्षमा माँगना भी ईमानदारी है। जब आप रोजमर्रा के जीवन में बुद्धिमानी, धैर्य, सत्यनिष्ठा और ईमानदारी जैसे मूल्यों को व्यवहार में लाते हैं तो आप अपने दोस्तों और संबंधियों के विश्वसनीय बन जाते हैं। हो सकता है आपको ईमानदार व्यक्ति की पदवी भी मिल जाए। मैं सभी को साफ शब्दों में कहना चाहूँगा कि किसी भी आकर्षक शीर्षक, घर या आकर्षक गाड़ी होने से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है कि आप सत्यनिष्ठ व्यक्ति के रूप में जाने जाएँ।





24x7
MAXIMUM SECURITY



HI-FOCUS

Enhancing your sixth sense



ANALOG | HDCVI | IP | BIO METRIC | VIDEO DOOR PHONE



WE MAKE TECHNOLOGY THINK!

QUALITY	SECURITY
TECHNOLOGY	CREATIVITY

Applications

INDUSTRY	OFFICE	PUBLIC TRANSPORT	HOSPITAL	THEATRE	WALL	BANK	LIBRARY

www.hifocuscctv.com

KWALITY TELECOM

No:4,Periyar Plaza,
Second Floor, Wallers Road,
Mount Road, Chennai - 600002.
Tel Ph : 044 - 43227666/999

KWALITY INFOTECH

Door No: 2A, Gf-1, Gf-20,
Wallers Road, Mount Road,
Chennai - 600002.
Ph: 044 - 43864554/ 555

KET SECURED

1/20, Narasingapuram Street,
Anjuman Building,
Mount Road, Chennai-600 002.
PH : +91 8220048947
044 42184215

KWALITY SECURITY SYSTEMS

No: 54, Brinjathan Nagar,
1st Floor, Daravaganj,
New Delhi - 110 002.
Ph : 09810910886
011-49753333 / 47534805

भोर की बेला

इन्द्र भादानी

भोर की बेला
 उन्नीदी निद्रा से जगा मन
 प्रकृति का सीम्य व शान्त वातावरण
 रात्रि की निद्रा से उठे पेड़-पौधे
 जैसे खिलखिला उठे हों
 मुर्गे की बाँग
 चिड़िया की चहचहाहट
 गाय का रँभाना
 कबूतर का गुटरगू
 बच्चों का खिल-खिलाना
 मोर का पंख फैलाके नाचना
 हर जन के मन को मोह लेती है
 भोर की बेला
 जैसे धरती माँ, निद्रा से सो के उठी हो
 जो अपने चारों तरफ
 सुहावनी छटा बिखेर रही है
 प्रकृति के ये अद्भुत नजारे
 जैसे हर जन के दिल को
 सुखद-आनन्द के हिलीरे दे रहे हैं।

जीवन की कसौटियाँ

स्नेहा (कोयल) छाजेड़

अरे! ओ मानव जरा ठहर सँभल जा,
 क्यों तू दौड़ रहा है इन राहों में,
 सफलताओं की पहनाओं में।
 'मेहनत' जीवन को ऊपर ले जाती है,
 सफलता का नया मुकाम बनाती है।
 'सत्यता' को अपनाकर हम आत्मसुख को पाते हैं,
 चिर जीवन की तरह सफलता जीवन में लाते हैं।
 'नैतिकता' ही जीवन की पूँजी है,
 यही हर सुख की कुंजी है।
 'ईमान' तो खुद है भगवान यदि रखना है,
 भगवान का साथ तो फिर दे दो।
 'ईमानदारी' को अपने हाथों में हाथ,
 सफलता की कसौटी है जीवन में अनेक।
 करना है जीवन का हर इम्तहान पार,
 संस्कारों को रखना हमेशा साथ।



पुरुष और नारी दोनों समाज-रचना के दो बराबर के आधार हैं।
अगर दोनों सुशिक्षित एवं सुसंकारित होंगे, तभी समाज का समुचित विकास हो सकेगा।

आचार्य तुलसी

शुभकामनाओं सहित

अमरचन्द धरमचन्द लुंकड़

चेन्नई-राणावास

कलिकाल

किरण शर्मा

अर्जुन ने भगवान श्री कृष्ण से प्रश्न किया कि आपने कहा था कि अब द्वारका का समय कम रह गया है—आगे दूसरा समय आ रहा है, वह कौनसा काल है? इस प्रश्न पर श्री कृष्ण ने सभी पांडवों को बुलाया और कहा—तुम सभी अलग-अलग दिशाओं में देशाटन कर तीन दिन बाद मेरे पास आना और इन तीन दिनों में प्रकृति में तुम्हें जो अनोखी बातें दिखाई दे, जो विस्मयकारी लगे, पशु, पक्षियों व अन्य वस्तुओं में जो बातें आश्चर्ययुक्त लगे, उन्हें वापिस आने पर मुझे बताना। प्रकृति द्वारा जो वातावरण बनाया जा रहा है, उससे आने वाले कलिकाल के बारे में वार्तालाप करेंगे, तुम्हें शीघ्र ही समझ में आ जायेगा।

सभी पांडव भगवान श्री कृष्ण की आज्ञानुसार अलग-अलग दिशाओं में चलने से पूर्व यह तय किया कि जो-जो भी विस्मयकारी बातें देखे—उन्हें सर्वप्रथम भगवान श्री कृष्ण को ही बतायें, हम यदि वापिस आते समय किसी को मिल भी जायें तो भी परस्पर कोई वार्ता इस बाबत न की जाये। फिर सभी अलग-अलग दिशाओं की ओर चल दिये। एक ने बहुत दूर निकलने पर देखा कि एक विशाल पेड़ है, जिस पर अनेकानेक पक्षी बैठे हैं और पक्षियों के परों पर 'राम-राम' अंकित है किन्तु विस्मित करने वाली घटना यह लगी कि वे सभी पक्षी आपस में एक-दूसरे को मार कर उनका मांस भक्षण कर रहे हैं। दूसरे ने समतल भूमि पर पास-पास दो कुएँ देखे—अनोखी बात यह थी कि एक कुँआ पानी से लबालब भरा था और उसके बिल्कुल पास वाला ही दूसरा कुआँ बिल्कुल सूखा हुआ था—यह देखकर उस पांडव को अति विस्मय हुआ। तीसरे ने देखा कि एक गाय ने बछड़ी को जन्म दिया और उस समय वह गाय उस बछड़ी का दूध पीने लगी। अपनी नवजात बछड़ी का दूध गाय को पीते देखकर उन्हें आश्चर्य हुआ। चौथे ने देखा कि एक विचित्र प्रकार का हाथी है। हाथी के दो सूँड थी, यानी कि दो मुँह थे।

पाँचवें ने देखा कि एक पहाड़ पर से एक विशालकाय पत्थर लुढ़कते हुए नीचे की ओर आ रहा है—बड़े-बड़े विशाल वृक्षों को रौंदा हुआ जड़ों सहित उखाड़ता हुआ, रास्ते में आने वाली प्रत्येक वस्तु को नष्ट करता हुआ—भारी विध्वंस करता हुआ तेजी से लुढ़कता जा रहा है। उसे रोक पाना किसी के वश में हो, ऐसा नहीं

लगा रहा था। वह जमीन पर आकर ही रुका! यह विस्मयकारी घटना देखी। अब सभी पाण्डव आज तीसरा दिन पूरा होने को था, इसलिए अलग-अलग मार्गों से पहुँचकर यह विस्मयकारी घटनाएँ भगवान श्री कृष्ण को बताने के लिए आतुर हो रहे थे। समय पर ही सभी श्री कृष्ण के पास पहुँचे और जो आज तक देखा नहीं, सुना नहीं—वैसी विस्मयकारी घटनाएँ जो देखकर आये—वह वृत्तांत सुनाने लगे। वृत्तांत सुनकर भगवान श्री कृष्ण बोले—जिस पेड़ पर पक्षी के परों पर राम-राम अंकित था—मगर वे मांस का भक्षण कर रहे थे, आने वाले कलियुग में पंडित जो राम-राम करेंगे, बातें भी राम की ही करेंगे किन्तु तामसिक भोजन, अभक्ष्य मासादि का प्रयोग करेंगे, ऐसे ही पंडित पुरोहितों की कलिकाल में पूजा भी होगी और उन्हें जनता विद्वान पुरुष मानेगी।

भगवान ने आगे कहा कि—जहाँ समतल पृथ्वी पर पास-पास दो कुएँ एक पानी से भरा व एक खाली देखा गया, उसका संकेत है कि कलिकाल में एक भाई के पास धन-सम्पत्ति होगा—दूसरा भाई निर्धन होगा। प्रचुरता और निर्धनता के चिन्ह है यह। अब तीसरे ने जो देखा कि गाय अपनी ही नवजात बछड़ी का दूध पी रही है—यह संकेत है कि कलिकाल में माता-पिता अपनी ही बेटी के वेतन से अपना निर्वाह करेंगे। चौथे व्यक्ति ने, जो विस्मयकारी हाथी को देखा—जिसके दो मुँह देखे, उसका संकेत है कि कलिकाल में राजनेता दो मुँह के होंगे—उनकी कथनी और करनी में साम्यता नहीं होगी। कहेंगे कुछ और करेंगे कुछ। पाँचवें पाण्डव ने, जो विस्मयकारी घटना देखी—उसका संकेत है कि कलिकाल में मात्र एक 'राम' का नाम दुष्ट प्रकृति वालों को रोकने में समर्थ होगा। यह विशाल पत्थर सर्वनाश करता हुआ—लुढ़कता हुआ देखा, जिसे कोई भी नहीं रोक सकता, ऐसा कहना आपका सही है, पर जमीन पर आते राम नाम रूपी एक तिनका उसको रोक देगा। भगवान श्रीकृष्ण ने मुस्कराकर कहा—आने वाले कलिकाल में मात्र प्रभु राम का नाम ही सहारा है। इस ज्ञान की जो गाँठ बाँध लेगा, वह कभी नहीं भटक सकेगा। वही पार हो जायेगा।

नहीं कलि कर्म न भक्ति विवेक,

राम नाम अवलम्बन एक॥



नए साल में ऐसे करें अपनी मदद

बीते साल आपके खुद से किए कुछ वादे अधूरे रह गए हों। इस साल उन वादों को दोबारा करें और खुद में ये बदलाव लाएँ...

- नेचुरल टैलेंट को पहचानने के लिए पर्सनैलिटी टेस्ट करें। इससे स्ट्रेंथ का पता चलेगा।
- जब कोई तारीफ करे तो गौर से सुनें। खुद के बारे में पता होने से गलतियाँ कम करेंगे।
- लक्ष्य ऐसे बनाएँ जो थोड़े चुनौतीपूर्ण, लेकिन हासिल किए जा सकें।
- खुश रहेंगे—ये कहना आसान है, इसे करना सबसे मुश्किल। इस साल बहुत मस्ती करें।
- हो सके तो काम में रिस्क लें। इससे आप एडवेंचर्स बनेंगे, डर पर भी जीत मिलेगी।
- जिन चीजों को कंट्रोल कर सकते हैं, उन्हें याद रखें और बाकी सब भूल जाएँ।
- इस साल पुराने दोस्तों से जुड़ें। ऐसा करने की सिर्फ कोशिश न करें, लेकिन ऐसा करें ही।
- खुद किए गए फैसलों में किसी को आने न दें। दूसरे लोगों को इससे बिलकुल बाहर रखें।
- मेंटर बनाएँ। इससे जीवन जीने के तरीके को नई दिशा मिलती है।



॥ Jai Bikshu ॥

॥ Jai Mahashraman ॥

With Best Wishes From

Vimal Kataria (MD)
Madhu Kataria



VAISHNODEVI

LUSH GREENS

BUILDERS | DEVELOPERS | PROMOTERS

Regd. Office

No. 13, Muthachari Industrial Estate,
Mysore Road, Nayandahalli,
Bangalore - 560 039.

Branch

No. 550, 1st Floor, 4th Cross,
RPC Layout, Hampinagar,
Vijaynagar, Bangalore - 560 104.

Ph : 23146429, Mob : 9620799999, Email : vimalkataria9@gmail.com
info@vaishnodeviproperty.co.in

Rekha Jewellers

#1025, 8th Cross, K.R.H. Road,
Sai Complex, Ashoka Road, Mysore

Shalibhadra Jewellers

132B, 7th West Cross
Ashoka Road, Mysore

Manoharlal, Praveenkumar
Janak, Yogesh, Vimal, Vikas
Vishal, Vinay, Gourav Chirag
Manav, Yash Kataria (Bemali)

चेतना और कार्यशक्ति बढ़ती है मकर संक्रांति से रश्मि शर्मा

बुधवार 14 जनवरी, 2015 को सूर्य मकर राशि में प्रवेश करेगा एवं खरमास की समाप्ति भी हो जाएगी। सूर्य का मकर राशि में प्रवेश करना मकर संक्रांति कहलाता है। इस दिन से सूर्य उत्तरायण हो जाता है। सूर्य कर्क राशि में आने तक उत्तरायण रहेगा, यह देवताओं का एक दिन एवं कर्क से धनु तक देवताओं की रात होती है। मकर संक्रांति देवताओं का प्रभात काल है, इस दिन स्नान, जाप, दान, श्राद्ध, पूजनादि का विशेष महत्व है। इस दिन घृत, कंबल, पादुकाएँ आदि का दान दिया जाता है। यह दान संपूर्ण भोग एवं मोक्ष को देने वाला होता है।

मकर संक्रांति पर्व देश के विभिन्न हिस्सों में अलग नामों एवं तरीके से मनाया जाता है। उत्तर प्रदेश में इसको खिचड़ी कहते हैं एवं तिल के साथ खिचड़ी का दान दिया जाता है। महाराष्ट्र में विवाहित स्त्रियाँ पहली संक्रांति पर तेल, कपास, नमकादि वस्तुएँ सौभाग्यवती स्त्रियों को दान करती हैं। बंगाल में भी स्नान कर तिल का दान दिया जाता है एवं दक्षिण में इसे पोंगल के रूप में मनाया

जाता है। असम में इस दिन बीहू पर्व के रूप में मनाया जाता है। राजस्थान में सौभाग्यवती स्त्रियाँ अपनी सास को तिल, तिल के लड्डू, घेवर आदि का दान करती हैं। पंजाब एवं जम्मू-कश्मीर में इसे लोहड़ी के नाम से मनाया जाता है। इस त्यौहार को मकर संक्रांति से एक दिन पहले मनाया जाता है। कथा के अनुसार इन दिन गोकुल में भगवान श्रीकृष्ण ने खेल ही खेल में लोहिता नामक राक्षसी का अंत किया था, इसलिए भी लोहड़ी पर्व मनाया जाता है। गुजरात एवं महाराष्ट्र में कई खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन इस दिन होता है। इस दिन से शीत का प्रकोप कम होने लगता है एवं धीरे-धीरे दिन बड़े होने लगते हैं। तिल के दान का इस दिन बड़ा महत्व बताया गया है। ऐसा माना जाता है कि इस दिन से सूर्य की गति तिल-तिल बढ़ती है। सूर्य ऊर्जा का स्रोत है। इस दिन से सूर्य की रश्मियों का ज्यादा प्रभाव पृथ्वी को मिलने लगता है। इससे प्राणी जगत की चेतना एवं कार्य शक्ति में वृद्धि होती जाती है, इसलिए भी इस पर्व को मनाने का विशेष महत्व है।

दान से ज्यादा जरूरी है देने की 'भावना' अमृत साधना

आप किसी भी धार्मिक जगह जाएँ वहाँ पंडित-पुजारी दान करने के लिए कहते हैं। धर्म में दान का बहुत महत्व है, लेकिन अधिकांश लोग कुछ देते हैं तो इसलिए कि इससे हमें कुछ फल मिलेगा। कम से कम पुण्य तो अवश्य मिलेगा। सोशल वर्क करने वाले लोग पुरानी दवाइयाँ, कपड़े और व्यर्थ की चीजें गरीबों को देते हैं या नई चीजें भी लाएँ तो वे सस्ती और कामचलाऊ होती हैं। यह भला दान हुआ? इनकम टैक्स से बचने के लिए अगर आपने कुछ पैसा दान किया तो वह भी दान नहीं है। दरअसल दान एक कृत्य नहीं है, एक भाव है—'देने का भाव।' जब आप कुछ देकर आनंदित अनुभव करते हैं या लेने वाले के प्रति आभारी होते हैं तो समझें आपने दान दिया।

ओशो ने दान की परिभाषा की है—उदारता और देने का भाव। देना ही आनंद है। देना उतना जरूरी नहीं, जितना देने का भाव जरूरी है। फिर देना तो उसके पीछे चला आता है। और कई बार हम दे भी देते हैं, लेकिन देने का भाव बिलकुल नहीं होता। और तब दान झूठा होता है। हम देते हैं लेकिन हम देते भी तभी हैं, जब हम कुछ देने के

पीछे चाहते हैं। उसमें भी सौदा होता है। एक आदमी कुछ दान कर देता है, तो सोचता है कि लोग जानेंगे, प्रशंसा होगी या इसके बदले उसकी तरक्की होगी। वह लेने ही पर उसकी नजर है। तो फिर दान नहीं रहा। इसीलिए एक पुरानी कहावत है—गुप्त दान महापुण्य। उसका अर्थ यह है कि देने से किसी का अहंकार न बढ़े। दान जितना चुपचाप दिया जाए उतना अच्छा। उससे लेने वाले को बोझ नहीं लगता। जैसे सूरज निकलता है और फूल खिल जाते हैं। सूरज कोई फूलों को खिलाने के लिए नहीं निकलता है। और फूलों को खिलाने के लिए किसी दिन न निकले तो बहुत संदेह है कि फूल खिलें। और सूरज अगर एक-एक फूल को पकड़ कर खिलाने की कोशिश करे, तो बहुत मुश्किल में पड़ जाए, साँझ होते-होते थक जाए। सूरज के निकलने में ही फूल खिल जाते हैं। उसी तरह दान में ही मिल जाता है सब-कुल। आपका हृदय खिल जाता है, आप सबके प्रति प्रेम और मैत्री का अनुभव करते हैं। दानी व्यक्ति प्रसन्नचित्त होता है, उसके अंदर एक फैलाव होता है, वह प्रेम से भरपूर होता है। जब देने में ही आनंद मिलता है तब देना शुद्ध होता है।

देने का आनंद

भ्रमण एवं भाषणों से थके हुए स्वामी विवेकानन्द अपने निवास-स्थान पर लौटे। उन दिनों वे अमेरिका में एक महिला के वहाँ ठहरे हुए थे। वे अपने हाथों से भोजन बनाते थे। एक दिन वे भोजन की तैयारी कर रहे थे कि कुछ बच्चे पास आकर खड़े हो गए।

उनके पास सामान्यतया बच्चों का आना-जाना लगा ही रहता था। बच्चे भूखे थे। स्वामीजी ने अपनी सारी रोटियाँ एक-एक कर बच्चों में बाँट दीं। महिला वहीं बैठी सब देख रही थी। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। आखिर उससे रहा नहीं गया और उसने स्वामीजी से पूछ ही लिया—'आपने सारी रोटियाँ उन बच्चों को दे डालीं, अब आप क्या खाएँगे?'

स्वामीजी के अधरों पर मुस्कान दौड़ गई। उन्होंने प्रसन्न होकर कहा—'माँ, रोटी तो पेट की ज्वाला शांत करने वाली वस्तु है। इस पेट में न सही, उस पेट में ही सही।' देने का आनंद पाने के आनंद से बड़ा होता है।

an **Elite Choice**
deserves a Masterpiece



**2 & 3 BHK
PREMIUM
RESIDENTIAL
APARTMENTS**

at

**PATRAKAR COLONY
MANSAROVAR
JAIPUR**



Royal Castle

Ultra-Luxurious 2 & 3 BHK
Apartments at
VAISHALI NAGAR, JAIPUR



*ROYAL
Avenue*

2 & 3 BHK Semi Furnished
Premium Apartments at
**PATRAKAR COLONY,
MANSAROVAR, JAIPUR**



*ROYAL
Future*

2 & 3 BHK Semi Furnished
Residential Apartments at
**NARAYAN VIHAR, GOPAL PURA
BY PASS, AJMER ROAD, JAIPUR**



Office Address:

81-Gyan Vihar Colony, Nirman Nagar, Jaipur,
Ph.: 0141-4015550 |
Website: www.kotechagroup.org

For More Details Contact :

**9001919111,
9001919222**

विकृत जीवनशैली का दुष्प्रभाव

दीपक जैन

यदि शरीर में मोटापा हो तो व्यक्ति असहज महसूस करता है। बच्चे यदि मोटे हों तो उनके अन्य साथी भी उन्हें बात-बात पर चिढ़ाते हैं और व्यंग्य करते हैं। यदि किशोरावस्था में मोटापा हो तो यह उनके लिए और भी गंभीर समस्या बन जाती है; क्योंकि इस आयु में हर कोई आकर्षक दिखना चाहता है, किंतु जब मोटापे के कारण उनका उपहास करा जाता है तो धीरे-धीरे इनमें आत्महीनता की भावना जन्म लेने लगती है, जो उन्हें अंदर भावनात्मक रूप से कमजोर कर देती है। भारी शरीर होने के कारण मोटे व्यक्ति शारीरिक काम करने में व दौड़-भाग करने में कठिनाई अनुभव करते हैं। मोटापे के कारण असमय ही शरीर बीमारियों का घर बनता चला जाता है। यदि ऐसे व्यक्ति अपना विशेष ध्यान न रखें तो इनके शरीर में डायबिटीज, हृदय रोग, हाई ब्लडप्रेसर, स्ट्रोक, अस्थिमा, आर्थराइटिस जैसी कई गंभीर बीमारियाँ आसानी से पनपने लगती हैं। ऐसे में जरूरत यह है कि मोटापे से होने वाले खतरों की गंभीरता को जाना जाए और यथासंभव इनसे बचा जाए। सामान्यतः किसी व्यक्ति का वजन जितना होना चाहिए, उससे 20 प्रतिशत ज्यादा हो तो समझ लेना चाहिए कि उसे मोटापे ने अपनी गिरफ्त में ले लिया है। वहीं यदि शरीर का बॉडी मास इंडेक्स यानी बीएमआई 25 से ऊपर हो तो यह समझ लेना चाहिए कि व्यक्ति मोटा है। प्रायः यह समझा जाता है कि अधिक भोजन करना ही मोटापे का एक प्रमुख कारण है, किंतु यह पूर्ण सत्य नहीं है। इसके और भी कई कारण होते हैं, जिनके बारे में पूर्ण जानकारी न होने के कारण ही मोटे व्यक्तियों को देखकर लोग यह सोचते व कहते हैं कि ये अधिक खाते हैं, इनका अपने खाने पर नियंत्रण नहीं है। चिकित्सकों का कहना है कि मोटापे के कई कारण हो सकते हैं, जैसे— आनुवंशिकता, अत्यधिक दवाओं का प्रयोग, गलत खान-पान, शारीरिक व्यायाम व श्रम का अभाव, मानसिक तनाव आदि। अधिकतर विशेषज्ञों के अनुसार, वर्तमान समय में मोटापे का प्रमुख कारण है—विकृत जीवनशैली।

आज की विकृत जीवनशैली के कारण मोटापा एक बीमारी का रूप ले चुका है और इसके कारण बड़े ही नहीं, बल्कि छोटे बच्चे और किशोर भी इसकी गिरफ्त में आ रहे हैं। हमारे देश में बच्चों से लेकर किशोरावस्था तक लगभग 22 प्रतिशत मोटापे से ग्रस्त हैं और शोध-अध्ययनों से यह पता चला है कि देर तक एक जगह बैठकर काम करने वाली जीवनशैली और तेजी से बदलती खान-पान की आदतें इसके लिए बहुत ज्यादा जिम्मेदार हैं। समय की कमी और अत्यधिक काम का बोझ हमारी जीवनशैली को प्रभावित कर रहा है और हम स्वयं के लिए भी समय नहीं निकाल पाते। दिन-रात कम्प्यूटर के सामने बैठकर काम करते रहने से लोगों का चलना-फिरना कम हो गया है, जिससे शरीर का भार बढ़ने लगा है। इस भागमभाग वाली जिंदगी में व्यक्ति असंयमित आहार लेने के लिए विवश है, जिसमें हरी-ताजी सब्जियों व पोषक तत्वों का अभाव होता है। वैसे भी आज के समय में फास्ट व जंक फूड अधिक

प्रचलित हैं, जिन्हें लोग बड़े स्वाद से खाते हैं, लेकिन इस तरह का आहार शरीर की पाचनशक्ति को कमजोर करने के साथ-साथ मोटापे को बढ़ाता है। आज मोटापे को कम करने के लिए लोग ऑपरेशन का सहारा भी लेने लगे हैं; क्योंकि इसके द्वारा बहुत शीघ्र ही शरीर की चरबी हटाई जा सकती है, लेकिन अमेरिकन सोसाइटी फॉर मेटाबोलिक एंड बेरिएट्रिक सर्जरी द्वारा निर्धारित मापदंड के अनुसार, 13 से कम उम्र की लड़कियों और 15 से कम उम्र के लड़कों को मोटापा कम करने के लिए ऑपरेशन का रास्ता नहीं अपनाना चाहिए। इसके बावजूद हमारे देश में पिछले 10 वर्षों में 12 से 17 साल के कई बच्चों की सर्जरी की जा चुकी है। यहाँ पर यह ध्यान रखने की बात है कि ज्यादातर चिकित्सक, बच्चों को सर्जरी की सलाह नहीं देते, परंतु उनके एवं उनके माता-पिता के निरंतर आग्रह पर वे ऐसा करने के लिए विवश हो जाते हैं। उचित यही है कि खान-पान और व्यायाम के माध्यम से ही बच्चों की इस समस्या का हल निकल जाए, जो कि सबसे उत्तम उपाय है; क्योंकि ऑपरेशन किसी भी समस्या का स्थायी निदान नहीं हो सकता।

किसी भी व्यक्ति को मोटापे से बचने के लिए कभी भी एक ही बार में वजन कम करने का प्रयास नहीं करना चाहिए; क्योंकि ऐसी कोशिश शरीर से पानी की मात्रा को कम कर देती है और इसका हमारी शारीरिक व मानसिक शक्ति पर बुरा असर पड़ता है, लेकिन यदि धीरे-धीरे आहार पर नियंत्रण करके मोटापा कम करने का प्रयास किया जाए तो यह अधिक उत्तम होता है। शरीर को संतुलित व सुडौल बनाने के लिए प्रातःकाल भ्रमण, पर्याप्त शारीरिक श्रम, भोजन के उपरांत टहलना व खान-पान पर नियंत्रण के साथ-साथ पर्याप्त मात्रा में जल का सेवन करना चाहिए और यदि संभव हो सके तो सप्ताह में एक दिन का उपवास भी करना चाहिए। व्यक्ति को मोटापा कम करने के लिए अति से बचना चाहिए, अर्थात् न तो बहुत कम भोजन करना चाहिए और न ही वजन बढ़ने के बारे में अधिक चिंता करनी चाहिए; क्योंकि कम भोजन करने से शरीर में कमजोरी आती है और चिंता करने से मानसिक परेशानियाँ बढ़ सकती हैं। इसलिए उत्तम उपाय यही है कि अपनी जीवनशैली को संतुलित आहार-विहार के अनुरूप ढाला जाए। मोटापा कोई ऐसी बीमारी नहीं है, जो रातोंरात बढ़ जाए। यदि कोई आनुवंशिक कारण न हो तो शरीर का वजन बढ़ने में पर्याप्त समय लगता है, जिसे आहार संयम के द्वारा बड़ी आसानी से नियंत्रित किया जा सकता है। यदि हम अपनी जीवनशैली के प्रति सावधान रहें और मोटापे के लक्षणों को देखकर तुरंत उनके निदान के लिए प्रयास करें तो सरलता से हम इस समस्या से बच सकते हैं। आज हमें ऐसी संयमित जीवनशैली व संतुलित खान-पान की जरूरत है, जो हमें मोटापा न देकर स्वास्थ्य व स्फूर्ति प्रदान करे। नियमित व्यायाम, योगा का अभ्यास, व्रत-उपवास, फलों का सेवन, संतुलित आहार व पर्याप्त मात्रा में जल ग्रहण आदि कुछ ऐसे उपाय हैं, जिन्हें अपनाकर कोई भी व्यक्ति जीवन स्वस्थ रख सकता है।

॥ जय भिक्षु ॥

॥ अहंम ॥

॥ जय महाशमण ॥

श्रद्धांजलि



स्व. दिपेश रमेशचन्द्र गुगलिया

जन्म - 03-11-1987 स्वर्गवास - 10-02-2012

क्यों रुठ गए तुम हम सबसे, दिलों मे हो गया सूनापन ।
कर्मों का ऐसा चक्र चला, छोड़ चले तुम सब बन्धन ॥



AROMA®

P L A S T I C S

MFG. : QUALITY REPROCESSORS L.D., H.D., H.M., P.P.

16-17 Gopal Estate, Opp. Vallabhnagar, Odhav Road, Ahmedabad - 382 415 Guj. India

Tel. : + 91 79 22870270 Tele Fax : 079 - 22891528

Email: aromaplastic@yahoo.co.in

AROMA
ENTERPRISE

APEX
POLYMERS

Max
POLYMERS

AROMAX
INDUSTRIES

Bherulal
93777 57142

Ramesh
98252 57141

Bhikam
98251 69596

Viral
99986 08790

रबर क्या है और कैसे बनता है?

प्रस्तुति-वर्षीम खान

रबर एक ऐसा पदार्थ है जो हमारे जीवन के अनेक कार्यों में उपयोगी पाया जाता है। इससे टायर-ट्यूब से लेकर त्रिपाल, चाटर-प्रूफ कपड़े एवं बोतल की डाट तक हजारों प्रकार की वस्तुएँ बनाई जाती हैं। बिजली के प्रति कुचालक होने के कारण विद्युत उपकरणों में इसका विशेष उपयोग है। आज यह प्राकृतिक और कृत्रिम दोनों तरीकों से प्राप्त की जाती है। प्राकृतिक रबर वृक्षों से प्राप्त की जाती है और कृत्रिम रबर रासायनिक प्रक्रियाओं से बनाई जाती है। यूँ तो रबर के वृक्षों की किस्में चार सौ से भी अधिक पाई जाती हैं लेकिन इनमें हेविया ब्रेसिलीनसिस प्रमुख किस्म है। इस किस्म से अन्य किस्मों की तुलना में सबसे अधिक रबर मिलता है। रबर के लिए इन वृक्षों से एक तरल पदार्थ निकाला जाता है जो लैटेक्स कहलाता है। इसी के सूखने पर प्राकृतिक रबर बनती है। यह ठोस कार्बनिक पदार्थ होती है और खिंचने पर अपनी लंबाई के लगभग आठ गुने तक खींची जा सकती है। यह लचीली होती है, तभी तो इससे गुब्बारे, गेंदे, जूते तथा पाइप आदि आसानी से बन जाते हैं।

यह तो रही रबर की प्राप्ति एवं उपयोगिता की बातें, लेकिन इसका नाम रबर रखे जाने की घटना बड़ी दिलचस्प है। हुआ यूँ कि जब कोलंबस अपनी दूसरी समुद्री यात्रा पर गया था तो उसने हाइटी के निवासियों के बच्चों को उछलती-कूदती गेंद से खेलते देखा था। यह गेंद वृक्षों के लैटेक्स को जमाकर बनाई गई थी। कोलंबस भी इस लैटेक्स को अपने साथ यूरोप ले आया था। वहाँ अनेक वैज्ञानिकों ने इस पदार्थ की जाँच-पड़ताल की। इन्हीं में एक जोसफ गेस्टले नामक अंग्रेज वैज्ञानिक भी थे। उन्होंने अपने प्रयोग में पाया कि इस पदार्थ से रब करने या रगड़ने पर पैसिल का लिखा हुआ आसानी से मिट जाता है। अतः इस गुण के कारण उन्होंने इसका नाम रबर रख दिया। तभी से इसे रबर कहा जाता है।



खगोलीय पिंड गोल क्यों होते हैं?

धरती गोल है, सूर्य और चंद्रमा भी गोल हैं, यहाँ तक कि सभी ग्रह, उपग्रह और तारे भी गोल हैं। क्या आप जानते हैं कि ब्रह्मांड के ये सभी पिंड गोल क्यों होते हैं? विज्ञान के सिद्धांत के अनुसार ब्रह्मांड की हर वस्तु निम्नतम ऊर्जा स्थिति में रहना चाहती है। न्यूनतम ऊर्जा स्थिति में ही वस्तुओं में अधिकतम स्थिरता आती है। अतः अधिकतम स्थिरता के लिए वस्तु की ऊर्जा निम्नतम होनी चाहिए। सभी पिंडों की बनावट ही ऐसी है जिसकी सतह का क्षेत्रफल सबसे कम होता है, इसलिए गोलाकार वस्तुओं की सतह की ऊर्जा निम्नतम होती है।

इसी निम्नतम ऊर्जा या अधिकतम स्थिरता को प्राप्त करने के लिए वस्तुएँ गेंद जैसा आकार धारण करने की कोशिश करती हैं। यही कारण है कि सूरज, चाँद, तारे, धरती और दूसरे सभी खगोलीय पिंडों की बनावट गोल होती है। वर्षा में गिरने वाली पानी की बूँदें भी गोल होती हैं। इसका कारण भी यही है कि गोलाकार बूँद की सतह की ऊर्जा निम्न होती है और उसकी स्थिरता अधिकतम होती है। पानी की बूँदें किसी भी तरीके से पैदा की जाएँ वे तुरंत ही गोलाकार रूप में बदलने का प्रयास करती हैं।



सभी चाय स्वास्थ्यवर्धक हैं



फिर

मार्वल

ये लो चाय ही क्यों ?

क्योंकि:-

- स्वाद ऐसा कि एक प्याला पीने के बाद दोबारा पीने को मन चाहे।
- गहरा लाल रंग नहीं बल्कि सोने जैसा सुनहरा रंग जो दिल को भाए।
- गाढ़ापन ऐसा जो चाय की सम्पूर्णता का अहसास कराए।
- एकदम ताजा क्योंकि बागानों से टूटते ही पैक होकर पहुँचती है आपके पास।
- केवल आसाम और दार्जिलिंग के बागानों की चाय।
- हस्तस्पर्श रहित पैक, उत्तम जौंच परख, जो दे आपको बारह महीने एक जैसा स्वाद।
- भारत में ही नहीं बल्कि U.A.E. एवं इटली में भी पसन्द की जाने वाली चाय, ... और भी बहुत कुछ जो इसे बनाए दूसरों से बेहतर।

“पीते ही रह जाओगे”



Marvel

MARVEL TEA ESTATE (INDIA) LTD.

MARVEL ROAD, UKLANA-125113, INDIA Ph. 91-1693-235786, Email : marvel@marvelgroup.in

Khayati

Akhil Bhartiya Terapanth Yuvak Parishad

Yuva lok, Post Box No.16,Ladnun-341306
Ph.01581-226114,e-mail ID-abtyp.ladnun@yahoo.in

Address Correction in Terapanth Times & Yuva Dristi



TT/YD Reg. No.....

NameNative Place.....

Residence Address	Office/Shop address
PIN	PIN
Ph.	Ph.
Mobule:	Mobile:
Mobile:	Mobile:
e-mail ID:	e-Mail ID:

Signature

**Note:- Fill the form in English Block Letters only.
PIN Code No. & Mobile No. Must Required.**

**Any Query Please Cont.:01581-226114,09460306844
abtyp.ladnun@yahoo.in
Correction can send by post mail,e-mail & SMS**



अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

प्रकाशन : युवादृष्टि ()
 अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स ()
 (कृपया उपयुक्त कॉलम में (✓) करें)

नाम :

पता :

फोन नं. : मोबाइल नं. :

ई-मेल :

सदस्यता शुल्क : आजीवन (पन्द्रह वर्षीय) 3500 रुपये प्रत्येक () त्रैवार्षिक 900 रुपये प्रत्येक ()

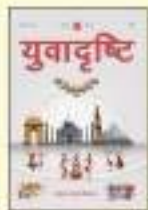
शुल्क भुगतान विवरण : नगद () चेक/डीडी ()
 चेक/ड्राफ्ट संख्या दिनांक :

बैंक शाखा

(जमा राशि की रसीद फार्म के साथ संलग्न करें)

दिनांक (हस्ताक्षर)

1. सदस्यता फार्म पूर्ण विवरण सहित निम्न पते पर भेजें :
 अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्, 'युवालोक', पोस्ट लाडनू- 341306, जिला-नागौर (राजस्थान)
 दूरभाष : 01581-226114, ई-मेल : abtyp.ladnun@yahoo.in
2. बैंक विवरण (शुल्क जमा करने हेतु) : ओरिएण्टल बैंक ऑफ कॉमर्स, शाखा - लाडनू
 चालू खाता संख्या : 10272010002800



औद्योगिक प्रशिक्षण

चंदन कुमार

इंडस्ट्रियल ट्रेनिंग का उतना ही महत्व है, जितना क्लास रूम में पढ़ने का। किसी भी ध्योरी की उपयोगिता को समझने के लिए प्रैक्टिकल करना होता है और संबंधित एप्लिकेशन कैसे काम करता है इसे जानने के लिए इंडस्ट्रियल ट्रेनिंग की जरूरत होती है। यह जानने के लिए कि कौनसी मशीनरी कैसे काम करती है, उस पर मुझे कैसे काम करना होगा, कौन-कौन से नए उपकरणों का विकास हुआ है, मार्केट में ये उपकरण कहाँ-कहाँ उपयोगी साबित हो रहे हैं, किस सिद्धांत के तहत यह उपकरण काम करता है आदि के लिए हमें कंस्ट्रक्शन और आर एंड डी साइट पर जाना होता है। इंडस्ट्रियल ट्रेनिंग के बाद ध्योरी काफी अच्छी तरह से समझ में आती है। ट्रेनिंग के लिए जाते समय यह बात जरूर ध्यान में रखनी चाहिए कि आपकी रुचि किस विषय में है। उदाहरण के तौर पर आप आर एंड डी में जाना चाहते हैं या साइट पर। अगर आप अपने क्षेत्र से बाहर जाकर ट्रेनिंग करना चाहते हैं तो वहाँ भी जा सकते हैं। ट्रेनिंग के लिए बीटेक के तीसरे साल के अंत में जाना होता है। अगर विद्यार्थी चाहे तो दूसरे साल के अंत में भी ट्रेनिंग कर सकता है, लेकिन यह इस बात पर निर्भर है कि आपने कितनी गहराई से विषय को आत्मसात किया है। ट्रेनिंग इंटरशिप का हिस्सा है, इसलिए विद्यार्थियों को कंपनी में खुद ही आवेदन करना होता है। ट्रेनिंग के लिए बुलाने से पहले कंपनी यह देखती है कि पढ़ाई के अलावा आप अन्य गतिविधियों में कैसे हैं। उसी आधार पर वह विद्यार्थियों का चुनाव करती है। इसके लिए कंपनी व्यक्तिगत तौर पर विद्यार्थियों को बुलाती है या कॉलेज द्वारा विद्यार्थियों को वहाँ भेजा जाता है। इसके लिए कंपनी कॉलेज आती है और विद्यार्थियों का चुनाव करती है। कंपनी अपना काम करवाने के लिए विद्यार्थियों को बुलाती है। काम के बदले वह विद्यार्थियों को पैसे भी देती है, जिसे पेड इंटरशिप कहते हैं। कंपनी पैसे तभी देती है, जब उसे लगता है कि विद्यार्थी को विषय की अच्छी जानकारी है और वह उसके काम का है। दूसरी तरह की ट्रेनिंग वह होती है, जब विद्यार्थी पैसे देकर कंपनी या किसी संस्थान में इंटरशिप करता है। एक ट्रेनिंग वह भी होती है जब प्रोफेसर के सांनिध्य में रिसर्च पेपर तैयार करना होता है। इसका फायदा यह होता है कि विद्यार्थियों को विषय से संबंधित ठोस ज्ञान हो जाता है। इसके अलावा विद्यार्थी चाहें तो इसरो, डीआरडीओ, नासा से भी ट्रेनिंग कर सकता है। जहाँ तक पैसे मिलने का सवाल है, तो वह इस बात पर निर्भर करता है कि आप किस प्रोग्राम के तहत ट्रेनिंग कर रहे हैं। कॉलेज द्वारा इंडस्ट्रियल ट्रेनिंग के लिए विद्यार्थियों को सिर्फ दो महीने दिए जाते हैं, लेकिन अगर आप विदेश में किसी कंपनी के साथ ट्रेनिंग कर रहे हैं, तो वहाँ एक से दो साल भी लग सकते हैं। इस दौरान यदि प्रदर्शन अच्छा रहा तो कंपनी आपको नौकरी का प्रस्ताव दे सकती है। बीटेक के बाद एमटेक के दौरान भी ट्रेनिंग की जा सकती है।

कविता बनायें

प्रतियोगिता नं. 32

नीचे दिए गए चित्र को देखकर चार पंक्तियों में कविता बनाकर 30 जनवरी, 2015 तक सम्पादकीय कार्यालय में प्रेषित करें। प्रतियोगिता में 15 वर्ष तक की उम्र के बालक-बालिकाएँ भाग ले सकते हैं। कविता मौलिक तथा स्वरचित होनी चाहिए। चयनित दो रचनाओं को युवादृष्टि में प्रकाशित किया जायेगा।



प्रतियोगिता जनवरी, 2015

नवम्बर 2014 पर आधारित

1. आचार्य तुलसी के अनुसार सामुदायिक चेतना के विकास के लिए आवश्यक कोई चार बिन्दु लिखें।
2. बच्चों को किस प्रकार के साहित्य की आवश्यकता है?
3. संगठन की सबसे बड़ी शक्ति क्या है?
4. बच्चों के सम्मुख माता-पिता को कैसा व्यवहार करना चाहिए जिससे कि वह असमंजस में न पड़ें।
5. मानव मन की आस्था का मुख्य स्रोत क्या है?
6. आपसी कलह निवारण में किसका संयम आवश्यक है?
7. व्यक्तित्व निर्माण में भाव विशुद्धि को कैसे आवश्यक माना गया है?
8. संयम कितने प्रकार का बताया गया है? नाम लिखें।
9. हिन्दू समाज में विवाह को क्या माना गया है और क्यों?
10. युवादृष्टि के नवम्बर 2014 के अंक में आपको किस लेख ने प्रभावित किया, उस पर संक्षेप में अपने विचार लिखें।

नोट : 1. लेखनकाल से निवेदन है कि रचना पृष्ठ पर एक ओर दाहिने छोड़कर लिखें।
2. पृष्ठ के एक ओर ही लिखें। 3. उम्र 30 जनवरी, 2015 तक निम्न पते पर प्रेषित करें।

सुधीर चौरड़िया

2040, विजयवर्गीय भवन, पीतलियों का चौक
जौहरी बाजार, जयपुर-302003 मो.-098293-20571



युवादृष्टि

बदले सबकी सृष्टि...



दुनिया की भागमभाग में
सभी दौड़े चले जा रहे हैं,

कोई, मंजिल के लिए
तो कोई, भीड़ के साथ,

भौतिकता की इस दौड़ में
हर जगह होता है स्वार्थ

संतोष अगर पाना हो,
तो अध्यात्म की शरण में आएँ

अपने जीवन में
“परिवर्तन का पथ” पाएँ।

आगामी अंक

परिवर्तन का पथ

आमंत्रण-रचनाएँ

‘युवादृष्टि’ पत्रिका के आगामी विशेषांक के लिए सर्व चारित्रात्माओं एवं प्रबुद्ध लेखक/लेखिकाओं की रचनाओं का हम हार्दिक स्वागत करते हैं। रचनाकार अपनी गद्य/पद्य रचना लाइन वाले फुलस्केप पेज पर एक तरफ उचित मार्जिन रखकर ही भेजें। कोरे पन्ने पर अस्त-व्यस्त लिखी रचनाओं पर ध्यान नहीं दिया जाएगा। सुंदर अक्षरों में लिखी या टाइप की गई रचनाओं को प्राथमिकता दी जाएगी। आपकी रचनाएँ मौलिक होनी चाहिए। अप्रकाशित रचनाएँ वापस नहीं भेजी जाएँगी, रचनाकार स्वयं के पास एक प्रति अवश्य रखें एवं कार्यालय में भेजी गई रचनाओं के प्रकाशन विषय में पूछताछ ना करें।

आपके लेख एवं प्रोत्साहन प्रतिक्रियाएँ हमें लगातार प्राप्त हो रही हैं। पाठकों के ‘युवादृष्टि’ के प्रति अपार स्नेह का हम अत्यंत सम्मान करते हैं।

‘‘विशेष-आकर्षण’’

- स्वास्थ्य विशेष
- अब तो जारों
- बच्चों की दुनिया
- कथा-बोध
- हमारी संस्कृति, हमारा इतिहास
- प्रबंधन-सूत्र

आगामी अंक के सम्भावित विषय

विषय	रचना भेजने की अंतिम तिथि
✍ मन का मंथन	30 जनवरी, 2015
✍ नेतृत्व के गुण	28 फरवरी, 2015

रचनाएँ भेजने का पता

SUDHIR CHORADIA

2040, Vijayvargia Complex, Ground Floor
Patalio Ka Chowk, Johari Bazar, Jaipur-302003
Mobile : 098293-20571
e-mail : abtypyd@gmail.com

नोट : किसी भी प्रकार की पूछताछ व शिकायत के लिए :—

फोन करें : 011-23210593 या E-mail : suggestion.abtyp@gmail.com पर ई-मेल करें।

पता : अखिल भारतीय तेरापंथ युवाक परिषद्, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002

हर व्यक्ति शक्ति का विकास करे और नैतिकता, अहिंसा,
संयम व साधना को विकसित करने का प्रयास करे, यह काम्य है।

आचार्य महाश्रमण

B. C. JAIN (BHALAWAT), FCA, ACS, ICWA
Director



SUNRISE

HOUSING CONSTRUCTIONS LTD.

Sunbeam Chambers, Ground Floor, New Marine Lines,
Opp. Liberty Cinema, Mumbai 400 020 India
Tel. No.: 022-22096000/ 1/ 4 Fax: 022-22095000
Mobile: 09821117813 Email: cabcjain@gmail.com



Stone Studio By Galaxy

INTRODUCING THE LARGEST COLLECTION OF NATURAL STONES

Welcome to the Galaxy of Indian Natural Stones. Our stones are used in 40 countries, now introducing in India Stone Studio with the display of their applications.

Natural stones can be used for interior, exterior and landscaping. Galaxy International produces wide variety of natural stone such as slate, sandstone, quartzite and limestone in wide range of finishes like hand cut paving, machine cut tiles, mosaic border, tumble, walling stone, sandblasted surface, polished, honed surface, artifacts, six side seen pavings, wall stone, sheet blasted pavings, vintage finish etc.

Stone Studio By Galaxy

SP 5 Mansarovar Industrial Area, Jaipur 302020

Tel : +91 141 4027819

Mobile: +91 9829052315

Email: Postapdaga@gmail.com / stonetrack@sanchamel.in

Website: www.stonestudio.in / www.galaxyimpex.co.in

Light Studio By Galaxy

We bring to you, one of a kind Light showroom with more than 800 designer lights to choose from in your own city.

**BIGGEST LIGHT SHOWROOM
IN RAJASTHAN**



Light Studio By Galaxy

SP 5 Mansarovar Industrial Area, Jaipur 302020

Tel : +91 141 4027819

Mobile: +91 9829052315 / +91 9828252000

Email: lightstudio.bygalaxy@gmail.com

stonetrack@sanchamel.in

Daulat, Kailash, Pratap, Abhineet Daga (Jaipur - Sri Dungargarh)